كتاب سيمتعلق ضروري معلومات

نام كتاب : رہبرعلم حدیث

ازافادات : شخ الحديث حضرت مولا ناالطاف حسين صاحب

چشتی، قادری، نقشبندی سهرور دی (رحمة الله علیه)

سفحات : ۱۸۴

ناشر : اداره فیضان الهی، عالی پور، نوساری، گجرات، انڈیا

ن اشاعت : صفر المظفر ٢٢٧ إه مارج ٢٠٠١ ء

ملنے کا پبته اداره فیضان الہی ، عالی پور ،نوساری ، گجرات ،انڈیا

ر هبر علم حدیث

مرتبه شخ الحدیث حضرت مولا ناالطاف حسین صاحب چشتی ، قادری ،نقشبندی سهرور دی (رحمة الله علیه)

مع اضافات وترتیب جدید مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسی نقشبندی

ناشر: اداره فيضان الهي، عالى پور، نوساري، تجرات، انڈيا

| X | ×××; | ×××××××××××××× | (xxx | (xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx |
|-----------|---------------|--|------|---|
| > | ۵۸ | •متواتر ف | 14 | ●قريظ |
| { | ۵۸ | •تواتر فعلی • توانر فعلی | ۲۷ | •طلب علم کے آ داب |
| \{ \} | ۵٩ | •تواتر قولی نور | ٣٢ | •حدیث کی تعریف |
| <i>\\</i> | ۵٩ | ● نو اتر لفظی | ٣٣ | •قول صحابي كوحديث كهه سكتة مين؟ |
| > | 4+ | ●تواتر معنوی | م س | ●موضوع |
| } | 4+ | ●خبرواحد | ٣٣ | •غرض |
| > | 4+ | •هشهور | ۳۴ | ●غايت |
| > | 71 | <i>'</i> .'‱● | ۳۵ | ●وجبتشمييه |
| { | 75 | ●غریب | ٣٧ | ●ثرافت علم حدیث |
| > | 75 | ●مثالعت | ٣٨ | •فضيلت علم حديث |
| > | 41 | •متالِع | ٠, ٠ | ●ضرورت حدیث |
| > | 41 | ●ثابر | ۱۳ | ●حدیث تفسیر قرآن ہے |
| { | 41 | ■اقسام حدیث باعتبار رواة | ٣٣ | ●هاظت دين |
| } | 49 | •باغتبار حذف راوی | 40 | ●هاظت حدیث کےاسباب |
| > | 49 | • | ۷ ۷ | •کتاب <i>ت حدیث</i> |
| > | ۷٠ | • مىند نوق | ۷ ۷ | •ضبط حدیث کی صورتیں ہیں |
| > | 4 | • | ٩٣ | •جميت خبر متواتر |
| { | 41 | • | ۵٠ | •جيت خبر مشهور |
| > | 4 | • | ۵٠ | •جيت خبرعزيز |
| > | ۷٣ | •مرسل | ۵۱ | •جيت خبر واحد |
| > | 2 m | •ه لس | ۵۲ | ●اشكال |
| > | \Rightarrow | •منتهائے سند کے اعتبار سے ریق | ۵۳ | ●جواب |
| { | ۷۴ | حديث كي نقسيم | ۵۵ | ■علوم نبوی کی قشمیں |
| \{ \} | صفحه | عناوين | صفحه | عناوين |
| } | ΛI | ●تعدا د صحابه | ۷۴ | ●حديث مرفوع |
| \{\} | ΛI | •تا بعين •تا | ۷۵ | ●حدیث موقو ف |
| < | | I | | |

| اعتذار | , , |
|------------------|-----|
| ن صنف فقد استهدف | ۵ |

احباب کا کرم ہے اگر نکتہ چیں نہ ہوں ورنہ ہم آپ معترف اپنی خطاکے ہیں

احقر الطاف حسين غفرله

فهرست مضامين

| XXXX | **** | (XXXX) | (xxxxxxxxxxxxxxxx |
|--|------------------------------|---------------|---|
| 11+ | •قوت حافظه | 97 | •تعدا دروایات |
| \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | •تین ہم نام بزرگ | 97 | ، • •خصوصیات بخاری |
| } r | • تر مذی شریف | \Rightarrow | • بخاری میں امام اعظام کی |
| ١١٢ | ●وجه تاليف | 91 | د روایت کیولنہیں؟ |
| ١١٣ | •فضائل | 1 • • | • •اما مسلم رحمة الله عليه |
| االر | •تعدا دروایات | 1 • • | د ●ولا دت |
| ١١٣ | •خصوصیات تر مذی | 1•• | • •مناقب |
| ١١٦ | •امام ابوداود رحمة الله عليه | 1+1 | •امام بخاریؓ کی خدمت میں |
| ۲۱۱ | •مناقب | 1+1 | ؟ • •وفات |
| \\ \ \lambda | •ابودا ؤ دشریف | 1+1" | ه ﴿ ●وجبتاليف |
| \\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ | •وجبةاليف | 1+1" | زماخهٔ تالیف |
| | •زمانه تاليف | 1+1~ | فضائل |
|) 119 | •فضائل | 1+0 | •تعدا دروایات |
|) Ir• | •تعدا دروایات | 1+0 | • سينځرمسلم |
| Ir • | •نخ | ۲+۱ | 🌏 🌨خصوصیات مسلم |
| صفحہ خ | عناوين | صفحه | عناوين |
|) Imr | •تعدا دروایات | 114 | • |
| > Imr | •نخ | 171 | ; ? • •وفا ت : |
| \ \ \ \ \ | | | , ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |

ر ہبرعلم حدیث

| ×^ | $/\!$ | ,~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | $\sim\sim$ | \vee |
|--|---|---|--------------|--|
| XX | ۸۲ | • مخضر مین | ۷۵ | × × •مقطوع |
| \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | ۸۳ | •طبقات كتب حديث | ۲۷ | × •حدیث قدسی |
| \ \ \ \ \ | ۸۳ | •طبقهٔ اولی | ۷٦ | ﴾ * •فرق |
| XXX | ۸۳ | ●طبقهٔ ثانیه | 44 | × × • • • • • • • • • • • • • • • • • • |
| ^ X X X | ۸۴ | ●طبقهٔ ثالثه | 44 | • \$ ** * |
| XXX | ۸۵ | •طبقهُ رالعِه | 44 | × × • × |
| × | ۸۵ | •طبقهٔ خامسه | 44 | × × × |
| XXX | ۸۷ | ●اصحاب صحاح سته | ۷۸ | × × × × • • • • ماملين حديث كا قسام × |
| XXX | ۸۷ | ●انځمهُ اربعه | ۷۸ | × × × × |
| ^X | ۸۸ | •امام بخاری رحمة الله علیه | ۷۸ | ^ • •محدث × |
| XXX | ۸۸ | ●ولا دت | ∠9 | × × •حافظ × |
| XXX | 19 | ●قوت حافظه | ∠9 | × × •مجت × |
| XXX | 91 | ● وفا ت | ∠9 | × × × |
| XXX | 91 | ●بخاری شریف | ۸٠ | × × × •تعريف صحاني |
| ^X | 92 | ●وجه تاليف | ۸٠ | ♦ ١٤٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠٠ |
| XXX | صفحه | عناوين | صفحه | × × × |
| XXXX | 1+9 | •امام تر مذی رحمة الله علیه | 91 | حسافظ حسام کی کی تعریف صحابی ستابعی کی تعریف عناوین مسائل مسائل |
| XXX | 1+9 | •مناقب | 90 | ﴾ × × |
| × ⁄ | \\\\ | · | \ \ '\ | !~~~~~~~ |

| حديث | رہیرعلم |
|------|----------|
| | / /• • • |

| X | XXXX | ·××××××××××××××××××××××××××××××××××××× | XXXX | (xxxxxxxxxxxxxxxxxxx |
|----------|----------|--|-------|----------------------------|
| <u>}</u> | 164 | •وجة اليف | ۳۳ | •مؤطاامام محمد |
| } | 107 | •زمانهٔ تالیف | ۳۲ | ﴾ •اندازترتیب |
| } | 102 | •طريقة تاليف | الدلد | • •تعدا دروایات |
| } | 102 | ●تعدا دروایات | الدلد | •خصوصیات |
| } | 102 | •فخد | ١٣٦ | 🌓امام طحاوی رحمة الله علیه |
| } | 101 | ●خلاصهٔ مضامین | ١٣٦ | . •مناقب |
| { | 101 | ●دونوں میں فرق | ۱۴۷ | 🍾 🍨 تبدیلی مسلک کی وجه |
| } | 145 | •ثرح مديث افتراق امت | 114 | ° { •طحاوی شریف |
| } | 14 | •فرقهٔ ناجیه کی تعیین | 114 | ﴿ ●وجه تاليف |
| } | ۱۷۳ | •فائدهٔ جلیله | 10+ | 🌓خلاصة مضامين |
| } | 148 | •فرقهٔ ^خ وارج | 10+ | ﴿ ●خصوصیات |
| } | 120 | ●فرقهٔ شیعهاورروافض | 101 | •صاحب مصابیح رحمهالله |
| | 124 | •فرقه گدریداور جبریه | 161 | ﴿ ●مناقب |
| } | 122 | •فرقهٔ معتزله | 121 | ﴿ ●وجهةاليف |
| } | 122 | ●فرقه ٔ مرجیه | 100 | •طريقة تاليف |
| } | 141 | ●فائده | 124 | •تعدا دروایات |
| } | | | | , , |
| > | | | | > |
| > | | | و | <u> </u> |
| > | | نتنت | معٽ |) |
| > | | | |) > |
| <> | \ | \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | kxxx | kaaaaaaaaaaaaa |

ر ہبرعلم حدیث

| $\sim\sim$ | ^^^^^ | $\sim\sim$ | ^ |
|-------------|--|------------|--|
| | •خلاصة مضامين | ITT | × × •خصوصیات ابوداؤد × |
| 44 | •خصوصیات | ۱۲۴ | × × •امام نسائی رحمة الله علیه |
| ١٣٢ | •امام ما لك رحمة الله عليبه | ۱۲۴ | × × × •منا قب |
| ۱۳۴ | •مناقب | 110 | × •علمی منقبت • × |
| ıra | ●وفات | 110 | × × •نسائی شریف × |
| 124 | ●مؤطاما لک | 110 | × × •وجه تاليف × |
| 124 | ●وجة تاليف | 174 | × × •فضائل × |
| 124 | •ز ما نه تالیف | 174 | × × × × •تعدا دروایات |
| 12 | •وجهشميه | 114 | • × × • |
| 111/2 | ●فضائل | 114 | × × × |
| 12 | ●تعدا دروایات | ITA | × × •خصوصیات × |
| IMA | • . | 114 | × × •امام ابن ماج <i>ه رحم</i> ة الله عليه × |
| IMA | •خصوصیات مؤطاما لک | 114 | × × × |
| ۱۴۰ | •امام محمد رحمة الله عليه | 114 | × ×× ●مناقب |
| ۱۳۰ | •مناقب | 1111 | × × • • • • • • • • بين ماجه شريف × |
| ומו | •ا مام اعظم کی بارگاه م ی ں | 1111 | × × × |
| صفحہ | عناوين | صفحه | × × × |
| 100 | •صاحب مشكوة رحمة الله عليه | ۱۳۲ | × × × × × |
| 100 | ●مناقب | ۱۳۲ | ^ × ×× ●وفات کے بعد |
| , , , | VVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVVV | / | |

ر هبرعلم حدیث

نہیں کرسکتا، کیکن ہمارے کچھالیسے احباب ہیں جواپی عقل ودانائی اور حکمت و فلسفہ پر نازاں ہیں، انہوں نے حضرات صحابہ کرام سے لے کرتمام سلف صالحین پر تنقید و تبصرہ کیا ہے، جس سے دین متین کی تمام بنیادیں درہم برہم ہورہی ہیں، جس کو بزرگوں نے شہدنما سم قاتل سے تعبیر فرمایا ہے، اس مسکلہ میں ان کی سب سے بڑی دلیل ہے ہے کہ حضرات صحابہ کرام و دیگر سلف میں ان کی سب سے بڑی دلیل ہے ہے کہ حضرات صحابہ کرام و دیگر سلف صالحین بھی انسان ہیں، ہماری طرح ان میں بھی انسانی کمزوریاں موجود تھیں، لہذا ان کے اقوال وافعال، حرکات و سکنات اور گفتار و کردار، ہم کیسے نقید و تبصرہ کے بغیر قبول کر سکتے ہیں۔

الحمدلله وحده والصلوة والسلام على من لانبى بعده ،

اما بعد! تمام المل حق عموماً اورالمل علم خصوصاً اس بات كمعترف بيس كه دين حق ودين اسلام كى اساس و بنياد، قرآن حكيم واحاديث نبوى صلى الله عليه وسلم هي، اورتمام ذخيرة حديث قرآن كريم كى تفسير وتشرح هي، اورعلم حديث كي بغير، قرآن كي معانى ومقاصدكى افهام وتفهيم ناممكن ومحال، بلكه حديث كي بغير، قرآن كي معانى ومقاصدكى افهام وتفهيم ناممكن ومحال، بلكه شختى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِياطِ "كمترادف هي، حق تعالى ف قرآن حكيم كى حفاظت كا وعده فرمايا هي: ﴿ إِنَّا نَحُنُ نَزَّ لُنَا اللّهِ كُو وَ إِنَّا لَهُ فَانَ مَنْ اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهُ عَلَى اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهُ عَلَى اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

ظاہرہے کہ تفاظتِ قران دوقسموں پر شتمل ہے، ایک تفاظت الفاظ آنیہ،
اور دوسری حفاظت معانی قرآنیہ، الفاظ کی حفاظت کیلئے حق تعالیٰ نے حضرات مفسرین عظام کو حفاظ کرام کا انتخاب فرمایا اور معانی کی حفاظت کیلئے حضرات مفسرین عظام کو منتخب فرمایا۔ پھر چونکہ مطالب قرآنیہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے اقوال وافعال اور تقاریر پرموقوف ہیں اس لئے حضرات محدثین کرام کو حفظ احادیث کی دولت سے مشرف فرمایا اور احادیث کے معانی ومطالب، حقائق و دقائق،
اور اسرار ورموزکی حفاظت کیلئے، حضرات فقہاء کو اپنی تعمتِ انتخاب سے بہرہ ور فرمایا۔ غرض انہیں اقسام اربعہ پردین کا سارا محور گھومتا ہے، تمام امت مسلمہ پر انہیں حضرات کے بڑے احسانات ہیں، کوئی باشعور انسان اس سے انکار پر انہیں حضرات کے بڑے احسانات ہیں، کوئی باشعور انسان اس سے انکار

حق تعالی نے قرآن کریم میں اور حضورا کرم صلی الله علیہ وسلم نے اپنی احادیث میں ان کی تعریف فرمائی ہے لہذا ان پر تنقید و تبصرہ کرنا گویا الله اور اس کے رسول کا تخطیہ کرنا ہے (نعوذ باللہ) کہ ق تعالی اور حضورا کرم صلی الله علیہ وسلم کو ان کے نقائص وعیوب کاعلم نہ تھا، حضرات صحابہ کرام گی تنقید کرنا نہیں بلکہ الله اور سول سے مقابلہ کرنا ہے۔

أعاذنا الله تعالى و جميع المسلمين عن هذا ،

باقی حضرات ائمہ مجہدین ومحدثین ومفسرین اور صلحاء واتقیاء کی شان بھی بڑی عجیب وغریب ہے جسے صرف سننے سے ہی عظمت کے مارے بدن کے رونگئے کھڑے ہوجاتے ہیں۔جس کا قدرے نمونہ آپ آئندہ صفحات میں ملاحظہ فرمائیں گے۔

یادر کھئے اگر ہم نے حضرات سلف صالحین پر تقید و تبصرہ کیا تو جو دین سلسلہ وارچودہ سوسال سے ہم تک پہنچا ہے اس کی بنیادیں ہل جا ئیں گی ،اس سے بجائے خدمت دین کے ، دینِ متین کا بڑانا قابل تلافی نقصان ہوگا۔اس کاسارابو جھنا قدین کے سرپر بڑے گا۔ع

حمله برخودمی کنی اے سادہ مرد

خلاصہ بیر کہ حضرات سلف صالحین بھی انسان تھے اور ہم بھی انسان ہیں الکین اتنافرق ہے کہ وہ عالم تھے اور ہم جاہل ہیں اور وہ علم وزید وتقویٰ کے لحاظ

سے بہ منزلہ امراء واغنیاء کے ہیں اور ہم بہ منزلہ نقراء و مساکین کے ہیں،
جس طرح فقراء و مساکین کوامراء واغنیاء کے در واز وں پر جائے بغیران کے
چواہوں پر ہنڈیاں نہیں چڑھتیں ،اسی طرح جب تک ہم حضرات صحابہ و دیگر
سلف صالحین کے علمی درواز وں پر دستک نہیں دیتے اور پچھ بھیک مانگ کر
نہیں لاتے اس وقت تک ہماری تعلیم و تعلم اور تحریر و تصنیف وغیرہ کی گاڑیاں
نہیں چاتیں۔اللہ تعالیٰ ہمیں دین کا صحیح فہم عطافر مائے۔ آمین

پہلے بیان کیا جاچکا ہے کہ تغییر قرآن کریم ، علم حدیث پر موقوف ہے آئی

لئے احقر کو باوجودا بنی قلت بضاعت کے خیال ہوا کہ ایک ایسار سالہ کھا جائے

جس میں علم حدیث کے ضروری اصول وقواعد ، کتب متداولہ کے مؤلفین کے
مخضراحوال اور فوائد شتی موجود ہوں ، جو شائقین علم حدیث کیلئے مفید ثابت ہوں۔
اصحاب علم اور ارباب نظر وفکر سے امید ہے کہ اس حقیر سرایا تقصیر کے
افعل پر دہ پوشی فرمائیں گے اور جو غلطی یا نقص معلوم ہو اس سے مطلع
فرمائیں گے تا کہ دوسری اشاعت میں اصلاح کی جاسکے ۔ دعا ہے کہ ق تعالیٰ
اس کو قبول فرما کراحقر کیلئے ذریعہ نجات بنائے ۔ آمین

جديدايديش

مجھے خوشی ہے کہ عزیز م مولوی محمد انعام الحق سلمہ نے ازراہ محبت نئ ترتیب

اوراضافے کے ساتھ اس کوزینت بخش دی اور قابل قدر مولا نا ابو بکر صاحب زیر مجدہ [مہتم دار العلوم عالی پور گجرات انڈیا] اور میرے مخلص مولا نا انعام الحسن کیسر پوری [امام وخطیب مسجد نور الاسلام بلیک برن، یو کے] کی فکر و توجہ سے دوبارہ شائع ہور ہی ہے، خدائے پاک ان حضرات کے علم وعمل میں برکت عطافر مائے اور دارین کی فلاح سے سرفر از فر مائے۔

محرالطاف حسين بانی و ناظم وشیخ الحدیث جامعها بوبکرالاسلامیه نارائن گنج، کمی گکر، ڈھا کہ، بنگلہ دیش

عرض مرتب

محدثین نے جہاں احادیث کی تدوین و تالیف فرمائیں وہیں اصول حدیث

اور علوم حدیث پر بھی کتابیں مرتب فرمائیں ہیں، اصول حدیث کے بغیر حفاظت حدیث اور مقاصد حدیث تک پہنچناممکن نہیں، اسی طرح علوم حدیث کے بغیر کے بغیر فن حدیث میں مہارت وممارست اور بصیرت و گہرائی ناممکن ہے۔

عربی زبان میں اس موضوع پر بے شار کتابیں ہیں جس میں تصنیف و تالیف کے لحاظ سے بعض حضرات کے بقول قاضی ابومحمد امام رامهر مزی کی تصنیف کواولیت کا درجہ حاصل ہے۔

اردوزبان میں اب تو اس موضوع پر متعدد کتابیں آچکی ہیں ، آج سے ۸ سرسال پہلے علمی دنیا میں اگر آپ اس موضوع پرکوئی کتاب تلاش کریں تو بہت ہی کم کتابیں ملیں گی ، اور وہ بھی بہت مخضر زیر نظر کتاب کو بیہ خصوصیت حاصل ہے کہ آج سے ۲۸ سرسال قبل شخ طریقت ، عارف باللہ حضرت اقدس مولا نا الطاف حسین صاحب زید مجدہ نے تالیف فرمائی ، اس دور میں اس رسالہ کی کیا اہمیت محسوس کی گئی اور اکا برومشائخ نے کس قدر شرف قبولیت سے نوازا ، اور کن الفاظ میں اپنی خوشیوں کا اظہار کیا ، اُس کا انداز ہ اس زمانہ کے مشائخ کی تقریظات و آراء سے لگا سکتے ہیں ۔ اردوزبان میں اس رسالہ کو اول نہیں تو اولین میں شامل ہونے کا شرف ضرور حاصل ہے۔ اس رسالہ کو اول نہیں تو اولی کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر رسالہ حضرت نے لکھا اس زمانہ کے علمی ماحول کوسا منے رکھ کرنہایت مختصر سے لگھیا

اس زمانہ کے ممی ماحول کوسامنے رکھ کرنہایت محضر رسالہ حضرت نے لکھا تھا جوخور دسائز میں ۸۴ رصفحات پر مشتمل ہے، اِس دور میں چونکہ بہت سی کتاب سے افادہ کو دوبالا کرنے کتابیں اس فن میں آنچکی ہیں اس لئے اس کتاب کے افادہ کو دوبالا کرنے

حضرت مولا ناابو بكرصاحب كيسر بورى دامت بركاتهم مهتم دارالعلوم عالى بور تجرات

اسلامی شریعت کے بنیادی ما خذ قرآن وسنت ہیں، جس طرح عمل بالقرآن کیلئے فہم حدیث بالقرآن کیلئے فہم قرآن ضروری ہے اسی طرح عمل بالسنہ کیلئے فہم حدیث ضروری ہے، جو حضرات محدثین نے مدون فرمائے ہیں، اور یہ بھی ایک حقیقت ہے کہ عربی زبان کے بعدسب سے زیادہ جس زبان نے علوم شریعت کواپنے سینہ میں محفوظ کیا ہے، وہ ہے اردو زبان ۔ آج اسلامی علوم کا سب سے بڑا ذخیرہ عربی زبان کے بعداردو زبان میں ہے۔

اصول حدیث اور متداول کتب حدیث کے مؤلفین کے احوال پہمی اس وقت کئی کتابیں موجود ہیں، تاہم جس زمانہ میں طالبانِ علوم نبوت کی استعداد کافی بلند ہوا کرتی تھی، اور تفصیل کے بجائے اختصار ہی کافی ہوا کرتا تھا، اس وقت مخدومنا المکر مرہ بر شریعت حضرت مولانا الطاف حسین صاحب نقشبندی زیر مجدہ نے اصول حدیث کے ضروری مباحث اور مؤلفین حدیث کے مخضر احوال نہایت جامع اور بلیغ انداز میں قریباً ۸ سارسال قبل مرتب فرمایا تھا، اب موجودہ دور کے علمی ذوق کوسامنے رکھ کرضرورت تھی کہ تسہیل واضافہ کے ساتھ شائع کیا جائے، اس کیلئے ہمارے ادارہ کے استاذ مفتی مجد انعام الحق صاحب نے پوری دلچیبی کے ساتھ نئے سرے سے ترتیب دیا اور جابجا

كيك بنده نے جابجااضافه كياہے:

اس اضافے اور تشریحی جملوں کو حضرت کی عبارت کے ساتھ اس طرح منضم کردیا ہے کہ کوئی فرق وامتیاز باقی نہیں رہا۔

ہ۔۔۔۔۔احادیث کے تمام اقسام کا احاطہ، ہرایک کی تعریف اور ضروری تشریح شامل کی گئی ہے۔

، ﷺ۔۔۔۔۔ سحاح ستہ اور متداول کتب حدیث کا مختصر تعارف ایک ہی نہج پر اضافے کے ساتھ کیا گیا ہے۔

ان کتب کے مولفین کے ضروری احوال ایک ہی طرز پر طوالت سے بچتے ہوئے قلمبند کئے گئے ہیں۔

پسساخیر میں افتر اق امت اور ماانا علیہ واصحابی سے متعلق ایک قیمتی مضمون ہے جوبعینہ منقول ہے۔

محمد انعام الحق قاسمی مدرس دارالعلوم عالی بور گجرات، انڈیا حسن بور بر ہرا، سیتامڑھی، بہار ۲۵ رذ والحجہ ۲۲۲ ھ یوم جمہور بیرر ۲۰۰۱ء

تقريظ

حضرت مولا نامفتي مجمه عبدالله صاحب

مفتی مدرسه خیرالمدارس ملتان امیر جمعیت علمائے اسلام، ملتان الحمد لله و کفی و سلام علی عباده الذین اصطفی ، اما بعد! بنده نے رساله ' رہبرعلم حدیث' مصنفه برا درم محرّ م مولا ناالطاف حسین منظله کا اجمالی طور پر اور سرسری نظر سے از اول تا آخر جائزه لیااس کوطلباء وعلماء کیلئے بیحد مفید پایا۔ اللہ تعالی مصنف موصوف کو اس علمی گرانما بیمخت پر جزاء خیرعنایت فرمائیں اور ان کو اخلاص کے ساتھ دینی خدمت کی توفیق بخشیں۔ آمین

نيازمند

مفتی محمد عبدالله عفی الله عنه مدرسته خیرالمدارس ملتان ۲ارشوال ۱۲۸ ماره

حضرت مولا ناعبدالكريم صاحب

مهتم مدرسه عربي نجم المدارس كلاجي ضلع دُيره اساعيل خان پا كستان امير دُيره

بیر محدیت اضافے کئے،اللہ پاک حضرت والا کے علمی فیضان کو قبول فرمائے اوران کا سایۂ عاطفت صحت و عافیت کے ساتھ تا دیر قائم فرمائے،اور مرتب کے علم و عمل میں اخلاص نصیب فرمائے،اسی کے ساتھ اپنے عزیز مولا نا انعام الحسن مقیم بلیک برن کاشکر گذار ہوں جن کی دلچیبی سے طباعت کا مرحلہ آسان ہوا۔ اللہ پاک ان دونوں ہم نام انعام کو ہرقتم کے انعامات سے سرفراز فرمائے۔ آمین

ابوبکرکیسر پوری مهتم دارالعلوم عالی پور، ضلع نوساری، گجرات

کتاب ہذا'' رہبرعلم حدیث' کے بارے میںعلماءکرام کی آراء

حضرت مولا نامفتي محمودصاحب

شخ الحديث مدرسة قاسم العلوم ملتان، ناظم عموى جمعيت علمائے اسلام پاکستان الحمد لله و حده و الصلوة و السلام على من لانبى بعده، اما بعد! احترف "رببرعلم حدیث" کا جسته جسته مطالعه کیا، مصطلحات حدیث کے بیان میں بہترین خدمت ہے، الله تعالی قبول فرما کیں اور فاضل مؤلف کوعلوم دینیه کی مزید خدمت کی توفیق بخشیں۔ العبداللاحقر الافقر الافقر

محمود عفی عنه الخادم للعلوم بقاسم العلوم ملتان حال وارد ڈھاکہ ۱۳۸۸ مشوال ۱۳۸۸ ھ

حضرت مولانا قاری مجرعبدالسیسع صاحب مهتم مدرسه جامعه عربیسراج العلوم سرگودها، ناظم اعلی سرگودها دُویژن

اساعیل خان جمعیت علمائے اسلام حامداً و مصلیاً و مسلماً ، اما بعد!

احقر رساله 'ر مبرعلم حدیث' مؤلفه حضرت مولا ناالطاف حسین صاحب کے مطالعہ سے لطف اندوز ہوا، میری رائے ہے کہ اس شم کے رسائل کا مطالعہ مشکوة شریف پڑھنے والے طلباء پر لازم قرار دیا جائے اور ان سے با قاعدہ اس کا امتحان لیا جائے ، ان عنوانات پر معلومات حاصل کرنے کے بعدوہ یقیناً وشمنان حدیث کے دفاع میں اپنے آپ زیادہ جری اور دلیر ہوجا کیں گے۔ مشکوة شریف پر احسان فرمایا بلکہ مشکوق شریف پر احسان فرمایا بلکہ مشکوق شریف پر احسان و عن سائر طلبة الحدیث . آمین

[حضرت مولانا] عبدالكريم عفى عنه مدرسه عربی مجم المدارس كلاچی ضلع دُیره اساعیل خان پاکستان حال وارد جهانگیرآ باد (دُها که) سارشوال ۱۳۸۸ هـ،سیدالایام شیخ الحدیث مدرسه اشرف العلوم برا کره وها که، بنگله ولیش الحمدلله و کفی و سلام علی عباده الذین اصطفی ، اما بعد!

جملہ اہل اسلام کاعقیدہ ہے کہ دین اسلام اصول اربعہ پربئی ہے، قرآن وحدیث ، اجماع وقیاس۔ قرآن وحدیث کی عظمت وشان اگرچہ ضبط تحریر وتقریر میں سانہیں سکتی ، لیکن ان کی تفسیر وتشریح مع بیانِ غوامضِ اسرار ولطا گف دفت شعار دینی خدمت کا اہم ترین فریضہ تھا۔ اسی نظریہ کے تحت مشاہیر امت عرب وعجم خصوصاً عراق وشام اور روم وفارس و بلاد مغرب کے لا تعداد علاءِ کبار وفضلاءِ ولایت شعار نے اس خدمت کیلئے اپنی جان مال وعمریں تادم آخر وقف کر دیں ، انہیں قربانیوں کا ثمرہ ہے کہ وہ دین دنیا میں شاد کام ہوئے ان کے ناموں کی صدا کیں تمام دنیا کی فضا میں گونج رہی ہیں ، ان اسائے ان کے ناموں کی صدا کیں تمام دنیا کی فضا میں گونج رہی ہیں ، ان اسائے گرامی کی عظمت وہیت سے کتابوں کے صفحات واور اق منشور شاہشاہی سے گرامی کی عظمت وہیت سے کتابوں کے صفحات واور اق منشور شاہشاہی سے کھی کہیں زیادہ بیش بہانظر آتے ہیں۔

اس اہم فریضہ اسلام کی خدمت میں ضیاء الفرقدین مولانا محمہ الطاف حسین صاحب نے ایک رسالہ سمی "رہبر علم حدیث" تصنیف فرمایا جس میں فوائد ولطائف فن حدیث کے وہ گنجینہ جواہر ودیعت رکھے گئے ہیں جو برٹ ی بڑی ضخیم کتابوں اور محققین اعلام کے سینوں سے ماخوذ ہیں، اہل ذوق کیلئے اس کا مطالعہ ہی اس کے محاسن وفضائل کیلئے کافی جمت ہوگا۔ اللہ تعالی اس

جمعیت علمائے اسلام

الحمدلله وحده والصلوة والسلام على من لانبى بعده ،

اما بعد! احقر نے برادرعزیز مولانا محرالطاف حسین صاحب کا رساله

"در بہرعلم حدیث" بعض مقامات سے دیکھا، جن مضامین پر بیرساله شمل ہے بلاشبہ وہ ایک علمی ضرورت کو پورا کرنے کیلئے ازبس ضروری ہے، مولانا موصوف نے کمل محنت کے ساتھاس خالص علمی مباحث پرتح ریفر مایا ہے، احقر کے نزدیک طالبان علم حدیث شریف کیلئے یقیناً بیا یک نعمت غیر مترقبہ ہے، حق تعالیٰ شانہ اسے قبول فرمائے اور شائقین علوم نبویی علی صاحبہا الف الف تحیة کیلئے مفید بنائے۔ آمین

احقر عبدالسمیع عفی عنه مهتم مدرسه جامعه عربید براج العلوم سرگودها پاکستان حال نزیل دُها که سارشوال ۱۳۸۸ ه سرجنوری ۱۹۲۹ عبر وزجمعه

حضرت مولا نامجمه عبدالخالق صاحب

ُ کَتَابٌ کُومَقْبُولُ عَامٌ فَرِما ُ نَیْنَ اور مُوَلَفْ کُو دَین کی مُزید خُدمْت کی تُوفِیْقُ جَشْیں۔ آمین

باكسار

محمرعبدالخالق عفی عنه خادم مدرسها شرف العلوم بڑاکٹرہ ڈھاکہ ۱۸رجمادی الاولی ۲۸۸ساھ

حضرت مولا نامح تفضّل حسين صاحب

يَشْخُ النَّفْسِر مدرسه اشْرِف العلوم برُّ اكثرٌ ه دُّ ها كه، بنگله ديش

میں نے اس رسالہ کا برجستہ چند مقامات کا مطالعہ کیا جس سے مجھے بڑی مسرت حاصل ہوئی کیونکہ میں نے اس کو باوجود مختضر وموجز ہونے کے فوائد فن حدیث کا ایک گراں قدر ذخیرہ پایا اور چند مسلّم ومتنداجلہ علاء کے افادات کا ایک بیش بہا خزانہ ہے کہ جس کا مدت تک کاوش وعرق ریزی اور ورق گردانیوں کے بعد بھی یکجائی طور پر ہاتھ آنامشکل ہے۔ میری رائے ہے کہ بیہ رسالہ شتغلین فن حدیث کیلئے نہایت نافع وبصیرت افزاہوگا۔

اللهم اجعله نافعاً مباركاً ، انتهى

م تفضّل حسين عفى عنه

خادم مدرستها شرف العلوم ڈھا کہ وسابق منتحن مدرسہ ایجوکیشن بورڈ

بنگله دليش

۲۵ رشوال ۱۳۸۸ ه

حضرت مولا نامجمه عبدالهنان صاحب

حضرت مولا نامحمر حفيظ التدصاحب

صدر مدرسین لو مجراسلامیسیسر مدرسه نواکهالی، بنگله دلیش نحمد و نصلی علی رسوله الکریم،

اما بعد!

احقر نے عزیز محترم مولانا الطاف حسین صاحب کا رساله "رہبرعلم حدیث" کوا کثر مقامات سے دیکھا، ماشاء اللہ اپنے موضوع پر بیرساله بہت ضروری ومفید مضامین پر مشتمل ہے، طالبین علوم نبوت کیلئے یہ بصیرت افروز ثابت ہوگا۔ انشاء اللہ العزیز

بارگاہ رب العزت میں دعا ہے کہ اس کومقبول عام فرمائیں اورمؤلف سلمہ تعالیٰ کو بیشتر ازبیشتر خدمت حدیث کا موقع عنایت فرمائیں۔

آمين بجاه سيد المرسلين

بنده محمر حفيظ الله

خادم تومچراسلامیه بینسرنوا کھالی

١٥ ررمضان المبارك ١٣٨٨ هـ

پُرْسِالْ كُاصَى بُوردارالعلوم مُدرسُدُوا كَمَالَى ، بَكُلُه دليْشُ فَ فَ فَ يَرْسُلُوا كَمَالَى ، بَكُلُه دليش نحمد و نصلي على رسوله الكريم ،

اما بعد! اسلام کی نعمت ہمیں دوہی ذرائع سے پینچی ہے، ایک کلام اللہ دوسرے احادیث نبوی۔ نبی علیہ السلام کو اللہ تعالیٰ نے اپنے کلام کی تبلیغ و تفہیم اور تعلیم کا واسط بنانے کے علاوہ ان کی علمی قیادت اور رہنمائی کے منصب پر مامور کیا ہے، تا کہ معاشرہ کا پورا پورا تزکیہ ہوا ورانسانی زندگی کی صحیح راہ سب کو معلوم ہوجائے۔ بردار محترم مولانا الطاف حسین صاحب' رہبرعلم حدیث' نامی اس مخضر رسالہ میں ضرورت حدیث، اصول حدیث، حالات رواۃ اور علمی نکات کے جومفید مضامین کو یکجا کر دیا ہے وہ مخضر ہونے کے ساتھ ساتھ جامع اور مستند بھی ہیں۔ انشاء اللہ بیر سالہ معلمین و معلمین دونوں طبقے کیلئے مفید خدمات کی زائدتو فیق عنایت کرے۔ آمین خدمات کی زائدتو فیق عنایت کرے۔ آمین

محمد عبدالهنان خادم لکھی پور مدرسته عالیہ نوا کھالی ہے اور علم بھی ایک نور ہے تو وضو کے اہتمام سے علم میں نورانیت اور جلا پیدا ہوگا۔

☆......[٣] عمل بالاحاديث:

سنت پرمل کی نیت سے احادیث پڑھئے۔امام احمد بن منبل کے بارے میں مشہور ہے وہ فرماتے تھے کہ کوئی بھی حدیث (معمول بہ کے لائق ہو) الیم نہیں گذری جس پر میں نے عمل نہ کیا ہو، حتی کہ ایک مرتبہ جب بیحدیث گذری کہ نبی اگرم صلی اللہ علیہ وسلم نے بچھنا لگوایا، جام کوایک درہم عنایت فرمایا تو پہلے میں نے یہ کل کیا اور جام کوایک درہم دیا، دیکھئے ممل بالسنة نے ان کے نام کوس قدرروشن کردیا۔

لاق حميده: ميده:

اہل علم اور طلباء کو اخلاق حمیدہ کا پیکر ہونا چاہئے کیونکہ بیعلم خیر العلوم ہے اور اخلاق حمیدہ سے متصف انسان خیر الناس کہلاتا ہے اور اس سے خیر وجود میں آتی ہے۔

☆......[۵] احترام:

ادب واحترام کے بغیرعلم کے نتائج وثمرات عام طور پر ظاہر نہیں ہوتے، طلبہ کوخاص کرتین چیزوں کا احترام کرنا جا ہئے:

.....علم ه.....اسباب علم ه.....استاد

احترام علم بيہ ہے كەدل ميں اس علم كى اہميت وفضيلت كااستحضار واحساس

طلب علم کے آ داب

علم شریعت سے وابسۃ خوش نصیب افراد کیلئے ہمہ دم آ داب علم کا لحاظ و
پاس رکھنا نہایت ہی ضروری ہے کیونکہ اس کے بغیر علوم نبوت سے فیضیاب
ہونامشکل اورانوار نبوت سے بہرہ ور ہونا دشوار ہوتا ہے، اسی بنا پر حضرت محملہ
رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے کہ پہلے ادب سیکھو پھر علم سیکھو۔ حضرت مخلد بن
حسین کہا کرتے تھے کہ ہم کثرت حدیث کی بہ نسبت ادب کے زیادہ مختاج
ہیں۔ اس لئے طالبان علوم نبوت پر لازم ہے کہ اس علم کے آ داب سے
واقفیت حاصل کریں اور اپنے آپ کو آ راستہ و پیراستہ کریں۔ ذیل میں چند
آ داب ذکر کئے جاتے ہیں:

☆[۱] تصحیح نیت اور اخلاص:

بغیر حسن نیت اورا خلاص ساری محنت بے کاراور رائیگاں ہے، طالب علم کو طلب علم سے حق کی رضامقصو دہونی جا ہئے، ملازمت، عزت، منصب وشہرت اور مال وجاہ کی لالج ہر گزنہ ہونی جا ہئے۔

☆.....[۲] وضوء و نظافت:

طالب علم اورخاص کرطالب حدیث کو ہمیشہ باوضور ہنا چاہئے ، بالخصوص حدیث شریف تو بلاوضو پڑھنے کی ہمت ہی نہ ہونی چاہئے ، کیونکہ وضوا یک نور حاصل نہیں کیا جاسکتا۔

یہ شعر بھی مشہور ہے:

من طلب العلی سهر اللیالی بقدر الکد تکتسب المعالی جس نے بلندی کو چاہا تو اس نے شب بیداری کی، مشقت کے بقدر عظمت وہلندی حاصل کی جاتی ہے۔

لاس....[٩] حياء و شرمندگی:

تخصیل علم اور علمی باتوں کے معلوم کرنے میں حیاء وشرمندگی اور کبرو پندارکوحائل نہ ہونے دیں، حضرت مجاہدگا قول ہے:

لا ينال العلم مستحي و حيااورتكبركرنے والاعلم حاصل نہيں مستكبر، كرسكتا۔

☆...... [۱۰] عدم بخالت:

یوں تو بخل ہرفن اور ہرشعبۂ زندگی میں مذموم ہے علم کے باب میں اس کی مدمت اور بڑھ جاتی ہے، لہذا دوسروں کو علمی فائدہ پہنچانے میں بخل سے کام نہ لینا چاہئے ، بخیل کے بارے میں حضرت عبداللہ بن مبارک فرماتے ہیں جس نے بخل کیا وہ تین باتوں میں مبتلا ہوگا:

﴿ يا اپناعكم بھول جائے گا۔

المراءكا تابع اورخوشامدي بن جائے گا۔

رہے،اسباب علم کے احترام میں کتاب اور درسگاہ کا احترام بطور خاص شامل ہے اور رہا استاد کا احترام تو وہ لازم ہے۔

بڑے کی عظمت کا خیال دل میں ہواور زبان سے اس کا اظہار ہو، مثلاً جب اللہ یاک کانام لینا ہوتا تعظیمی کلمہ کہنا چاہئے جیسے اللہ تبارک و تعالیٰ ، جل جلالہ وغیرہ، رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا اسم گرامی آئے توصلی اللہ علیہ وسلم، صحابۂ کرام کا نام آئے تو رضوان اللہ علیہ م اجمعین ، بزرگوں کے نام کے ساتھ رحمہم اللہ اورا گرزندہ ہوتو مظلم وغیرہ کہنا جاہئے۔

كس....[∠] تكرار و استحضار:

تکرار کے بغیرعلّم میں پختگی پیدانہیں ہوتی ،حضرت ابن عباس رضی اللّٰد عنه فرماتے ہیں:

مذاکرة العلم ساعة خير ايک ساعت علم کا مُداکره کرنا ايک من احياء ليلة ، رات بيدارر بخ سازياده بهتر ہے۔

☆.....[^] محنت و مشقت:

اس علم کے حصول میں سستی کو ذرہ برابر موقع نہ دیں ،محنت کے ساتھ کامیا بی کی توقع حق تعالی پر ہواپنی محنت پر بھروسہ نہ ہو ،محدث سیجیٰ بن کثیر ً فرماتے ہیں:

لا يستطاع العلم براحة الجسم ، جسماني راحت كي اتهامكو

السالخ الم

حدیث کی تعریف

حدیث کے معنی علامہ جوہریؓ کے مطابق کلام کے ہیں محدثین نے حدیث کی تعریف ان الفاظ میں کی ہے: '' اقوال رسول الله صلی الله علیہ وسلم وافعال اور آپ کے واقعال اور آپ کے اقوال (اختیاریہ ہوں یا غیراختیاریہ) کوحدیث کہتے ہیں۔ علامہ خاویؓ نے فتح المغیث میں یہ تعریف کی ہے:

"ما أضيف الى النبى صلى الله عليه وسلم قولاً أو فعلاً أو صفةً حتى الحركات و السكنات في اليقظة و المنام

فتر المغيث ر ١٣_]

بعض حضرات نے مندرجہ ذیل الفاظ میں حدیث کی تعریف کی ہے حالانکہ بیحدیث کی تعریف کہتے اور حالانکہ بیحدیث کی تعریف ہے۔ علم حدیث کے درمیان فرق ہے:

" هو علم يعرف به أقوال رسول الله صلى الله عليه وسلم وافعاله وتقريراته "وهم جس ك ذرايعه نبى اكرم صلى الله عليه وسلم ك

☆.....[۱۱] اهتمام دعاء:

دعاء مغز عبادت ہے اور علم بیا ہم عبادت ہے لہذا اس اہم عبادت میں معنت کے ساتھ بکثرت دعا کا اہتمام کرنا چاہئے ،موجودہ زمانہ میں اس میں بہت کوتا ہی ہوتی ہے ،اس کی اہمیت ہی طلبہ کے دل سے نکل چکی ہے جبکہ محنت کے باوجود سب کچھ ماتا اسی دربار سے ہے۔

☆.....[۱۲] اداء شکر:

خدائے پاک نے لاکھوں انسانوں میں سے چن کرآپ کواپنے علم کیلئے منتخب فرمایا اس شرف سے بڑھ کراور کیا شرافت ہو سکتی ہے کہ آپ اس علم کیلئے من جانب اللہ چنیدہ ہیں، لہذا اس پر ہر بن موسے شکر گذار ہونا چاہئے بلکہ روزانہ دورکعت بطور شکرانہ اداکرنا چاہئے۔

موضوع

" ذات النبى صلى الله عليه وسلم من حيث انه رسول لا من حيث انه بشر و جسم ."

غرض

[1] "هو الفوز بسعادة الدارين بعد العمل على مرضياته و الكف عن غير مرضياته . " تاجم يهتمام علوم شرعيه كى قدرِ مشترك غرض ہے۔

[۲] دوسری غرض فہم قرآن اور عمل بالقرآن ہے۔

[m] معرفة كيفية الاقتداء بالنبي صلى الله عليه وسلم .

غايت

" هي معرفة الأحكام الشرعية و دلائلها و تفسير القرآن والعصمة عن الخطاء في نقل الروايات."

يعنی احکام شرعيه کا جاننا [خواه من قبيل احکام فرعيه هول، جن کوفقه کها جاتا

اقوال دا فعال اورآپ کی تقریر معلوم ہو۔

تقریر سے مرادیہ ہے کہ کسی امتی نے آپ کے سامنے وئی کام کیا، یا کوئی بات کہی اور آپ نے اس پرنگیز ہیں فر مائی، نہاس وقت نہ بعد میں، صفت سے مراد آپ کے احوال اختیار بیاور غیر اختیار بیر (جیسے آپ کے حلیے، قد، چہرہ وغیرہ سے متعلق روایات) ہیں۔

قول صحابي كوحديث كهه سكتي بين؟

متقد مین محدثین اوراحناف کے نزدیک حدیث عام ہے اور اس کا اطلاق صحابہ اور تابعین کے اقوال وافعال پر بھی ہوتا ہے، سید شریف جرجائی تحریفر ماتے ہیں کہ جس طرح نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے قول وفعل اور تقریر کو بھی کو حدیث کہتے ہیں اسی طرح صحابی اور تابعی کے قول وفعل اور تقریر کو بھی حدیث کہتے ہیں۔ (ظفر الا مانی ہم)

تاہم متأخرین ، صحابہ وتابعین کے اقوال وغیرہ پر حدیث کا اطلاق نہیں کرتے ، صاحب نور الانوار فرماتے ہیں: "الحدیث یطلق علی قول النبی خاصةً" یہی وجہ ہے کہ متأخرین اصولیین بھی حدیث کی تعریف میں قول صحابی وتابعی کوذکر نہیں کرتے اسلئے انسب یہی ہے کہ حدیث کا اطلاق قول صحابی وتابعی پر نہ ہو۔ اور یوں بھی عرف میں حدیث کا لفظ سنتے ہی نبی قول صحابی وتابعی پر نہ ہو۔ اور یوں بھی عرف میں حدیث کا لفظ سنتے ہی نبی

ہے یا عقائد کے درجہ میں ہوں یا اخلاق کے درجہ میں ہوں۔]ان کے دلائل اور مراد قرآن کا جاننا، اور نقلِ روایات میں غلطی سے محفوظ رہنا یہ اس علم کی غایت ہے۔

وجبسميه

اور الله تعالى نے آپ کو بے خبر اور الله تعالی نے آپ کو بے خبر پایاسور استہ بتلادیا۔

اور الله تعالى نے آپ کو نادار پایا موالدار بنادیا۔ سومالدار بنادیا۔

ان تینوں احسانات کو جتلانے کے بعد تین فرائض لف ونشر غیر مرتب کے طور پر عائد فر ماتے ہیں، وہ فرائض ثلاثہ سے ہیں:

وا وَامَّا الْيَتِيْمَ فَلا تَقُهُرُ آبِ يَتُم رِبِّتَى نَه يَجِي ـ

(یوالم بجدک کے بالقابل ہے۔)

اورسائل كومت جهر كئے۔ [٢] وَاَهًا السَّآئِلَ فَلا تَنهُورُ

(پیرووجدک عائلاً کے بالمقابل ہے)

اور اپنے رب کے انعامات کا

سَرِرَ عَبِي رَبِّكَ فَحَدِّثُ تَرَرُهُ كَرَهُ كَرِيْ مَا بِنِعُمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثُ تَرُكُرُهُ كَرَا يَجِئِد

(پیووجدک ضالاً کے بالتقابل ہے)

یہاں نعمت سے مراد ہدایت ہے، مطلب یہ ہوا کہ ہم نے آپ کو جو ہدایت عطافر مائی ہے اس کو دوسروں تک پہنچا ہئے ۔ تو حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے قول وفعل کے ذریعہ اس قرآنی تھم کی تغیل کی اس لئے آپ کے اتوال وافعال وتقاریر کوحدیث کہا جانے لگا۔

علامہ تقی عثانی زید مجدہ فرماتے ہیں کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے اقوال وافعال کیلئے لفظ حدیث کومخصوص کرلینا استعارۃ العام للخاص کے قبیل سے ہے۔ [درس ترندی الر ۱۹]

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

فضيلت علم حديث

علم حدیث کی فضیلت کئی طرح ثابت ہے:

[۱] اول پیر کہ علوم دینیہ جودس ہیں علم حدیث ان تمام کامنبع ہے، وہ علوم نشرہ پیرین:

ا علم تفسير ٢ علم حديث ٣ فقه ٩ اصول فقه ٥ عقائد ٢ علم اخلاق ٤ تجويد ٨ قر أت ٩ علم رسم الخط ١ علم الابتداء والوقف

عد بوید ۱۸ سر ای ۱۹ سے ۱۹ سے ۱۹ سے ۱۱ سال به ۱۱ والون والون کے بیت ام علوم کا مدارعلم حدیث بی شاخیں اور شعبے ہیں ، الہذا جب تمام علوم کا مدارعلم حدیث پر ہوا اور علوم دینیہ کا باقی رکھنا بھی ضروری ہے تو بقاء کیلئے علم حدیث کا پڑھنا اور پڑھانا بھی ضروری ہوا۔ علوم دینیہ کی بقاء اس لئے ضروری ہے کہ دین کی بقاء ، علوم دینیہ پر موقو ف ہے ، اور بقاء دین فی حدذ انتہ بھی ضروری ہے ، اور بقاء دین فی حدذ انتہ بھی ضروری ہے ، کیونکہ دنیا اس وقت تک باقی رہے گی جب اور بقاء عالم کیلئے بھی ضروری ہے ، کیونکہ دنیا اس وقت تک باقی رہے گی جب تک دین باقی رہے گا ، جب دین ختم ہوجائیگا تو دنیا بھی ختم ہوجائیگی ۔ غرض تمام علوم دینیہ کے مدار ہونے کی بناء پر اس کا افضل ہونا واضح ہے ۔ تمام علوم دینیہ کے مدار ہونے کی بناء پر اس کا افضل ہونا واضح ہے ۔ آ

کے اس بنا پر جمہور محدثین و شنکلمین کے نزدیک یعلم ، علم تفسیر سے بھی افضل ہے، کیونکہ اس کا موضوع ، کلام لفظی ہے ، جو کہ حادث ہے ، اور علم حدیث کا موضوع ، ذات رسالت ہے جو کہ تمام مخلوقات حتی کہ عرش وکرسی اور بیت اللہ سے بھی افضل ہے، اور شرافتِ علم شرافتِ علم مشرافتِ موضوع سے ثابت ہوئی ہے۔

شرافت علم حدیث

کسی فن کی شرافت یا تو اس فن کے موضوع کے اعتبار سے ہوتی ہے یا غرض و غایت کے لحاظ سے یا پھر مسائل کے اعتبار سے ہوتی ہے یا شدت احتیاج کے اعتبار سے فن حدیث کی شرافت ان تمام امور کے لحاظ سے ثابت ہے، کے ونکہ علم حدیث کا موضوع ذات النبی صلی اللّه علیہ وسلم من حیث النبی ہے اور ذات نبوی کا افضل وا شرف ہونا اظہر من اشتمس ہے۔

اوراس فن کی ایک غرض فہم قرآن اور عمل بالقرآن ہے، ان دونوں کی اہمیت وضرورت بالکل واضح و بدیہی ہے۔

اورغایت کے لحاظ سے بھی اندازہ ہوتا ہے کہ علم حدیث کی غایت احکام شرعیہ کا جانا ہے، اور احکام شرعیہ کے جانے بغیر نہ تو انسان عمل کرسکتا ہے اور نہ ہی نجات پاسکتا ہے، اور شدت احتیاج کے لحاظ سے بھی اس کی شرافت معلوم ہوتی ہے، بایں طور کہ اس کے بغیر کسی بھی عمل حتی کہ فرائض اسلام کی ادائیگی کا طریقہ معلوم نہیں ہوسکتا، غرض علم حدیث کی شرافت من کل الوجوہ ثابت ہے۔

تبلیغ کاہی ایک شعبہ ہے۔

[^m] درود شریف پڑھنے کی فضیلت بکثرت آئی ہے اور ظاہر ہے کہ جس قدر درود شریف پڑھنے کا موقع علم حدیث حاصل کرنے میں ماتا ہے اتنا میں اور علم میں نہیں ماتا۔

ضرورت حديث

[۱] الله تعالی نے انسانوں کو ظاہری اور باطنی نعمتوں سے سرفراز فرمایا جسیا کہ ارشادر بانی ہے:

﴿ أَسُبَغَ عَلَيْكُمُ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ﴾ تمهار او پرظا هرى اور باطنى نعمتوں كو بها ديا۔

قانون ودستوریہ ہے کہ جب کوئی بادشاہ کسی پرکوئی احسان کرتا ہے تواس منعم علیہ کے ذمہ بادشاہ کاشکر بیدواجب ہوجا تا ہے، اسی طرح جب تن تعالی نے نوع بشر کوظاہری و باطنی نعمت سے سرفراز فرمایا توان کے ذمہ بھی حق تعالی کاشکر بیضروری اور لابدی ہوا۔ اورشکرادا کرنے کی تین صورتیں ہوتی ہیں، کاشکر بیضروری اور لابدی ہوا۔ اورشکرادا کرنے کی تین صورتیں ہوتی ہیں، کبھی تو زبان سے، کبھی دل سے اور کبھی عمل سے، اور ظاہر ہے کہ کما حقہ شکرادا کرنے کا طریقہ حق تعالیٰ ہی کے بتلائے ہوئے ان اصولوں سے معلوم کیا جاسکتا ہے جن کی تشریح بغیرا جا دیث نبوی کے ممکن نہیں، کیونکہ آپ کے اقوال جاسکتا ہے جن کی تشریح بغیرا جا دیث نبوی کے ممکن نہیں، کیونکہ آپ کے اقوال

من کرم صلی اللہ علیہ وسلم نے حدیث یاد کرنے والوں کیلئے دعا فر مائی ہے جوسعادت عظمی ہے:

نضّر الله عبداً سمِع مَقالَتِی فَحَفِظَها و وَعَاها فرُبَّ حاملِ فقهِ الله مَن هو أَفْقَه مِنا (مُشَالُون ۲۵)

الله پاکتر وتازه رکھالیے بندے کوجس نے میری بات سنی اس کویاد کیا محفوظ رکھا اور اس کو دوسروں تک پہنچایا ، کیونکہ بعض بہت سے لوگ جن کو پہنچایا جاتا ہے وہ اس سننے والے سے زیادہ یا در کھنے اور سمجھنے والے ہوتے ہیں۔

حضرت عبدالله بن مسعودرضی الله عنه فل فرماتے ہیں:

اللهم ارُحَم خُلَفائي قلنا يا رسول الله من خلفاءُك قال : الذين يأتون مِن بَعدى يَرُوُون أحادِيثي و يُعلِّمونها الناس .

(مجمع الزوائد ار ۱۲۹)

اے اللہ! ہمارے خلفاء پر رحم فرما، ہم لوگوں نے عرض کیا کہ آپ کے خلیفہ کون لوگ ہیں؟ آپ نے ارشاد فرمایا کہ وہ لوگ جومیرے بعد آئیں گے اور میری احادیث کو بیان کریں گے اور لوگوں کو سکھلائیں گے۔

اس سے معلوم ہوا کہ حدیث کی خدمت کرنے والے آپ کے علمی خلیفہ ہیں کیونکہ آپ کی بعثت کا مقصد تبلیغ دین ہے اور حدیث کی تعلیم ونشر واشاعت

وافعال اورتقریر سے ان اجمالی اصول کا سمجھناممکن ہوسکتا ہے اس کے بغیر محال وناممکن ہے لہٰذا اس سے ثابت ہو گیا کہ علم حدیث کی شدید ضرورت ہے۔

[7] احکام شرعیہ مثلاً صلوٰ ق ، زکو ق ، حج ، عمرہ ، تیم وغیرہ کی عملی صورت معلوم کرنے کیلئے اسوہ رسول کی ضرورت ہے ، احادیث رسول ہمیں احکام شرعیہ کی عملی صورت بتاتی ہے اس سے بھی حدیث کی ضرورت ثابت ہوتی ہے۔

[۳] قرآن میں جو اصطلاحی الفاظ استعال ہوئے ہیں ان کے شرعی معانی کی تعیین و تفہیم بغیر احادیث کے ممکن نہیں ۔ اور احادیث کے بغیر ان کا محتین کی ضرورت ثابت ہوئی۔

معانی کی تعیین و تفہیم بغیر احادیث کے ممکن نہیں ۔ اور احادیث کے بغیر ان کا کی ضرورت ثابت ہوئی۔

حدیث تفسیر قرآن ہے

دین متین کی بنیاد قرآن وحدیث ہے نفس جیت میں دونوں برابر ہیں،

لیکن اتنا فرق ہے کہ قرآن مجید ہم تک تواتر طبقہ سے پہنچا ہے اور حدیث

شریف طرق مختلفہ سے پینچی ہے جس سے اقسام حدیث متعدد ہو گئے ۔ خبر متواتر
قرآن مجید ہی کی طرح ہوتی ہے صرف تلاوت فی الصلوق کا فرق ہے۔ اور خبر مقواتر و مشہور ، خبر متواتر کے قریب ہوتی ہے اور خبر واحد ، ثبوت میں ، خبر متواتر و مشہور کی طرح نہیں ہے ، البتداس کے مشہور کی طرح نہیں ہے ، البتداس کے مشہور کی طرح نہیں ہے ، البتداس کے

مقتضا یمل کرنامثل قرآن کے واجب ہے۔ کیونکہ قرآن مجید کلام معجز ہے، اس کاایک ایک لفظ بیثار معانی کامحمل ہے،کسی معنی کی تعیین کرناانسانی بس سے باہر ہے،اسلئے درمیان میں ایک ایسی ذات کا ہونا ضروری ہے جوخو دتو محدود متناهی صفات سے متصف ہولیکن غیر محدود صفات سے متصف ذات سے اس کا تعلق ہو، تا کہ اس تعلق کی بنا پر انسانوں کو وہ کتاب سمجھا سکے ، وہ سرور کا کنات صلی الله علیه وسلم کی ذات اقدس ہے، اسلئے حضورا کرم صلی الله علیہ وسلم کی حدیث قرآن یاک کی تفسیر ہے۔ نیز ہر کلام کسی نہ کسی خاص کیفیت وانداز میں ڈوبا ہوا ہوتا ہے اس کلام کو وہی آ دمی سمجھا سکتا ہے جواس کیفیت ہے آ شنا ہو، جبیبا کہ نسفی کا کلام وہی آ دمی سمجھ سکتا ہے جس کوفلسفہ سے لگا وَاور تعلق ہو،اورشاعر کا کلام وہی شخص سمجھ سکتا ہے جس کوشعروشاعری کا ذوق ہو۔ اسی طرح رب تعالیٰ کا کلام وہی ذات زیادہ سمجھ سکتی ہے جورب تعالیٰ سے آشنا ہواور حق تعالیٰ کے ساتھ زیادہ تعلق اور لگاؤ ہو۔اور جب ہم ان احادیث کو د کھتے ہیں جن میں آیات قرآنیہ کی تفسیر کی گئی ہے تو پتہ چلتا ہے کہ حضورا کرم صلی الله علیه وسلم کوکسی آیت کی تفسیر میں غور وفکرا ورسوچ و تدبر کی ضرورت نہیں یٹی بلکہ آیات کریمہ اترتی تھی اور آپ بالبداہت تفسیر فرماتے جاتے تھے، معلوم ہوا کہ ق تعالیٰ کی طرف سے تفسیر بتائی جاتی تھی۔

حفاظت دین

حق تعالی نے دنیا میں بہت سے انبیاء بھیج اور کتب وصحف نازل فر مائے مگر اہل ہوں انسانوں نے ان صحیفوں اور کتابوں میں تحریف وتبدیل کردی الیکن جب قرآن کو نازل کرنے کا موقع آیا اور حکمت خداوندی کا پیر تقاضا ہوا کہ حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد سلسلۂ نبوت بند کر دیا جائے تو حق تعالی نے خوداینی کتاب قرآن کریم کی حفاظت کا ذمہ لے لیا، اوراعلان فرمايا ﴿ إِنَّا نَحُنُ نَزَّلُنَا الذِّكُو وَ إِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴾ چِونكه بيادة الله ہے کہ حق تعالی اسباب کے ذریعہ کام لیتا ہے اس لئے دین وشریعت کی حفاظت کے بھی اسباب بیدافر مائے ،اسباب حفاظت دوطرح کے ہیں: [۱] قوی شخصیت، جودین و کتاب کی حفاظت کرنے والی ہو۔ [7] خوددین کا قوی ہونا کہاس کوکوئی بدل نہ سکے۔

قوی شخصیت کی صورت بیہوئی کہ اس امت میں حق تعالی نے ہر صدی میں مجدد ین جھینے کا سلسلہ جاری فرمایا، چنانچہ ارشاد نبوی ہے:

ان الله يَبعث لهذا الدين على رأسِ كلِّ مأةِ سنَةٍ مَن يُّجدِّدُ لها دِينَها، الله تعالى اس دين كى حفاظت كيك برصدى كرسر يرايبا شخص

المنت كسامندين كوتازه كردك كا-[مشكوة سام]

یعنی دین متین کودلائل کے ساتھ شرک و بدعت رسم ورواج اور باطل چیز وں سے ممتاز کردیں گے، البتہ بیا حقال تھا کہ دو مجد دوں کے در میانی زمانہ میں دین میں تحریف ہوجائے اس کیلئے ہرزمانہ میں ایک جماعت علاء حقہ کی مقرر فرمائی تا کہ در میان میں تحریف کا موقع نہ رہے، حدیث شریف میں ہے:

یحمِل هذا العلم من کل خلفِ عدو له ینفون عنه تحریف

الغالین و انتحالَ المُبطلین و تأویلَ الجاهلین ، (بیهقی، مشکوه ۲۷)
آئنده آنیوالے ہر گروه میں سے اچھے اور نیک لوگ اس علم کو حاصل
کریں گے،اور پھراس علم کے ذریعہ غلوکرنے والوں کی تحریف کومٹادیں گے
باطل طریقہ والوں کی غلطی کو دور کریں گے اور جاہلوں کی تاویل کی تردید

بلکہ مزید حفاظت کے طور پراس بات کا وعدہ کیا گیا کہ ہرساعت میں ایک جماعت حفاظت کرنے والی موجودرہے گی، چنانچ ارشادہے کہ:

حق تعالی نے فقط دین کے ظاہری ارکان وعقا کداور مسائل کی حفاظت پراکتفاء نہیں فرمایا بلکہ اس کے ساتھ ساتھ دین کی روحانیت کی بھی حفاظت کا وعدہ فرمایا ہے جبیبا کہ حدیث شریف میں ہے کہ:

أبشروا أبشروا انها مثل الغیث لایدری آخره خیر أم أوله،
اس حدیث میں لفظ خیر کا ہے جس کا تعلق باطن کے ساتھ ہے۔
دوسراسب بیہ ہے کہ دین کوالیا قوی بنایا جائے کہ کوئی اس کوبدل نہ سکے،
رب ذوالجلال نے اس دین کواس قدر مشحکم اور مضبوط بنایا ہے کہ قیامت تک
اس کو نہ کوئی مٹا سکتا ہے اور نہ ہی تحریف کر کے اس کوسٹے کرسکتا ہے، چودہ سو
سال کا زمانہ گذر چکا ہے اس درمیان کتنے سور ما آئے مگر درما ندہ اور تھک ہار
کرشر مندہ ہوگئے مگر دین متین علی حالہ باقی ہے۔

**

حفاظت صدیث کے اسباب

جس دین کی حفاظت کی ذمہ داری ذات خدانے لی ہے، اس دین کے پنیادی ماخذ دو ہیں ، قرآن و حدیث ۔ جس طرح قرآن کی حفاظت کے پنیادی ماخذ دو ہیں ، قرآن و حدیث ۔ جس طرح حفاظت حدیث کے اسباب بھی پیدا فرمائے ۔ چیاراسباب اساسی اور بنیادی ہیں:

[1] بذریعه حفظ: عربول کوبطورخاص قوت حافظه کی دولت سے نوازا گیا، حضرات صحابہؓ نے غیر معمولی یا دداشت کوا حادیث کے یاد کرنے میں استعال کیا جس کی چیرت انگیز مثالیں کتابوں میں موجود ہیں۔

[۲] حفاظت حدیث کیلئے دوسراطریقہ باہمی مذاکرہ: حضرات صحابہ اُ کو جب کسی حدیث کاعلم ہوتا تو ایک دوسرے کو پہنچاتے ، آپس میں مذاکرہ کرتے ،اس جذبہ کواس تر غیبی روایت سے مزیدا جاگر کیا گیا۔

تَدارسُ العلمِ ساعةً من الليلِ خيرٌ من العلمِ ساعةً من الليلِ خيرٌ من العلمِ ساعةً من الليلِ خيرٌ من العلم المخضرساوقت بھی بوری رات کی عبادت سے بہتر ہے۔

[جامع بيان العلم، مشكوة ر ٥٢]

[۳] تیسراطریقه تعامل تھا، یعنی بیه جذبه ہر صحابی کے دل میں کار فرما تھا کہ وہ ہر سنت پڑمل کریں، اس سے بھی الفاظ ومعانی محفوظ رہتے ہیں۔

[۴] حفاظت حدیث کا اہم ترین ذریعہ کتابت حدیث تھا، بیشار صحابہ نے احادیث کو کریں طور پر محفوظ کیا۔

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ●

ضبط حدیث کی دوصورتیں ہیں:

(١) ضبط بالصدر، (٢) ضبط بالكتابة ـ

دور نبوی اور پہلی صدی میں حفاظت حدیث کا بڑا ذریعہ ضبط بالصدریعن کا بڑا ذریعہ ضبط بالصدریعن کا بڑا ذریعہ ضبط بالصدریعن کا در کرنا تھا گو کہ ضبط بالکتابة کا سلسلہ بھی رائے اور جاری تھا مگر عام طور پر حفاظت حدیث کا قوی ترین اور کا میاب ترین طریقہ حفظ کو اختیار کیا گیا۔ بلکہ صحابہ اور تابعین کے بالکل ابتدائی دور میں کچھا ختلا ف بھی رہا بعض کتابت حدیث کو جائز قر اردیتے ، اور بعض کر اہت و ممانعت کے قائل تھے ، جو حضرات ممانعت و کر اہت کے قائل تھے ، جو حضرات ممانعت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ سے منقول ہے :

لاتكتُبوا عنى غيرَ القرآنِ و من كتب عنى غيرَ القرآنِ فَلْيَمْحُه . قرآن كے علاوہ ميرى جانب سے مت لكھا كرو، اگركسى نے لكھا ہے تواس كومٹادينا جائے۔[مسلم، باب الثبت فى الحدیث ۲۲۹۸]
كتابت حدیث کے جواز کے دلائل ہے ہیں:

[۱] فتح مکہ کے سال ایک خزاع شخص نے قبیلہ کیثی کے ایک فرد کوتل کر دیا تھا، اس موقع پر نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے حرم کی حرمت و تعظیم کے

سلسله میں ایک خطبه ارشاد فرمایا تھا، اس وقت ایک یمنی شخص حاضر ہواا ورعرض کیا یارسول اللہ! به خطبه مجھے لکھ دیجئے ، آپ نے فرمایا:

أكتُبوا لِأبي شاه [بخارى باب كتابة العلم]

[٢] حضرت رافع بن خدیج رضی الله عنه فرماتے ہیں:

إِنَّا نَسمع مِنك أشِّياءَ أَفْنَكتبها قال فَاكتُبوا ولا حرج، مُع الزوائد الرام اها]

ہم آپ سے بہت سی چیزیں سنتے ہیں کیا ہم اس کولکھ لیں ،آپ نے ارشاد فرمایا کہ کھ لیا کرواس میں کوئی حرج نہیں۔

[س] قیّدوا العلم بالکتابة ، [منتخب کنزالعمال ۱۹ مر ۲۹] کھنے کے ذریعیلم کوقید کرلیا کرو۔

دونوں قسم کے دلائل سے جو تعارض نظر آر ہاہے علاء نے اس تعارض کے مختلف جوابات دیئے ہیں:

[1] ایک حدیث میں کتابت حدیث کی اجازت، اور دوسری میں میں میں عمانعت، ان دونوں کا تعلق الگ اللہ اشخاص سے ہے کہ جن کا حافظہ کم تھا ان کو حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے کتابت کی اجازت دی تھی، اور جن کا حافظہ کم نہ تھا بلکہ زیادہ تھا ان کو کتابت سے منع فر مایا تھا، تا کہ یاد کرنے کا اہتمام نہ چھوڑ دیں، کیونکہ بھی بھی لکھی ہوئی چیز گم بھی ہوجاتی ہے۔

اس کے معنی یہ ہوئے کہ خبر متواتر کی جمیت کو مانا گیا، کیونکہ خاص بغیر عام کے اور سم بغیر مقسم کے نہیں پائی جاتی، نیز قرآن مجید کا کلام اللہ ہوناکس بات سے ثابت ہوا؟ خود قرآن پاک سے تو نہیں، کیونکہ اس سے تو، تو قف الشی علی نفسہ لازم آئیگا، جس کا بطلان واضح اور بدیہی ہے، تولامحالہ قرآن پاک کا کلام اللہ ہونا حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمانے سے ثابت ہوا۔ اور وہ قول ہم تک خبر متواتر کے طور پر پہنچا کہ حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کلام کو، کلام اللہ کہا ہے۔ پس ثابت ہوا کہ قرآن مجید کا کلام اللہ ہونا خبر متواتر سے معلوم ہوا۔ لہذا اگر خبر متواتر جب نہیں ہوگا۔

جيت خبرمشهور

آیت کریمہ سے: قولہ تعالی ﴿ إِذْ اَرُسَلْنَا اِلَیُهِمُ اثْنَیْنِ فَکَذَّبُو هَا فَعَزَّزُنَا بِثَالِثٍ ﴾ اللیم الله بیجا گیا تا که خبر پخته موجائے، اس سے معلوم ہوا کہ جس چیز کے بیان کرنے والے تین آدمی ہوں وہ قابل ججت ہے اس سے خبر مشہور کی جیت ثابت ہوگئ۔

جحيت خبرعزيز

آيت كريمه عن : قوله تعالى ﴿ وَ أَشُهِدُوا ذَوَى عَدُلٍ مِّنكُمُ ﴾

[۲] ابتداء اسلام میں حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے کتابت سے منع فرمایا تھا کیونکہ وہ زمانہ نزولِ قرآن کا تھا، نزول کے ساتھ لکھنے کا انتظام کیا جاتا تھا، اگران ایام میں احادیث کو بھی اہتمام سے لکھا جاتا تو بوجہ ابتداء اسلام، قرآن وحدیث میں امتیاز مشکل ہوجاتا، لیکن جب قرآن ضبط ہوگیا اور التباس کا خطرہ کم ہوگیا تو پھر کتابت حدیث کی اجازت دیدی گئی۔خلاصہ یہ کہ ممانعت وقتی اور عارضی تھی۔

[۳] ممانعت کاتعلق کیجا لکھنے سے تھا، نہ کہالگ الگ لکھنے سے۔ [۴] نہی مقدم ہے اور اجازت کی روایت بعد کی ہے۔ غرض اسلاف میں ابتداءًا ختلاف رہا، کین بعد میں خلیفہ عادل حضرت عمر بن عبدالعزیزؓ کے دور خلافت میں کتابت کے جواز بلکہ استخباب پراجماع و اتفاق ہوگیا۔

جحيت خبر متواتر

حدیث کی جتنی بھی قتمیں ہیں وہ تمام قتمیں راویوں کی تعداد کے لحاظ سے یا تو متواتر ہوں گی یامشہور،عزیز ہوں گی یاغریب،لہذا جب ان چار قسم وہ علی کی جوشم بھی قسموں کی جیت ثابت ہوجائیگی تو ان چاروں کے تحت حدیث کی جوشم بھی آئیگی اس کی جیت ازخود ثابت ہوجائیگی۔

قرآن مجیدخودایک خبر متواتر ہے توجب قرآن پاک کی جیت کو مانا گیا تو

[سورۂ طلاق ۲] اس آیت کر بمہ میں شہادت کے مسئلہ کا بیان ہے کہ شہادت کے کیے دوآ دمی کا ہونا کافی ہے۔ اور ظاہر ہے کہ شہادت کی اہمیت روایت سے برٹھ کر ہے کیونکہ شہادت ایک الیمی چیز ہے کہ اس میں دوسروں پر الزام قائم کرنا ہوتا ہے اور دوسری بات بیا کہ شہادت کو قاضی کے سامنے آ کر بیان کرنا پڑتا ہے بخلاف روایات کے ، کہ ان میں بیہ با تیں نہیں ہوتیں ، لہذا جب دو آ دمیوں سے شہادت ثابت ہوسکتی ہے تو روایت کا دوآ دمیوں سے ثابت ہونا بطور دلالۃ النص بطریق اولی ہوگا۔

حجيت خبرواحد

ہے۔۔۔۔[ا] جیت خبرواحد، قرآن پاک سے یوں ثابت ہے کہ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿ إِنَّهُ لَقُولُ رَسُولٍ كَرِیْمٍ ﴾ [سورہ تورہ ہے اس اس اس بہنچایا آیت کریمہ میں فرمایا گیا ہے کہ قرآن کریم جبرئیل امین کے واسطہ سے پہنچایا گیا ہے جو کہ فردواحد ہے اس لحاظ سے قرآن مجید خبر واحد ہوا الہذا جب قرآن مجید حجت ہے تو خبر واحد بھی حجت ہے۔

لیکن اس پرشبہ بیہ ہوتا ہے کہ حضرت جبرئیل امین تو فرشتہ ہے ، فرشتہ پر انسان کو قیاس کرنا بیر قیاس قیاس مع الفارق ہے۔اس شبہ کے دوجواب ہیں: [الف] یہاں کلام ، نفس روایت میں ہے کہ ایک شخص کا کلام اور اس

کی روایت جحت ہے یا نہیں ، قطع نظر اس سے کہ راوی کس جنس کا ہے، تو حاملِ خبر ہونے کے لحاظ سے انسان وفرشتہ برابر ہیں۔

[ب] خبر واحد کے جمت ہونے کیلئے شرط بیہ ہے کہ راوی عادل ہو، تو جب راوی عادل ہو، تو جب راوی عادل ہو، تو جب راوی عادل ہوا تھ جب راوی عادل ہوا تو بمنز له فرشتہ ہوتا ہے تو خبر واحد کی جمیت قرآن پاک سے ثابت ہوگئی۔

کسس[۲] عموماً حضرات انبیاء علیهم السلام ایک ایک کرکے اپنی قوم کی طرف بھیجے گئے، ﴿ وَ لَقَدُ اَرُسَلُنَا نُوْحاً اللّٰی قَوْمِ اللّٰهِ انبیاء علیهم قوم کی طرف بھیج گئے، ﴿ وَ لَقَدُ اَرُسَلُنَا نُوْحاً اللّٰی قَوْمِ اللّٰهِ انبیاء علیهم السلام کوکلامی معجز فہیں ملا، یہ فقط حضور اکرم صلی اللّٰه علیہ وسلم ہی کی خصوصیت ہے، اسلئے اکثر انبیاء سابقین کی وحی کی نوعیت، ہماری حدیث کی طرح تھی، کہ معانی، حق تعالیٰ کی طرف سے نازل ہوتے تھے، ان معانی کو حضرات انبیاء علیهم السلام اپنے الفاظ میں بیان فرماتے، وحی متلوان برنہیں اترتی تھی، گویا کہ ہمارے دین کے ماسواتمام ادبیان کا دارو مدار خبر واحد پر ہے اس سے ثابت کہ ہمارے دین کے ماسواتمام ادبیان کا وارو مدار خبر واحد پر ہے اس سے ثابت ہوا کہ خبر واحد جت ہے تب تو ان کی قوم کوان کی بات تسلیم کرنالازم ہوا۔

اشكال

حضرات انبیاء علیهم السلام کی خبر کے معتبر ہونے کا منشاان کی نبوت تھی،

ر هبرعلم حدیث

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

لَهٰذَا غَيْرِ نِي كُونِي بِرِقَياسٌ كُرِنا كَيْسَصِيحُ مُوا؟

جواب

ارشاد بارى تعالى ہے كه ﴿ وَ النَّجُم إِذَا هُوىٰ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمُ وَمَا غَوى وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوى إِنْ هُوَ إِلَّا وَحُيٌّ يُّوحي ﴿ [سورهُ جُم] ال آیت شریفیہ میں حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے قول کے ججت ہونے کا دارومداراس بات پررکھا گیاہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم میں نہ ضلالت ہے اور نه غوایت، اور نه اتباع هویٰ ہے، چونکه خاص طور سے حضرات انبیاء کیہم السلام ان نتیوں عیوب سے مبرا اور منزہ ہوتے ہیں، اسلئے ان کا قول قابل جحت ہے،غرض اعتبارخبر کا مدارانھیں صفات ثلاثہ پر ہےاورغیر نبی ایسے ملتے ہیں جوضلالت وغوایت وانتاع ہواسے منزہ ہوتے ہیں گوکم کیوں نہ ہوں ،للہذا خبرواحد کے بارے میں غیرنبی کو نبی پر قیاس کیا جاسکتا ہے، یہ ایک جزئی حثیت ہے باقی بدالگ بات ہے کہ حضرات انبیاء علیهم السلام معصوم ہوتے میں ان سے غیر نبی کی کیا نسبت ہوسکتی ہے۔عیاں راچہ بیاں

﴿ الْمَدِينَةِ يَسُعٰى قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَا يَاتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ الْمَدِينَةِ يَسُعٰى قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَا يَاتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ الْمَدِينَةِ يَسُعٰى قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَا يَاتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخُرُجُ إِنِّى لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفاً يَّتَرقَّبُ ... ﴾

علوم نبوی کی قشمیں

حضرت شاہ ولی اللہ محدث دہلوگ نے علوم نبوی صلی اللہ علیہ وسلم کی بنیادی طور پر دوشتم کی ہے: ا.....وحی متلو ۲.....وحی غیر متلو، پھروحی غیر متلوکی دوشتم کی ہے:

ہے۔ اور چہائی سے ہے، اور جو کم اتعلق پیغام رسانی سے ہے، اور چو کم شرعی کے طور پر آپ نے ارشاد فر مایا، یہی روایات شریعت کی بنیاد ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔۔[۲] دوسری قسم وہ ہے جو بیغام رسانی اور حکم شرعی کے طور پر نہیں بلکہ امور دنیوی اور رائے کے طور پر وار دہوئی ہیں، احادیث کا میہ حصہ استفادہ کیلئے ہے، ان پر عمل نہ کرنے سے کوئی مؤاخذہ نہ ہوگا۔

۔ برزخ،میدان حشر، جنت کے احوال وواقعات،فرشتوں اور ذات باری سے متعلق مدالہ ۔۔

تعلق روایات۔

[ب] احکام شرعیه یعنی عبادات، وقتی نظام سے متعلق روایات، ان میں بعض روایات کاتعلق وحی سے ہے اور بعض کا تعلق آپ کے اجتهادات سے۔
[ج] اخلاقیات ومصالح پر شتمل روایات: جن کا تعلق کسی وقت متعین سے نہیں، بلکہ مفیدا ور مضرنتائج کا ذریعہ بنتی ہیں۔

[د] اعمال کے فضائل اور کرنے والوں کی منقبت سے متعلق روایات۔ دوسری قسم ان روایات کی جواحکام کے طور پڑ ہیں بلکہ دنیوی امور میں رائے کے طور پر آپ نے ارشا دفر مائی ،اس کے تحت پانچ طرح کی روایات آتی ہیں:

[الف] وہ روایات جن کا تعلق علاج اور طب سے ہے۔ [ب] وہ روایات جن کا تعلق آپ کی عادات مبار کہ سے ہے یعنی جس کوآپ نے بطور عادت کیا ہے نہ کہ بطور عبادت۔

جی وہ روایات جن کا تعلق مروجہ عام باتوں سے ہو، یعنی جس شم کی بات سبھی لوگ کیا کرتے ہوں، مثلاً ام زرع کا واقعہ، خرافہ کا واقعہ۔

[د] وه روایات جن کا تعلق ہنگامی حالات و واقعات سے ہو، یعنی ان روایات میں کوئی ایسی بات فدکور ہو جس کا تعلق اس وقت کی خاص مصلحت سے ہو، تمام امت پروه لازم نہ ہو، جیسا کہ جنگ بدر میں آپ نے ایک خاص مقام پراتر نے کا تکم دیا، مگر خباب بن منذر کے مشورہ کی بنا پرخود آپ نے تھم بدل دیا۔

[6] کوئی خاص تھم اور فیصلہ: جیسا کہ حضرت ماریہ قبطیہ کے چپازاد بھائی پرتہمت کی بناپرآپ نے قبل کا تھم دیا، حضرت علی کی تحقیق سے معلوم ہوا کہ وہ تو مجبوب ہے، لہذا آپ نے تھم فر مایا کہ قبل مت کرو۔

[رحمة الله الواسعه ۱۲ ۱۳۳]

صورت ہوگی یا تو دوسے زائد ہوگی یا دو ہوگی یا ایک، اگر دوسے زائد ہوتو اس کو مشہور کہیں گے، اور اگر دو ہوتو اس کوعزیز ،اور اگر ایک ہوتو اس کوغریب کہیں گے، تو چونکہ تعدا دروا ق کی یہی چارصورت ممکن ہے اسلئے چارتیم ہوگ۔ ذیل میں ہرایک کی تعریف اور اس کے اقسام ذکر کئے جاتے ہیں:

متواتر

وہ حدیث ہے جس کے بیان کرنے والے ہرزمانے میں اس قدر ہوں کہان کا اجتماع علی الکذب عادةً ناممکن اور محال ہو۔

تواتر کی بنیادی طور پردوشمیں ہیں:تواتر فعلیتواتر قولی۔
عام طور پر اہل اصول نے متواتر کی یہی دوشم ذکر کی ہے، متواتر لفظی اور متواتر معنوی ، متداول کتب میں یہی دوشم مذکور ہیں، البتہ علامہ انور شاہ کشمیر گئے نے متواتر عملی اور متواتر طبقہ کا اضافہ فرمایا ہے۔

تواتر فعلى

حضورا کرم صلی الله علیہ وسلم کا وہ تعلی جس کو اہل اسلام نے ہر دور میں کیا ہوا ورمسلمانوں کے ایک جم غفیر نے اس کو ہر دور میں اپنا دستور عمل بنا کرعمل ہوا ورمسلمانوں کے ایک جم غفیر نے اس کو ہر دور میں اپنا دستور عمل بنا کرعمل ہوا درسے اسم فاعل بمعنی کسی چیز کا وقفہ کے ساتھ ایک دوسرے کے پیچھے آنا، پے در پڑ آنے والا،

اقسام حدیث کابیان

حدیث کی جتنی قسمیں ہیں، طالب حدیث کیلئے ان تمام اقسام کو شخضر رکھنا نہایت ضروری ہے، کیونکہ اس کے بغیر حدیث میں مہارت وبصیرت حاصل نہیں ہوسکتی، اس لئے ذیل میں اعتباری فرق کے ساتھ حدیث کے اقسام ذکر کئے جاتے ہیں۔

باعتبار تعدا درواة

حدیث کی بنیادی اوراساسی تقسیم، تعدادروا ق کے اعتبار سے کی جاتی ہے کہراو یوں کی تعداد کے اعتبار سے حدیث کی دوسم ہے:

[ا].....غبر متواتر [۲].....غبر واحد

پھرخبروا حد کی تین قشم ہے:....مشہور....عزیز....غریب۔

بعض حضرات نے اس کی تقسیم اس طرح کی ہے کہ تعدا دروا ۃ کے اعتبار سے حدیث کی حیارتشم ہے:

.....متواتر.....غریز.....اور....غریب

اوراس کی وجہ حصر یہ بیان کی ہے کہ راویوں کی تعداد کسی طبقہ میں محدود ہوگی یا غیر محدود ہے تواس کی تین

اس حدیث کوستر سے زائد صحابہ نے قال کیا ہے اسی طرح مسح علی اُخفین ، شفاعت، واقعهٔ معراج ،انگلی سے یانی نکلنے کی روایت،حضرت قیادہ کی آنکھ واپس لوٹانے کی روایت وغیرہ کواہل اصول نے متواتر شار کیا ہے ۴

وہ حدیث ہے جس کے الفاظ مختلف ہوں مگر رواۃ نے اس کے معانی و مطالب کی حفاظت کی ہولیعنی ان مختلف الفاظ سے کوئی ایک ہی بات ثابت ہوتی ہوجیسے دعاء کے وقت ہاتھ اٹھانے کی روایات۔

خبر واحداس حدیث کو کہتے ہیں جومتواتر نہ ہولینی جس کے رواۃ کی تعداد حد تواتر تک نه پیچی ہو۔

اس کی تین قتم ہے:....مشہور....عزیز....غریب

جس روایت کے راوی ہر طبقہ میں دو سے زائد ہوں البنتہ حد تواتر سے کم ہوں یااس ہے علم بدیہی یقینی حاصل نہ ہوتا ہو 🐣

میں لاتے رہے ہوں ، کہان کا تو افق علی الكذب محال ہو۔

جیسے صوم وصلوٰ ۃ سے متعلق آپ کے افعال ،اسی طرح یوم عرفہ میں ظہرو عصر کوایک ساتھ پڑھنا،مغرب وعشاء کوجمع کرنا، بیسنداً متواتر نہیں،مگر ہر زمانہ میں اس پڑمل جاری ہے۔

تواترقولي

سرور کا ئنات صلی الله علیه وسلم کے وہ فرمودات جوتواتر سے ثابت ہوں یعنی اس کے نقل کرنے والے ہر زمانہ میں اس قدر ہوں کہ ان کا توافق علی الكذب محال ہو۔

تواتر قولی کی دوشم ہے:

تواترلفظي

وہ حدیث ہے جس کے رواۃ نے اس کے الفاظ و معانی دونوں کی حفاظت کی ہویعنی دونوں متواتر ہوں ،اس کا دوسرانام قدر مشترک ہے۔ [تدريب الراوي ٢٨ ١٨٠]

جيسے: ' من كذب على متعمِّداً فليتبوّ مقعدة من النار "جس نے میری طرف عداً کذب کی نسبت کی اس کوچاہئے کہ اپنا ٹھکانہ جہنم بنالے۔

کے علوم الحدیث[ڈاکٹرضجی بیروت] چ مشہور،اسم مفعول ہے،شہرت الامرہ ماخوذہے، بیاس وفت کہاجا تاہے جبکہ کوئی شخص کسی کا م کو

یعنی اس میں پیضروری نہیں کہ راویوں کا سلسلہ از اول تا آخریکساں ہو، اورکسی طبقہ میں زائد نہ ہوئے ہوں، بلکہ صرف پیضروری ہے کہ ہر طبقہ سے زائد ضرور ہوں خواہ کسی طبقہ میں زائد بھی ہو گئے ہوں البتہ حد تواتر تک نہ پہنچے ہوں۔ مثال: المسلم من سلم المسلمون من لسانِه و يدِه ، [بخاري ٢] جس کے معنی بہنے اور پھیلنے والا ، ایک قول کے مطابق دونوں مترادف ہے، دوسرے قول کے مطابق بیخاص ہے بایں طور کہ ستفیض وہ ہے جس کے قال کرنے والے کی تعداد شروع سے لے کر آخر تک برابر ہو،مشہور میں یہ قید نہیں،بعض حضرات کے بقول ایسی حدیثوں کوبھی مشہور کہددیا جاتا ہے جن پر حدیث مشہور کی تعریف صادق نہیں آتی ، مگر چونکہ کسی خاص طبقہ کے نز دیک وہ معروف اورزبان زدہوجاتی ہےاس کئے مشہور کہد یا جاتا ہے۔

عزيا

وہ حدیث ہے جس کے راوی ہر طبقہ میں دو ہوں ، لیعنی ہر طبقہ میں کم از کم دو ہوں ،اگرچہ وہ حدیث کتنے ہی طرق سے مروی ہو۔

میر حدیث حضرت انس اور حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہما سے مروی ہے،
پھر حضرت انس سے قیادہ اور عبدالعزیز نے نقل کیا ہے اور حضرت قیادہ سے
حضرت شعبہ اور حضرت سعید نے نقل کیا ہے اور عبدالعزیز سے اساعیل بن
علیہ نے پھر ہرایک سے ایک ایک جماعت نے روایت کیا ہے۔

غريب

وہ حدیث ہے جس کی سند میں کسی جگہ صرف ایک راوی ہو،خواہ ہر طبقہ میں ایک ہی راوی ہویا کسی طبقہ میں زائد بھی ہوگئے ہوں ،اس کوفر دبھی کہتے ہیں ۔۔۔

مثال: الایمان بضع و سبعون شعبة ،ﷺ سلمٹریفہ ہے۔ اس کوصرف حضرت ابو ہرریہ رضی اللّٰدعنہ نے اور ان سے صرف ابو صالح نے اورابوصالح سے صرف عبداللّٰہ بن دینار نے فقل کیا ہے۔

متابعت

ایک راوی اگر دوسرے راوی کی طرح ہی روایت نقل کرے تو اس کو متابعت ہوجائے تو اس سے حدیث کی تائید ہوتی ہے۔

ﷺ لغتۂ صفت مشبہ ہے جمعنی نادر ہلیل الوجود ، دوسرامعنی قوی طاقت ور ہے۔ پیلغۃ صفت مشبہ ہے جس کے معنی منفر داوروطن سے دور ہونے کے ہیں اس کی دوسم ہے .غریب مطلق ،غریب ،غریب بشک

متابعت اورتائيد دوطرح ہوتی ہے:

متابع

وہ حدیث کہلاتی ہے جس کوراوی لفظ ومعنی دونوں اعتبار سے، یا صرف معنی کے اعتبار سے کسی حدیث کے موافق نقل کرے اور وہ دونوں حدیث ایک ہی صحابی سے مروی ہو۔

شابد

وہ حدیث ہے جس کوراوی لفظ و معنی دونوں یا صرف معنی کے اعتبار سے حدیث غریب کے موافق نقل کرے، مگر دونوں حدیث الگ الگ صحابی سے مروی ہو۔

اقسام حديث باعتبارا حوال رواة

راویوں کے احوال وصفات کی بناپر حدیث کی فنی حیثیت متعین ہوتی ہے
اگر مطلوب ومقصود اوصاف پائے جاتے ہوں تو حدیث مقبول ، اور اگر مطلوب
صفات موجود نہ ہوں تو حدیث مردود وضعیف کہلاتی ہے ، نیز مقبول ہونے کے
اوصاف بھی کیساں اور برابر نہیں ہوتے ، نیز مطلوبہ اوصاف نہ پائے جانے
کے مختلف اسباب ہوتے ہیں اس بناپر راویوں میں پائی جانے والی صفات و
احوال کے اعتبار سے سول قسم ہوجاتی ہے:

پ....حسن نغيره چ.....موضوع چ.....متروک چ.....شاذ

المسيداء صحیح لذاتہ: وہ حدیث ہے جس کے بھی راوی عادل، کامل

الضبط ہوں،اس کی سند متصل ہو،اوروہ حدیث معلل وشاذ نہ ہو۔

عادل و شخص ہے جو پانچ عیوب [کذب، تہمت کذب فیق، جہالت، بدعت اسے خالی اور محفوظ ہو۔

اورتام الضبط وہ شخص ہے جو پانچ عیوب [فخش غلط، غفلت، وہم،

مخالفت ثقه، اورسوء حفظ] سيمحفوظ هو_

متصل کا مطلب بیہ ہے کہ سند میں کوئی راوی حچھوٹا ہوا ہو۔ معلل : جس میں علت نہ یائی جاتی ہو، یعنی کوئی ایسامخفی اور پوشیدہ عیب

> ب جس کواہل فن ہی سمجھ سکتے ہوں۔

شاذ: ثقه راوی کی روایت اوثق راوی کی روایت کے خلاف ہوتو اس ثقه روای کی روایت کوشاذ کہیں گے۔

کسیراوی میں ضبط کی ہے۔ ۔۔۔۔[۲] حسن لذاتہ: وہ حدیث ہے جس کے سی راوی میں ضبط کی کمی ہو، البتہ سی لذاتہ کی باقی شرطیں موجود ہوں۔

لعنی صحیح لذاته کی پانچ شرط [راوی کا عادل ہونا، روایت کامتصل ہونا، معلل وشاذ نہ ہونا] پائی جائیں، البتہ پانچویں شرط تام الضبط مفقو د ہو بلکہ اس کی یا دداشت کمزور ہو، ہاں اس قدر بھی کمزور نہ ہو کہ غیر معتبر قرار پائے۔

سے ہے۔ اور حسن کی شرطوں ہے۔ میں سے بھی ،یا کوئی ایک شرط نہ یا ئی جائے۔

یعنی کسی حدیث کے تیجے ہونے کیلئے جوشرائط مٰدکور ہوئیں ان میں سبھی یا بعض نہ پائی جائے۔

ہیں گے جو متعدد کے اس حسن لذاتہ حدیث کو کہیں گے جو متعدد سندوں سے منقول ہو۔

یعنی وہ حدیث جوراوی کے خفیف الضبط ہونے کی بنا پر صحیح ہونے کے بجائے حسن لذاہم ہو، جس بجائے حسن لذاہم ہو، جس حدیث کی سندوں کے ساتھ منقول ہو، جس سے اس راوی کے حفظ وضبط کی جو کمی تھی ،اس کی تلافی ہوگئ ہو، اس کو صحیح لغیر ہ اس بنا پر کہتے ہیں کہ اس پر صحت کا حکم دوسری سند کی بنا پر ہوا۔

ہواور متعدد سند کی بنا پراس کاضعف ختم ہو گیا ہو۔

حدیث ضعیف کے حسن لغیر ہ ہونے کیلئے شرط یہ ہے کہ اس کاراوی سیّن الحفظ ہویا مجہول ہویا مستور ہویا سند منقطع ہو، ایسی روایت چند سے منقول ہونے کی بنا پر حسن لغیر ہ بن جاتی ہے، لیکن اگر سبب ضعف، کذب، یا تہمت کذب یافسق ہوتو پھر تعدد طرق سے منقول ہونے کے بعد بھی وہ ضعیف ہی رہے گی۔

ہوجومتہم بالکذب ہو۔

ہو، مگراس کی وہ مدیث ہے جس کا راوی ثقہ ہو، مگراس کی وہ روایت، اوْتَق وار نِحِ راوی، یا چند ثقہ راوی کی روایت کے خلاف ہو۔

ر هبرعلم حدیث

که برخض کومعلوم نه ہوسکے، بلکہ اہل فن ہی اس سے واقف ہوسکیں۔ اسس[۱۳] مضطرب: وہ حدیث ہے جس کی سندیا متن میں اس قسم کا تضاد واختلاف ہو کہ ان میں نہ تو ترجیح دینا ممکن ہوا ور نہ ہی تطبیق۔

لینی جو حدیث مختلف الفاظ میں منقول ہواور سندیامتن میں وہ اختلاف یا توایک ہی راوی کے بار بار بیان کرنے سے ہو متعدد راوی کی روایت میں ، پھروہ اختلاف اس طرح کا ہو کہ سی طرح دونوں کے درمیان تطبیق دینا ، یا کسی ایک کوراج قرار دینا ممکن نہ رہے ، اگر تطبیق یا ترجیح ممکن ہوجائے تو پھراس کو ضعیف نہیں کہیں گے۔

کسند یا متن میں تقدیم و این ہے جس کی سند یا متن میں تقدیم و تاخیر ہوگئی ہو۔ تاخیر ہوگئی ہو۔

جیسے "حتی لاتعلم شماله ما تنفق یمینه "کے بجائے "حتی لاتعلم یمینه ما تنفق شماله " ہوگیا۔

ہے۔۔۔۔۔[1۵] مصحف: وہ حدیث ہے جس میں ایک حرف کسی اور کرف کسی اور کرف کسی اور کرف کسی اور کرف کسی اور خرف کسی اور فقطہ سے بدل جائے ۔ مثلاً مراجم سے مزاحم ہوجائے۔

کہ[۱۲] مدرج: وہ حدیث ہے جس میں کسی جگہ راوی نے کوئی افظ یا جملہ اس طرح بڑھادیا ہوکہ سننے والا اس کو حدیث کا ہی حصہ مجھتا ہو۔

' ثقه کی زیادتی معتر ہوتی ہے،البتہائیی زیادتی اورمخالفت جس کوقبول کرنے میں اوثق یا چند ثقه راوی کی روایت کورد کرنا لازم آتا ہو،اس کوشاذ کہیں گے۔

ہومگراس کی ایسے اول محفوظ: وہ حدیث ہے جس کا راوی اوثق ہومگراس کی روایت کے خلاف کسی ایسے راوی نے روایت کی ہوجوضبط وا تقان میں اس سے کمتر ہو۔

گویا حدیث محفوظ حدیث شاذ کا بالمقابل ہے۔

ہو،اورکسی تقہ منکر:وہ حدیث ہے جس کا راوی ضعیف ہو،اورکسی تقہ ومقبول راوی کی روایت کے خلاف نقل کی ہو۔

ان معروف: ثقه راوی کی وه روایت جوضعیف راوی کی روایت کےخلاف ہو۔

گویا معروف کا بالمقابل منکر اور منکر کا بالمقابل معروف ہے، اسی طرح محدثین کی اصطلاح میں وہ حدیث بھی منکر کہلاتی ہے جس کا راوی فاحش الغلط ہویا کثیر الغفلت ہویافسق و بدعت کا مرتکب ہو۔

ہولیکن اس کے ۔۔۔۔۔[17] معلل: وہ حدیث ہے جس کی سند بظا ہر سیحے ہولیکن اس کی سندیا متن میں کوئی الیسی پوشیدہ خامی ہو کہ اس کو ما ہرفن ہی سمجھ سکتا ہو۔
لیمنی کسی راوی نے وہم ونسیان کی بنایر کوئی ایسار دوبدل یا اضافہ کر دیا ہو

....[۲] مسند

وہ حدیث ہے جوسنداً متصل بھی ہواوراس کی نسبت حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم تک کی گئی ہو۔

حدیث کے مسند ہونے کیلئے جمہور کے نزدیک دوباتوں کا ہونالازم ہے ایک بیر کہ وہ مرفوع ہواور دوم بیر کہ وہ متصل السند ہو، ان دونوں قید کے بغیر وہ مسند نہ کہلائے گی، اس کے برخلاف خطیب بغدا دی ہر متصل السند کومسند کہتے ہیں، گویا ان کے نزدیک حدیث متصل کا بیر مترادف ہے اس لحاظ سے صحافی کی موقوف روایت اور تابعی کی مقطوع روایت کو بھی مسند کہہ سکتے ہیں۔ شہر سے محم : حسب حالات روا قالس پر صحت وضعف کا تھم ہوگا۔

.....[۳] منقطع

وہ حدیث ہے جس کی سند کے درمیان سے ایک یا چندراوی محذوف ہوں،البتہ مسلسل محذوف نہ ہوں بلکہا لگ الگ۔

اس کامعنی سند کامتصل نه ہونا، راوی کا نام مذکور نه ہونا۔ از روئے لغت ہراس حدیث کومنقطع کہہ سکتے ہیں جس کی سند متصل نہ ہو، اس لحاظ سے

رادی کے حذف ہونے نہ ہونے کے اعتبار سے حدیث کی قشمیں

حدیث کے بیان کرنے کی دوصورت ہوتی ہے بھی تو راوی اور محدث اس حدیث کے بیان کرنے کو کرکرتے ہوئے الفاظ حدیث نقل کرتا ہے اور کبھی کسی بھی وجہ سے ایک یا چند یا سبھی راویوں کو حذف کر دیتا ہے ، اسی وجہ سے دیکھا جاتا ہے کہ سند سے کوئی راوی ساقط ہے یا نہیں ، اس سقوط اور عدم سقوط کے اعتبار سے خبر واحد کی سات قسمیں ہوجاتی ہیں۔

ه....مند ه....مند ه....مند ه....مند ه....مناد ه....معلق ه....معلق ه....مرسل ه....مرسل ه....مرسل

.....[ا] متصل

وہ حدیث ہے جس کی سند میں ہر راوی مذکور ہو، کوئی راوی محذوف اور قط نہ ہو۔

عدم سقوط کو اتصال سند کہتے ہیں، فنی حیثیت سے راویوں کے حالات

غیر متصل السند حدیث کی تمام صورتیں (معلق ،مرسل ،معصل وغیرہ) اس میں شامل ہوں گی اور ہرایک کو مقطع کہہ سکتے ہیں، گویا اس استعال کے اعتبار سے بیا یک مقسم ہوگی اور معلق مرسل وغیرہ اس کی قسیم بن جائیگی جبکہ مذکورہ تعریف کے لحاظ سے معلق وغیرہ منقطع کی قسیم ہے۔

.....[سم] معلق

وہ حدیث ہے جس کی سند کے شروع سے ایک یا زیادہ راوی محذوف ا۔۔۔

اس طرح راوی کے نام چھوڑنے کو تعلیق کہتے ہیں، بصورت تعلیق راوی کے نام چھوڑنے کی تین صورت ہوتی ہے:

استبهی توراوی ،سند سے صرف پہلے ایک راوی کو

هبهمی ایک سےزائد کو

جبیبا کہ امام بخاری ٹیے بخاری شریف میں معلق روایات نقل کی ہیں جو تا دوسنا کی کے نام میں مشہور بیاں

تعلیقات بخاری کے نام سے مشہور ہیں۔

خیال رہے کہ مشکلوۃ شریف میں صرف صحابی کا نام مذکور ہے باقی سند محذوف ہے پھر بھی اس کی روایات کو معلقات میں شارنہیں کریں گے کیونکہ

معلق ان روایات کو کہتے ہیں کہ جن کوراوی اپنی سند سے قل کرتے ہوئے سند حذف کردے جبکہ مشکلوۃ میں مؤلف نے اپنی سند سے روایت نقل نہیں کی بلکہ کتب احادیث سے انتخاب کر کے جمع احادیث کا کام کیا ہے اس لئے اس کو معلقات میں شارنہیں کیا جاتا۔

....[۵]معضل

وہ حدیث ہے جس کی سند میں ایک سے زائدراوی پیٹے در پیٹے محذوف ایل۔

الاعضال کا اسم مفعول ہے جس کے معنی تھکا دینا، مناسبت یہ ہے کہ مسلسل دو کے محذوف ہونے یا نہ ہونے کے فیصلہ کرنے میں محدث در ماندہ ہوجا تا ہے، تھک جاتا ہے اس کئے اس کو معصل کہتے ہیں۔
الفرالا مانی صر 199۔ وعلوم الحدیث صر 201۔

معصل اور معلق کے درمیان قدر نے فرق ہے:

اسساگرابتداء سند سے مسلسل دو، یا دو سے زائدراوی محذوف ہوں تو ا

اس کومعصل اور معلق دونوں کہیں گے۔

ه.....اور اگر درمیانِ سند سے مسلسل دویا دو سے زائد راوی حذف ہوں تواس کو علق نہیں کہیں گے۔

پ....اور اگر ابتداء سند سے صرف ایک راوی محذوف ہوتو اس کو

معصل نہیں کہیں گے۔

....[۲] مرسل

وہ حدیث ہے جس کی سند کے آخر سے راوی محذوف ہو۔

یعنی تابعی کے بعد کاراوی محذوف ہو،اس طرح حذف کرنے کوارسال کہتے ہیں، تابعی مثلاً سعید بن المسیب بعد کے راوی کوحذف کرکے یوں کہیں: قال رسول اللّه صلی اللّه علیہ وسلم۔

اگر تاریخ وغیرہ سے معلوم ہوجائے کہ فلاں صحابی نے بیروایت براہِ راست نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے نہیں سنی ہے بلکہ سی صحابی سے سن ہوگی مگر بیان روایت کے وقت انہوں نے صحابی کا نام حذف کر دیا، تو بیمرسل کہلاتی ہے، مرسلِ صحابی کا بالا تفاق معتبر ہے، لأن الصحابیة کلھم عدول ،

صحابہ کے علاوہ تابعی، تنع تابعین اگر مرسل بیان کریں تو عندالاحناف و المالکیہ مطلقاً مرسل روایت معتبر ہے بشر طیکہ وہ تابعی ہمیشہ ثقہ ہی سے روایت نقل کرتا ہو، عندالشوافع اگراس کی تائیدی روایت مل جائے تو معتبر ورنہیں۔

....[ک] مدلس

وہ حدیث ہے جس کی روایت میں راوی نے شیخ یا شیخ اشیخ کے نام وغیرہ

کواس طرح حذف کردیا ہوکہ مذکور شیخ سے ہی سننے کا وہم ہوتا ہو۔

یہ میم مضموم اور لام مشد دمفتوح کے ساتھ اسم مفعول ہے، تدلیس مصدر ہے، جس کا معنی بیچ کے عیب کو چھپانا، رات کی تاریکی کو دَلس کہتے ہیں چونکہ مدلس حذف راوی کے ذریعہ اس کے عیب کو چھپا تا ہے اس بنا پر اس کو مدلس کہتے ہیں، اس کے اقسام اور حکم کیلئے ملاحظہ ہو:

شرح نخبة الفكر صفحه ٢٦ ـ تدريب صفحه ١٣٣٧ ـ فتح المغيث ١٩٣٨ ـ

منتهائے سند کے اعتبار سے حدیث کی تقسیم

راوی جس روایت کوفل کرر ہا ہے ظاہر ہے اس روایت کا تعلق کسی نہ کسی ذات سے ہوگا اور اس روایت کے الفاظ کسی نہ کسی شخصیت سے منسوب ہوں گے، تو نسبت اور سند کی انتہاء کے اعتبار سے حدیث کی تین قسم ہو جاتی ہے:

.....مرفوعموقوفمقطوع

حدیث مرفوع

وہ حدیث جس کی نسبت، حضورا کرم سلی اللہ علیہ وسلم کی طرف کی گئی ہو۔ تعریف کا نچوڑ یہ ہے کہ جس چیز کو نبی اکرم سلی اللہ علیہ وسلم کی طرف منسوب کر کے بیان کیا جائے ،نسبت کرنے والاخواہ صحابی ہویا تابعی، یاان

کے بعد کے لوگ، نیز اس کی سند کمل مذکور ہو، یا ناقص، یا بالکل محذوف ہو، بہر صورت اس کومر فوع کہیں گے اور آپ کی طرف نسبت کر کے بیان کرنے کو رفع سے تعبیر کرتے ہیں، اس کے اقسام و تفصیل کیلئے ملاحظہ ہو: تذریب الراوی، ج: اص: ۱۸۵۔ علوم الحدیث ص: ۱۳۲۔

حديث موقوف

موقوف وه روایت ہے جس کی نسبت کسی صحابی تک پہنچتی ہو۔

یعنی ہر وہ خبر اور روایت جس میں کسی صحابی کا کوئی قول ، یا کوئی مل ، یاان

گی تقریر فرکور ہو،اوراس روایت کی سنداس صحابی تک ہی پہنچتی ہو، جیسے کہا جاتا
ہے حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ نے فرمایا ، یا فلاں صحابی نے بیمل کیا ، یااس
کے سامنے وہ مل ہوا اور وہ خاموش رہے ، یا ابن عباس سے موقو فاروایت ہے ،
یاان پر بیاحدیث موقوف ہے ، اس لحاظ سے اس کی بھی تین قسمیںموقوف
قولیموقوف فعلیموقوف تقریریہوجاتی ہیں ۔ [تدریب ار ۴۸۴]

مقطورع

وہ روایت ہے جس کی نسبت کسی تا بعی کی طرف کی گئی ہو۔ یعنی جس خبر وروایت میں کسی تا بعی کا قول یاان کاعمل یاان کی تقریر مذکور

ہو۔ اس کے حکم میں تفصیل ہے ملاحظہ ہو: علوم الحدیث صفحہ ہم تا ۵۱۔ تدریب ہموا۔

حديث قدسي

حدیث کی ایک قتم اور ہے جوذات باری کی طرف نسبت کے اعتبار سے بیان کی جاتی ہے اور وہ ہے حدیث قدسی جس کی تعریف ہیہ ہے:

وہ حدیث جس کوحضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم ،خداوند قدوس کی طرف نسبت کرتے ہوئے بیان فرمائیں۔

فرق

حدیث قدسی اور قرآن مجید کے درمیان کی لحاظ سے فرق کیا جاتا ہے:

جسس قرآن کے الفاظ ومعانی دونوں منجانب اللہ ہیں جبکہ حدیث قدسی
میں الفاظ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ہوتے ہیں اور معانی منجانب اللہ۔

جسس قرآن کے ثبوت کیلئے تواتر شرط ہے جبکہ حدیث قدسی میں بہ شرط نہیں۔

نہیں بلکہ بھی الہام وخواب کے ذریعہ بھی القاء ہواہے۔

حاملين حديث كاقسام

ہرفن سے خصوصی ربط و تعلق اور گہری مناسبت رکھنے والے افراد کو مخصوص خطاب والقاب سے نواز اجاتا ہے، اسی طرح فن حدیث سے گہری مناسبت اور مخصوص اشتغال رکھنے والے پاک طینت حضرات کیلئے مخصوص القاب ہیں، جن میں سے چند کا ذکر یہاں کیا جاتا ہے۔

طالب حديث

متعلم حدیث کو کہتے ہیں۔

تحدث

وہ شخ واستاد جوعلم حدیث کے درس و تدریس سے ہی زیادہ اشتغال رکھے، یہ تعریف حضرت مولا نااشرف علی تھانوی سے منقول ہے، قدیم زمانہ میں محدث کا خطاب اس شخص کو دیا جاتا تھا جوحدیث کے الفاظ ومعانی دونوں پر دسترس رکھتا ہو، اور روایات نیز راویوں کے بڑے حصہ سے واقف ہو، صرف الفاظ حدیث کا ناقل نہ ہو۔

حدیث کی چند شمیں

حديث کي چند قتمين اور بين اوروه په بين:

..... مسلسلمعنعنمؤنّن

مسلسل

مسلسل اس حدیث کو کہتے ہیں،جس کے تمام راوی ایک لفظ کے ساتھ نقل کریں، یانقل کریں، یانقل کرتے وقت ہرایک راوی کی قولی یا فعلی دونوں کیفیت، یا صرف قولی یاصرف فعلی کیفیت کیساں ہو۔
تفصیل کیلئے آئینۂ اصول حدیث حصہ دوم ص: ۱۲۸ ملاحظہ ہو۔

تعنعن

وه حديث ہے جس كى سندميں "عن فلان عن فلان " ہو۔

مؤنن

وہ حدیث ہے جو" اَنَّ" کے ذریعہ بیان کی جائے ۔ مثلاً راوی کھے حدثنا فلان انَّ فلاناً قال أو جاء ،

حافظ

وہ محدث جس کو کم از کم ایک لا کھا حادیث مع الاسانید محفوظ ہوں۔ بعض نے کہا کہ دس ہزار یاد ہو۔، امام ابن شہاب زہری فرماتے ہیں کہ حافظ الحدیث ہر چالیس سال میں پیدا ہوتا ہے، ممکن ہے بیا پید دور کے لحاظ سے فرمایا ہو۔

حفاظ حدیث کی بڑی تعداد گذری ہے، علامہ ذہبی نے تذکرۃ الحفاظ نامی کتاب میں ان سجی حضرات کا تعارف کرایا ہے۔

جحرت

وه محدث جس كوتين لا كها حاديث ياد هول _

چنانچہ امام بخاری ،علی بن مدین ، یجی بن معین ،عبداللہ بن مبارک ،امام ابویوسف ،ان حضرات کے متعلق آتا ہے کہ صرف موضوع تین لا کھا حادیث یا تھیں ۔

حاتم

وہ محدث جس کوممکنۃ الحصول تمام احادیث مع الاسانید اور مع احوال الرواۃ یاد ہوں۔ امام احمد بن منبل اور امام ابوزرعہ کے متعلق بیان کیا جاتا ہے کہ سات لا کھا حادیث اسی طرح حفظ تھیں۔

تعريف صحابي

الصحابى من لقى رسول الله صلى الله عليه وسلم مؤمنا به و مات على الاسلام يا يول كهيّ:

الأصحاب هم المؤمنون الذين أدركوا صحبة النبي صلى الله عليه وسلم مع الايمان و ماتوا به .

بعض حضرات نے "ولو تخللت ردہ علی الاصح "کی بھی زیادتی کی ہے ،کیونکہ ارتداد سے تھم صحابیت مستور ہوجا تا ہے پھراگر دوبارہ ایمان سے مشرف ہوجائے اور دوبارہ زیارت نبوی ہوجائے تو صحابی کہلائے گا،اگر اسلام قبول کرنے کے بعد زیارت نبوی کا موقع نہ ملا تو عندالاحناف اس کو صحابی نہیں گے۔

اصحاب اور صحابہ کے درمیان فرق میہ ہے کہ صحابہ خاص ہے اس کا اطلاق صرف ان حضرات کیلئے سے جو ایمان کی حالت میں زیارت نبوی سے مشرف ہوئے ہوں۔ اور میصحابی کی جمع ہے۔ اور اصحاب عام ہے جو کہ صاحب کی جمع ہے۔

تابعی کی تعریف

التابعي من لقى الصحابة مؤمناً و مات على الاسلام .

• پ متوسطین : وہ تا بعین جنہوں نے متوسط صحابہ اور تا بعین سے روایت اخذ کی ہو۔

•۔ اُ اصاغر تابعین: اصاغر صحابہ سے روایت اخذ کرنے والے نابعین۔

مخضرمين

مخضرم ایسے شخص کو کہا جاتا ہے جس نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی حیات میں اسلام قبول کیا ہولیکن آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت سے مشرف نہ ہوسکا ہو، ایسے لوگ اصلاً تا بعین ہوتے ہیں، مثلاً حضرت اولیس قرنی ہمام خولانی ہو غیرہ۔

تعداد صحابه

صحابہ کرام کی بیٹنی تعداد کسی صحابی سے منقول نہیں، البتہ بعض اکابر کے قول سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک لاکھ سے زائد تعداد تھی، سب سے زیادہ مشہور قول مشہور محدث ابوزرعہ کا ہے کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے وقت ایک لاکھ چودہ ہزار صحابہ کی تعداد تھی ۔ تا ہم جن حضرات صحابہ کے کچھ بھی حالات لکھے گئے ہیں، ان کی مجموعی تعداد دس ہزار سے زائد نہیں، جن میں حالات کھے گئے ہیں، ان کی مجموعی تعداد دس ہزار سے زائد نہیں، جن میں حیار دور نبوی میں شامل ہونے والے صحابہ بھی شامل ہیں۔

تالبعين

وہ شخص جواسلام کی حالت میں کسی صحابی سے ملاقات کی ہواوراسلام کی ہی حالت میں کسی صحابی سے ملاقات کی ہواوراسلام کی ہی حالت میں ان کا انتقال ہوا ہو، بعض حضرات نے تابعین کے تین طبقات ذکر کئے ہیں:

■ اکابر تابعین: یعنی وہ تابعین جنہوں نے عموماً اکابر صحابہ سے روایت اخذ کی ہو۔

طبقهٔ ثالثه

طبقهٔ مسانید: مند وه کتاب کهلاتی ہے جس میں صحابہ کی ترتیب پر، یا حروف ہجاء کی ترتیب پر، یا متقدم الاسلام یا متأخرالاسلام ہونے کی ترتیب پر احادیث فدکور ہوں۔ اس ترتیب پر دوسری صدی کے اختتا م اور تیسری صدی کے اوائل میں تصنیفات وجود میں آئیں، اس زمانہ میں بہت سے محدثین کرام نے بڑے بڑے ذخیرہ حدیث جمع فرمائے، ان میں سے حضرت امام احمد بن خبال آم: ۱۳۲۰ھ] اور حضرت عثمان بن ابی شیبہ زیادہ ترمشہور ہیں، اسی طرح مندالی بن اہویہ۔

مذكوره بالا تتنول طبقات مين كتب احاديث مخلوط تهين، يعنى حديث مرفوع ،موقوف وغيره ، نيز صحيح ،حسن ،ضعيف وغيره مين كوئى امتياز نه تها۔

طبقات كتب حديث

کتب احادیث کا تعارف ، مختلف انداز میں کرایا جاتا ہے کبھی صحت کے اعتبار سے تو بھی تالیف کے لحاظ سے ، ذیل میں نفس تالیف کے لحاظ سے کتب حدیث کے طبقات مذکور ہیں:

طبقهُ اولٰ

طبقہ تابعین ، پہلی صدی ہجری کے آخر میں ، سب سے پہلے عمر بن عبدالعزیزؓ نے اپنے زمانہ میں دو بڑے محدث کو تدوین حدیث کا حکم فرمایا ، ایک حضرت محمد بن مسلم بن شہاب زہرگ [م: ۱۲۵ھ] ہیں ، اور دوسر برزگ حضرت ابو بکر بن محمد بن حزم [۱۲۰ھ] ہیں ، ان دونوں حضرات نے بزرگ حضرت ابو بکر بن محمد بن حزم [۱۲۰ھ] ہیں ، ان دونوں حضرات نے حضرت عمر بن عبدالعزیز کے فرمان کے مطابق احادیث کو کتابی شکل میں مدون فرمایا ، مشہور قول کے مطابق ان دونوں میں ابن شہاب زہرگ مدون اول کہلاتے ہیں ، ان کے بعدا بن حزم ظاہری کا نام آتا ہے۔

طبقهٔ ثانیه

ید دوسری صدی کا درمیانی زمانه ہے،اس زمانه میں چندا کا برمحدثین نے

طبقه رابعه

یداصحابِ صحاح ستہ کا زمانہ ہے، ان میں امام بخاری اور امام مسلم نے صرف صحیح احادیث کو لینے کا التزام کیا ہے، یعنی مرفوع روایتوں میں بھی ، حسن اورضعیف کو بھی لیا ہے، اورضعیف کو بھی لیا ہے، حبکہ باقی چار حضرات نے حسن وضعیف کو بھی لیا ہے، صرف صحاح کا التزام نہیں کیا۔

طبقهٔ خامسه

طبقہ متأخرین، یہ محدثین متأخرین کا زمانہ ہے، حضرات متأخرین نے جب طبائع میں عفلت وکسالت دیکھی اور اسانید کے ذکر کرنے میں طوالت محسوس کی تو انہوں نے اسانید کو حذف کر کے متون کے ذکر پراکتفاء کیا جیسا کہ صاحب مشکلو ہے نے کیا ہے۔

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

علم حدیث سے آفیاب ومہتاب السالخ الم

امام بخارى رحمة الله عليه

آپ کی کنیت عبدالله، نام نامی محمد بن اساعیل بن ابراہیم بن المغیرہ

ولاوت

آپ کی ولادت ۱۳ رشوال ۱۹۴ هے بعد نماز جمعہ بمطابق ۱۸۰ء ہوئی،
آپ کا وطن بخارا ہے جو روس میں تا جکستان کے قریب ہے، اسی طرف منسوب ہوکر بخاری کہلاتے ہیں، آپ مستجاب الدعوات تھے، بہت ہی قلیل الاکل تھے، بہت ہی دوتین بادام پر ہی اکتفا کر لیتے ، والد ماجد کی میراث کوراہ خدا میں صدقہ کردیا۔

امام بخاری عہد طفولیت میں ہی نابینا ہوگئے تھے، اس بناپران کی والدہ کو نہایت ملال تھا،خواب میں حضرت ابرا ہیم علیہ السلام کی زیارت ہوئی ، انہوں نے فرمایا کہ اللہ تعالی نے تمہارے بیٹے کی آنکھوں میں روشنی عطا کر دی ہے اور بیتمہاری آ ہوزاری کا اثر ہے، ضبح کو جب اٹھیں تو دیکھا کہ فرزند کی آنکھیں روشن ہوچکی ہیں۔ [ہدی الساری ص: ۱۹۲]

اصحاب صحاح سته

| سن وفات | سن ولا دت | ائمه ٔ حدیث |
|---------|-----------|-----------------------------------|
| 0707 | مهامه | محمد بن اساعيل بخارگ |
| المام | ۵۲۰۴ | مسلم بن حجاج نييثا پورئ |
| DY 20 | 07.1 | ابوداؤ دسليمان بن اشعث |
| pr29 | ۵۲۰۹ | ابونيسي محمد بن نيسي تر مذي |
| D | مايم | ابوعبدالله احمد بن شعيب نسائق |
| 272m | ۵۲۰۷ | محمد بن يزيد بن عبدالله ابن ملجهً |

ائمهُ اربعه

| سن وفات | سن ولا دت | ائمهٔ کرام |
|----------|-----------|-----------------------------|
| ماه. | ۵۸۰ | امام ابوحنیفه نعمان بن ثابت |
| D129 | 92 | امام ما لك بن انسَّ |
| ۵۲۰۴ | D 100 | امام محمر بن ادر ليس شافعتى |
| الم يرها | متزاه | امام احمد بن نبل ً |

قوت حافظ

امام بخاريٌ كا حافظه ال غضب كا تها كه ان كا حافظه ايك كرامت نظراً تا تھا،اسی بنایر بچپین ہی میںستر ہزارا حادیث ان کو یاد ہوگئ تھیں،جس کتاب پر ایک دفعہ نظریر ٹی پھر کیا مجال کہ حافظہ کی گرفت سے باہر ہوجائے،مشہور مؤرخ ابن عدیؓ نے نقل کیا ہے کہ امام بخاریؓ فرمایا کرتے تھے کہ مجھے ایک لا كھ بچے اور دولا كھ غير سيح احاديث محفوظ ہيں، امام بخاريؓ كی قوت حافظہ كی مثال بے شار ہیں ہمونہ مشتے از خروارے کے طور پر چندذ کر کی جاتی ہیں: استان ماشد بن اساعیل نامی ایک بزرگ ہیں وہ فرماتے ہیں کہ امام بخاریؓ درس حدیث میں بلا دوات وقلم جاتے تھے، ہم نے یو چھا کہ آپ دوات وقلم کے بغیر پڑھنے آتے ہیں اس سے کیا فائدہ؟ کتنی حدیثیں ، آپ یا در کھیں گے ،اسی طرح دیگر حضرات نے بھی کہنا شروع کیا،مگریہ بحر عمیق خاموشی سے ٹال دیا کرتا،اس طرح بندرہ دن بیت گئے مگر جب سولہویں دن بھی کسی نے کچو کے لگائے کہ بلاقلم ودوات چہ فائدہ دارد؟ توامام صاحب کی قوت حافظہ کوغیرت آئی اور فرمایا کہ آپ لوگوں نے مجھے تنگ کررکھاہے، احیماتم لوگ اینی لکھی ہوئی احادیث سامنے رکھو اور سنو، میں اپنی یاد کردہ احادیث سنا تا ہوں، دونوں کا مقابلہ کرلو، امام بخاری نے تمام حدیثیں سیح سند

ومتن کے ساتھ سنانی شروع کی ، رفقاء درس محوجیرت اور انگشت بدندال تھے، حاشد بن اساعیل کہتے ہیں کہ ہم نے امام بخاری کی یا دکر دہ احادیث سے اپنی لکھی ہوئی حدیثوں کی تھیجے کی ، جبکہ ان حضرات کے پاس ہزار احادیث لکھی ہوئی جمع تھیں۔ [ارشادالباری س: ۳۳]

امام بخاری اینے دور میں قوت حافظہ کے اعتبار سے ا بنی مثال آپ تھے، دور دور تک چرچا اور شہرہ تھا، چنانچہ امام بخار کی جب بغدادتشریف لائے تو علماء بغداد نے آپ کا امتحان لینا حام، امتحان کی ترتیب یه بنائی که سواحا دیث منتخب کیس، پھران کی سند ومتن میں خلط ملط کر دیا، ایک حدیث کی سند دوسری حدیث کے ساتھ جوڑ دیں،اور دوسری کی سند کسی اور حدیث کے ساتھ، اسی طرح الفاظ حدیث میں بھی رد وبدل کر ڈالا ،اس کے بعدآب كسامنايك ايك محدث دس دس احاديث بيش كرتے رہے، امام بخاری علمی متانت کے ساتھ فرماتے رہے "لاأعوفه" جب سبھی حضرات سنا کرفارغ ہو گئے تو آپ پہلے محدث کی طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا کہ آپ نے پہلی حدیث جس سند کے ساتھ سنائی وہ غلط ہے ، اور آپ نے سند غلط انداز میں اس طرح سنائی ہے جبکہ سیحے سنداس طرح ہے، پھراصل سنداوراصل متن سنائی،اسی طرح کیے بعد دیگرے بالتر تیب ہرایک محدث کی حدیث ان کے سنانے کے مطابق دہرائی،اور پھراصل اور سیجے سندومتن سنائی،غرض جس

تر تیب سے دس محدث نے سواحادیث سنائی تھی، اسی تر تیب سے ہرایک
روایت دہرا کرضیح سندومتن کے ساتھ بیان کردی، اس واقعہ پر حافظ ابن ججر گر
نے اپنی جیرت کا اظہاراس انداز میں کیا ہے کہ اس واقعہ میں یہ بات تعجب کی
نہیں کہ ام بخاری ؓ نے ان احادیث کی اصلاح کی، بلکہ تعجب خیز بات یہ ہے
کہ آپ نے ایک ہی بارس کر غلط سندیں یاد کرلیں اور پھر بالتر تیب ان کا
اعادہ کردیا۔ [رشادالمادی عن ۳۳]

🖈 📆 👚 امام بخاريٌّ زېدوتقو يې، ديانت وثقابت كے اعلىٰ مقام یر فائز تھے،اوراس نعمت عظمٰی کی حفاظت بھی فر ماتے تھے،ایک دفعہ دریا ئی سفر میں آپ کے پاس ہزاراشر فی موجود تھیں،ایک شخص بہت ہی قریبی بن گیا، آپ نے برمبیل تذکرہ اس کو بتلا دیا، اس بندہ کے دل میں کیا شرارت سوجھی کہ کچھ وقفہ کے بعد شور مجانے لگا کہ میرے پاس ہزارا شرفی تھی معلوم نہیں کس نے چرالی،اس نے اس قدرآ ہو بکا کی کہ دیگر مسافروں کو یقین ہو گیا اوراس کے ساتھ ہمدردی بھی ہوگئی، چنانچہ طے پایا کہ مسافروں کے سامان کی تلاشی لی جائے کہ چورہے کون ؟ سامان کی تفتیش ہونے گلی ،امام بخار کی ّ نے آ ہستہ سے اپنی تھیلی جس میں اشرفیاں تھیں اس کو دریا میں ڈال دیا، ہرایک کے سامان کے ساتھ امام بخاری کا سامان بھی تلاش کیا گیا گر کچھ ہوتب تو ملے، × جب کسی کے پاس نہ ملی تو وہ اپنا سامنہ لے کررہ گیا ، اور شرمندہ ہوکر کنارے 🗴

بیٹے گیا، جب کشتی در یا کے کنار ہے کہنجی اور ساحل پرلوگ انر گئے تو اس نے امام بخاری سے پوچھا کہ آپ کی اشر فی کیا ہوئی؟ فر مایا کہ میں نے سمندر میں ڈال دیا، اس جواب پر وہ جیران رہ گیا کہ اس قدر مال پانی میں کیوں ڈال دیا؟ تو پور ہا طمینان کے ساتھ فر مایا کہ پوری زندگی حدیث کی تدوین وتر تیب میں گذاردی، اور میری ثقابت و دیا نت مشہور ومعروف بلکہ ضرب المثل بن میں گذاردی، اور میری ثقابت و دیا نت مشہور اومعروف بلکہ ضرب المثل بن چکی ہے، اب اگر وہ اشر فی میر ہے پاس مل جاتی تو لوگوں کو تہاری بات پر یقین ہوجا تا اور ان کی نظر میں میں چور بن جاتا، اور میری ثقابت پر ان کوشبہ ہوجا تا، اسلئے میں نے مالی نقصان بر داشت کیا تا کہ ثقابت پر آئے نہ آئے۔ ہوجا تا، اسلئے میں نے مالی نقصان بر داشت کیا تا کہ ثقابت پر آئے نہ آئے۔

وفات

عیدالفطر کی رات ۲۵۲ ھ کوسمر قند تشریف لے جاتے ہوئے ہی پیام اجل آگیا اور باسٹھ سال کی عمر میں علم حدیث کابیآ فتاب غروب ہو گیا۔

بخاری شریف

یوں تو امام بخاری کی قلمی کاوشوں کی تعداد ہمارتک پہنچتی ہے، لیکن ان میں سب سے معرکۃ الآراء کتاب بخاری شریف ہے جس کی تیکیل سولہ سال

میں ہوئی۔ اس کی ابتداء کس سن میں ہوئی ،کوئی حتمی اور یقینی بات نہیں کہی میں ہوئی۔ اس کی ابتداء کس سن میں ہوئی ،کوئی حتمی اور یقینی بات نہیں کہی جاسکتی، البتہ بعض قرائن کی بنا پر کہا جاسکتا ہے کہ کے الاھ سے پہلے ہوئی ہو، اور اس کی تکمیل اور اس کی تکمیل عام ہوئی ہو جبکہ آپ کی عمر ۲۸ رسال رہی ہو، گویا وفات سے میں ہوئی ہو جبکہ آپ کی عمر ۲۸ رسال رہی ہو، گویا وفات سے مراغت یائی ہو۔

[لامع الدراري ص: ٣٥- محدثين عظام ص: ١٢٠]

وحبرتاليف

کاستاد

علاء نے لکھا ہے کہ ایک دن امام بخاری کے استاد

حضرت الحق بن راہویہ نے اپنی مجلس میں فرمایا کہ اگر کوئی شخص تمام صحیح

احادیث کوایک جگہ جمع کر دیتا تو کیا ہی اچھا ہوتا، امام بخاری بھی شریک مجلس

خصر آپ کے پاکیزہ اور منور قلب پریہ خیال آنے لگا کہ کیوں نہ اس خدمت کو

انجام دوں؟ چنا نچہ استاد کے مشورہ پر آپ نے یہ کتاب تالیف فرمائی۔

خواب میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت سے مشرف ہوئے ،خواب

میں دیکھا کہ آپ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں باادب کھڑے ہیں،

پنکھا جمل رہے ہیں اور کھیاں اڑا رہے ہیں، اس خواب کو بعض معبرین سے

پنکھا جمل رہے ہیں اور کھیاں اڑا رہے ہیں، اس خواب کو بعض معبرین سے

ذکر کیا تو انہوں نے بتلایا کہ آپ کو بیسعادت حاصل ہوگی کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے کلام مبارک سے کذب وافتر اء کو دور کریں گے اور کلام نبوت کو غیر کے کلام سے جدا کریں گے ، اس خواب کے بعد آپ کواحادیث صحیحہ کے جمع کرنے کا داعیہ پیدا ہوا ، اسی داعیہ کی تکمیل میں آپ نے یہ بے مثال کتاب تالیف فرمائی۔

[ارشادالساری]

كيفيت تاليف

امام بخاری مدیث کی عظمت اور کلام رسول کی محبت کی بنا پر ہر حدیث کے کھنے سے پہلے خسل فر ماتے ، دور کعت نماز ادا فر ماتے ،خود امام موصوف کا بیان ہے کہ ہر حدیث کو لکھنے سے پہلے استخارہ کر کے دور کعت نماز پڑھتا تھا، اور جب اس کی صحت پر پورا انشراح ہوجا تا اس وقت اس حدیث کو لکھتا ، بخاری شریف کے ترجے روضۂ اقدس اور منبر نبوی کے درمیان مسودہ سے بخاری شریف کے ترجے روضۂ اقدس اور منبر نبوی کے درمیان مسودہ سے

[مقدمه فتح الباري،ص: ٧٤٥ محدثين عظام،ص: ١٢٣]

حضرت شیخ الهندگر ماتے تھے کہ پورے زمانهٔ تصنیف (سولہ سال) تک روز ہ رکھتے رہے مگر کسی کومعلوم نہ ہوسکا۔ انسل الباری، جرراص ہو

فضائل

بخاری شریف کی عظمت واہمیت کا اندازہ اسی سے بخوبی ہوتا ہے کہ قرآن کریم کے بعد سب سے زیادہ جس کتاب پراعتاد کیا جاتا ہے وہ بخاری شریف ہے، کتب احادیث میں سب سے زیادہ اس کی شرح لکھی گئی، اس کی تعلیقات ، متابعات ، رجال بخاری پر سب سے زیادہ تحقیقی کارنا ہے انجام دیئے گئے، دربار رسالت سے بھی اس کی قبولیت کا اندازہ ہوتا ہے کہ:

ابوزیدمروزی فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ میں مسجد حرام میں رکن اور مقام کے درمیان سویا ہوا تھا خواب میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت سے مشرف ہوا، آپ نے فرمایا: " اللی متی تدرس کتاب الشافعی و لاتدرس کتابی ؟" انہوں نے خواب ہی میں پوچھا کہ آپ کی کون سی کتاب ہے تو آپ نے فرمایا کہ محمد بن اسماعیل کی جامع۔

[هدى السارى ١ ٢ ٢٤]

[فیض الباری، چراص ر ۴۴]

بخاری کے فضائل میں خصوصیات کے تحت چند خصوصیات کو بھی شار کیا با تاہے:

تعدادروايات

امام موصوف کو چھ لا کھا حادیث محفوظ تھیں، ان میں سے احادیث صحیحہ کا انتخاب کر کے بخاری شریف تالیف فر مائی، اس کی تعداد کے بارے میں مختلف اقوال ہیں، مشہور قول کے مطابق ۲۷۵۵ ہیں اور حذف تکرار کے بعد جپار ہزارروایات ہیں۔

[مزیرتفصیل کیلئے ملاحظه بون بدی الساری ج راص ر ۱۹۲۸ مقدمه لامخ الدراری ص ر ۳۶ بقد بیب الراوی ج راص ر ۱۰۳ [

خصوصیات بخاری

ہر حدیث کے لکھتے وقت عسل کرتے ، استخارہ فرماتے کے کم استخارہ فرماتے کے کم مدیث کے کم استخارہ فرماتے کے محدیث لکھتے۔ [ہدی الباری ر ۲۷۵]

ہوجا تا تو دوبارہ ہے۔۔۔۔۔[۲] دوران تالیف جب بھی سلسلہ منقطع ہوجا تا تو دوبارہ بسملہ سے شروع فرماتے، چنانچہ متعدد جگہوں پر بسم اللّٰد مذکور ہے۔

[امدادالباري/ ۱۵۱]

تعلیقات موجود ہیں جوبطور متابعات موجود ہیں جوبطور متابعات وشوا ہدبکثرت ذکر کرتے ہیں۔

🖈 [2] اغراض ومقاصد بهت ہی اہم ہے۔

ایک ایک حدیث سے بکثرت مسائل کا استنباط کیا

4

ادنی شائبه ہو تو دوسری سندلا کراس کا ازالہ کردیتے ہیں۔ تو دوسری سندلا کراس کا ازالہ کردیتے ہیں۔

بخاری میں امام اعظم کی روایت کیوں نہیں؟

علامہ کوٹر کُ کھتے ہیں کہ شیخین نے امام اعظم کے تلامذہ سے روایت تو اخذ کی مگرامام ابوحنیفہ سے کوئی روایت نقل نہیں کی ،امام بخار کُ گوامام احمد کے ساتھ رہنے کا موقع ملا، مگران کے واسطے سے صرف دوروایت درج کی ،اسی

کے : شراح حدیث نے اپنے اپنے ذوق کے مطابق بخاری شریف کی خصوصیات وامتیازات بیان فرمائے ہیں، تفصیل کیلئے لامع الدراری صرر ۲۷ تا ۳۷ ارشادالساری صرح ۵۸ اور فتح الباری ملاحظه فرمائیں۔

امام مسلم رحمة اللدعليه

آپ کی کنیت، ابوالحن ، نام نامی مسلم بن الحجاج قشیری اور لقب عسا کرالدین ہے۔

ولادت

روس میں واقع مشہور شہر نیشا پور میں آپ کی ولادت ہوئی، آپ کی تاریخ ولادت میں مورخین کا اختلاف ہے، بعض کہتے ہیں ۲۰۲ ھ، بعض کے بقول ۲۰۲ ھ، اورایک خیال کے مطابق ۲۰۲ ھ ہے، صاحب جامع الاصول نے قول آخر کو اختیار کیا ہے۔ اور بعض قرائن سے اسی کی تائید ہوتی ہے۔

مناقب

کے[۱] محدثین کہتے ہیں کہ امام سلمؓ نے تمام عمر کسی کی غیبت نہیں کی اور نہ کسی کو برا بھلا کہا۔

کسس[۲] امام بخاریؒ کے استاذمجمدا بوقریش فرمایا کرتے تھے کہ دنیا میں حفاظ چار ہیں ان میں ایک امام مسلم بھی ہیں ﷺ

ایک امام بخاری ، ابوزرعه ، داری اور مسلم بن الحجاج - تهذیب التهذیب جر ۱۰ صر ۱۲۸ سیراعلام النبلاء ۱۰ مر ۱۲۸ سیراعلام

ہر محدیث طرح امام مسلم ، امام بخاری کے شاگرد ہیں ، اور انہوں نے تالیف مسلم میں بخاری شریف سے بھر پور استفادہ بھی کیا ہے ، لیکن امام مسلم نے امام بخاری گئے دواسطہ سے کوئی روایت اخذ نہیں کی ، اسی طرح امام احمد ، امام شافعی کے شاگرد ہیں ، اور مؤطا امام مالک ان سے درساً پڑھی ہے ، لیکن مؤطا مالک کی صرف پانچ روایت امام شافعی کے واسطہ سے اپنی کتاب میں درج کی ، محدثین کے اس طرز تالیف سے معلوم ہوتا ہے کہ چونکہ ان محدثین اور ائمہ مجہدین کی روایت کونقل کرنے والے ہر جانب موجود تھے ان کے ضائع ہونے کا اندیشہ نہیں تھا ، اس لئے ان محدثین نے صرف ان راویوں کی موایات کونقل کرنے کا اندیشہ نہیں تھا ، اس لئے ان محدثین نے صرف ان راویوں کی روایات کونقل کرنے کا اندیشہ تھا۔

[حاشية شروط الائمه، ص ٨ - بحواله محدثين عظام]

ہم عصر احمد بن مسلم یہ ہیں کہ شہور کی مسلم کے ہم عصر احمد بن مسلم کی مشہور کی مسلم کے ہم عصر احمد بن مسلم کے ہم عصر احمد بن مسلم کے ہم عصر احمد بنتے ہیں کہ مشہور کے درمیان امتیاز کرنے میں امام مسلم کو تمام ہم عصر بلکہ بعض موقع پر امام کی بخاری پر بھی فوقیت دیا کرتے تھے ہے۔

ہے.....[۴] امام ابوحاتم رازیؒ نے امام مسلمؒ کوخواب میں دیکھا تو پوچھا کہ کیا حال ہے؟ فرمایا کہ اللہ پاک نے جنت کومیرے لئے مباح کردیا ہے، جہاں جا ہتا ہوں۔

امام بخارتی کی خدمت میں

امام بخاری کی خدمت میں بار بارحاضر ہوئے ،ان سے احادیث حاصل کی ،اور ہمیشہ نیاز مندی اور تلمیذ کے طور پرپیش آتے رہے،ایک دفعہ ان کے تبحرعلمی اور زہدوتقوی سے مرعوب ہوکر ان کی پیشانی کا بوسہ دیا اور پھر مزید منفعل ہوکر فرمایا ذراا پنے قدم بڑھا بے اے محدثین کے سردار،اور حدیث

وجبر جی یہ بیان کی جاتی ہے کہ امام بخاریؒ نے اہل شام کی اکثر روایات ان کی کتابوں سے بطور مناولہ حاصل کی ہیں، براہ راست سماع نہیں کیا، اس لئے بسا اوقات ان راویوں میں غلطی ہوجاتی ہے، کیونکہ ایک ہی راوی کا بھی نام، تو بھی کنیت، فدکور ہوتی ہے، اور اس میں امام بخاریؒ کودھو کہ ہوجاتا ہے اور دو راوی خیال کر گذرتے ہیں، جبکہ امام مسلمؒ نے خود سماع کیا ہے اسلئے اس قتم کا مغالط نہیں ہوتا۔ [بستان المحدثین رامی میں المحدثین رامی مار ملام النبلاء ۱۰ر ۱۸۳

کے ماہر! تا کہ میں بوسہ لے لوں، اس سے اندازہ لگا سکتے ہیں کہ کس درجہ ادب واحتر ام تھا، بلکہ جب خلق قرآن کے مسئلہ میں امام بخار کی اور محمد بن یجی ذبائی کا اختلاف بروھا، اور امام ذبائی نے اعلان کر دیا کہ جوشخص خلق قرآن کا قائل ہووہ ہماری مجلس سے چلا جائے، یہن کر امام مسلم نے ان سے منی ہوئی روایات واپس کر دیں اور پھران کے درس میں بھی شریک نہیں ہوئے۔

وفات

آپ کی وفات کا واقعہ بھی آپ کے علمی لگن کو واضح کرتا ہے، حافظ ابن ججر عسقلا فی کے بقول ایک دن درس حدیث کے درمیان جب آپ سے ایک حدیث کے متعلق سوال کیا گیا تو اس وقت وہ حدیث آپ کو یا دنہ آسکی، گھر آکر تلاش شروع کردی، حسن اتفاق کہ اہل خانہ نے آپ کے سامنے بھجور کا ٹوکرا رکھ دیا، تلاش وجبچو میں اس قدرمنہمک ہوئے کہ بھجور کے کھانے کی مقدار کی طرف ذہن نہیں گیا، حدیث تلاش کرتے کرتے وہ ٹوکرا خالی ہوگیا، بغیر قصد وارادہ کے بھجورزیادہ مقدار کھالینے سے ہاضمہ خراب ہوا اور پھر وہی موت کا سبب بن گیا، مهر بار جب التا ھے کو اتو ارکے دن شام کے وقت علم حدیث کا بیآ قاب غروب ہوا، اور پیر کے دن نصیر آباد کے قبرستان میں مدفون مور نے ۔ [سراعلام النہاء ۱۰ ہموا، اور پیر کے دن نصیر آباد کے قبرستان میں مدفون ہوئے۔ [سراعلام النہاء ۱۰ ہموا، اور پیر کے دن نصیر آباد کے قبرستان میں مدفون

بہت پہلےاس کی تکمیل کر چکے تھے۔

چنانچہ امام موصوف کے شاگر دخاص ، ابواتحق ابراہیم بن محمد نیشا پورگ جن سے مسلم شریف کی روایات کا سلسلہ ہمارے دیار میں قائم ہے وہ فرماتے ہیں کہ امام مسلم نے ہمارے سامنے اس کتاب کی قرائت سے کھا ہے رمضان میں فراغت یائی ، اس سے انداز ہ لگایا جا سکتا ہے کہ اس کی تکمیل سے موت سے بہت پہلے فارغ ہو چکے تھے۔

البته اس کی تعیین بآسانی ہوجاتی ہے کہ انہوں نے کتنی مدت میں بیتالیف فرمائی، چنانچہ امام سلم کے ہم عصر محدث احمد بن مسلم کے ہم عصر محدث احمد بن مسلم کے ہیں کہ اس کی ترتیب میں پندرہ سال میں شریک رہا۔

فضائل

قاضی عیاض نے اپنی مشہور کتاب ''الماع'' میں ابومروان سے نقل کیا ہے کہ میر ہے بعض شیوخ مسلم کو بخاری شریف پر فوقیت دیا کرتے تھے، اسی طرح علامہ ابن حزم ظاہری بھی مسلم کو بخاری پرتر جیجے دیا کرتے تھے۔ شیخ ابوعلی زاغوائی کو بعض ثقہ لوگوں نے خواب میں دیکھا اور پوچھا کہ س چیز سے نجات ہوگئ، تو چند اجزاء کی طرف اشارہ کرتے ہوئے فرمایا کہ ان اجزاء کے صدقے میں میری نجات ہوگئ، دیکھنے والے نے جب بیدار ہوکر

وجهتاليف

کے ہیں۔ [ا] امام بخاریؒ کے مجموعہ احادیث (بخاری شریف) کود کھے کر شوق ہوا کہ اس قسم کی عظیم خدمت میں ہمیں بھی شامل ہونا چا ہئے ، چنا نچہ اپنے خاص نہج کے مطابق اس کی تالیف فرمائی۔ اظفر الحصلین راسی

خاص کی کے مطابق اس کی تالیف فرمائی۔ وظفر الحسلین را اس اللہ اسلمہ ہے نے درخواست پیش کی کہ حدیث کی کوئی ایس کتاب تالیف فرمادیں جس میں درخواست پیش کی کہ حدیث کی کوئی ایس کتاب تالیف فرمادیں جس میں اسانید کے ساتھ احادیث صحیحہ ہوں ، نیز دینی احکام ومسائل ، ترغیب وتر ہیب برمشملل روایات بھی ہوں ، چنانچیان کی درخواست پریتھنیف فرمائی۔ پرمشملل روایات بھی ہوں ، چنانچیان کی درخواست پریتھنیف فرمائی۔ کرنے کا رواج بڑھ رہا ہے تو آپ کو خیال آیا کہ احادیث صحیحہ کا ایک ایسا مجموعہ امت کے سامنے پیش کر دیا جائے جس کو وہ لائحمل بناسکیں اور ان کے ہم تھوں میں صحیحہ احدیث کے احدیث اللہ ایسا ہے تو آپ کو خیال آیا کہ احادیث صحیحہ کا ایک ایسا مجموعہ امت کے سامنے پیش کر دیا جائے ۔ [مقدمہ مسلم]

زمانهُ تاليف

حتمی اور یقینی طور پراس بات کی تعیین نہیں کی جاسکتی کہ سس میں اس کی ابتدا ہوگی ، اور کب اس کی تکمیل ہوئی ، البتہ اتنا کہا جاسکتا ہے کہ وفات سے حدودغرب ہےآ گے تجاوز نہ کرسکا۔

کے فائدہ: شیخ ابوالحق ابراہیم بن محمد بن سفیان یہ مشہور محدث اور فقیہ ہیں اور خاص بات میہ ہے کہ بیٹ اور خاص بات میہ ہے کہ بیٹ فی میں ، گویا مسلم شریف کی روایات حفی محدث کی سند ہی سے عام اور مشہور ہے۔ [علم حدیث اور ابن باجر ۱۷ عاشیہ]

خصوصيات مسلم

مسلم شریف کی ابتدامقدمہ سے ہوئی ہے اور اس کی تکمیل کتاب النفسیر پر ہوئی، جامع جن مضامین پر مشتمل ہوتا ہے وہ سارے مضامین اس میں موجود ہیں۔

كم.....[ا] ضبط تفاوت لفظ:

اگر کوئی حدیث دوراوی سے مختلف الفاظ میں مروی ہوتو امامسلم ان میں سے جس شخ کے الفاظ لئے کر کردیتے ہیں اس کی تعیین''واللفظ لئے'' کہہ کر کردیتے ہیں، جبکہ امام بخاری اس کا التزام نہیں کرتے۔

☆.....٢] ازالهُ التباس:

شند میں کسی راوی کا نام جہم اور مشتبہ ہوتو اس کی وضاحت کر دیتے ہیں البتہ بطور احتیاط'' ھو'' کہہ کرتشر تک کرتے ہیں، تا کہ استاد کی طرف کوئی ایسی بات منسوب نہ ہوجائے جوانہوں نے نہ کہی ہو۔ ان اجزاءکودیکھاتو وہ سلم شریف کے اجزاء تھے۔

حافظ ابوعلی نیشا پورگ نے فرمایا کہ آسان کے نیچ سوائے قر آن مجید کے اور کوئی کتاب مسلم سے زیادہ چھنہ ہیں ہے۔ [سراعلام النبلاءر ۲۸۴۔ محدثین عظامر ۱۳۹

تعدادروايات

کہ سے انتخاب کے اسے انتخاب کے کہ تین لاکھ احادیث سے انتخاب کر کے حیار ہزاراحادیث لی ہیں۔[حذف مکررات کے بعد]

ہے۔۔۔۔۔[۲] احمد بن مسلمہ یکے بقول تعدادروایات مکررات کے ساتھ بارہ ہزار،اورابوحف میا نجی کے بقول آئے ہزار،حافظ ابن حجرنے قول ثانی کو ردکیا ہے، ممکن ہے شار کے معیار میں فرق کی بنا پر تعداد میں بیفرق واقع ہوا ہو، مصر کے مشہور محدث شیخ محمد فؤاد عبدالباقی کے شار کے مطابق حذف مکررات کے بعد تین ہزار بتیں روایات ہیں۔

نتنخه

برصغیر میں مسلم شریف کا جونسخہ مروج ہے اس کے راوی امام مسلمؓ کے شاگر دخاص شیخ ابوالحق ابراہیم محمد بن سفیان نیشا پورگ (متوفی ۱۳۰۸ھ) ہیں اس کے علاوہ ایک اورنسخہ ابومحمد احمد بن قلانسی سے بھی رائے ہے مگراس کا سلسلہ

☆ [٣] حدثناء اخبرنامین فرق:

ان دونوں میں فرق کو ملحوظ رکھتے ہیں،''حدثنا''اس مقام پر لاتے ہیں جہاں شخ نے تلاوت کی ہواور شاگرد نے سنی ہو،اور''اخبرنا''اس مقام پر ذکر کر کرتے ہیں جہاں شخ کے سامنے شاگرد نے پڑھی ہو، جبکہ امام بخار کی پیفرق ملحوظ نہیں رکھتے۔

لاسس[۴] قلت آثار وتعليقات:

مسلم میں صرف احادیث مرفوعہ مذکور ہیں، موقوف روایات شاذونادر ہیں، برخلاف بخاری شریف کے، اس میں موقوف روایات بکثرت موجود ہیں۔

كسيره] مقدمه مسلم:

ابتداء، حدیث سے نہیں بلکہ اصول حدیث سے کی ہے گویا آپ نے اصول حدیث کی بنیاد قائم کی ہے۔

کسس[۲] ایک اہم خصوصیت ہے ہے کہ ایک باب سے متعلق تمام احادیث، تمام سندیں ، ایک حدیث کے مختلف الفاظ کونہایت حسن تر تیب کے ساتھ ایک مقام پر جمع فرمادیا ہے ، جس سے تمام الفاظ مختلف اور مختلف طرق کی تلاش آسان ہو جاتی ہے۔

🖈[۷] حضرت ابو ہر ریرہ رضی اللہ عنہ کے شاگر د خاص حضرت

ہم ہن مدیہ آنے حضرت ابو ہر یہ وضی اللہ عنہ سے حاصل کردہ روایات کو لکھ لیا ہے ، ہوا ہوں مدید کے نام سے مشہور ہے، اب سوال بیہ ہے کہ اگر اس فتم کے مجموعہ سے متعدد روایات نقل کی جائیں، تو بوقت روایت ہر حدیث کیلئے تجدید اسناد کی ضرورت ہوگی یا نہیں؟ یا متحد الا سناد ہونے کی وجہ سے، بعد کی دوسری حدیثیں اسی پہلی اسناد پر محمول ہوں گی؟ اس میں اصولین اور بعد کی دوسری حدیثیں اسی پہلی اسناد پر محمول ہوں گی؟ اس میں اصولین اور محدثین کا اختلاف ہے، ایک قول یہ ہے کہ تجدید اسناد کی حاجت نہیں جبکہ دوسرا قول بیہ ہے کہ تجدید اسناد کی حاجت نہیں جبکہ دوسرا قول بیہ ہے کہ ہر حدیث کو بقید اسناد روایت کر نالا زم ہے، چنا نچو امام سلم کا یہی نظریہ ہے اور این اس نظریہ کے مطابق مسلم شریف میں ہر جگہ سند ذکر کر تے ہیں۔ ملاحظہ ہو سلم شریف کتاب الطہارة ج راہ صرر ۱۹۱۹ میں ا

جب حضرت ہمام بن مذہبہ کی روایت نقل کرنی ہوتو یہ الفاظ اس لئے نقل کرتے ہیں تا کہ قاری کومعلوم ہوجائے کہ صحیفہ کی جو حدیث یہاں بیان کی جار ہی ہے صرف وہی حدیث نہیں سنائی تھی بلکہ اور بھی سنائی تھی جن میں سے ایک یہ بھی ہے۔

کسس[۹] اس کتاب کی تبویب امام مسلم نے خود نہیں کی بلکہ (رائج کشخہ پر) شارح مسلم امام نوویؓ نے ابواب مقرر کئے ہیں۔

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

علامہ انور شاہ کشمیری فرمایا کرتے تھے کہ جب ذبین شاگر داستاد سے سوال کرتا ہے تو اس کی نگاہ دیگرعلوم کی طرف جاتی ہے اور بہت سی علمی باریکی روشن ہوجاتی ہے، اس لحاظ سے امام بخاری نے فرمایا کہ ہمیں تم سے زیادہ فائدہ پہنچا۔ اس بنا پر تمام محدثین ان کوامام بخاری کا خلیفہ کہتے تھے۔

[تہذیب البہذیب ۹۸ محدثین عظام مرے کا تہذیب ۱۳۸۹ محدثین عظام مرے کا تہذیب البہذیب ۱۳۸۹ محدثین عظام مرے کہ خود امام خارک گیائے ایک بات یہ بھی باعث فخر ہے کہ خود امام بخارک نے ان سے روایت اخذ کی ہے۔

قوت حافظه

امام تزمذى رحمة اللهعليه

آپ کی کنیت ابولیسلی ، نام نامی محمد بن میسلی بن سورة بن موسیٰ بن الضحاک سلمی ہے۔

ولادت: امام موصوف و من صین مقام تر فدمین پیدا ہوئے ، تر فدایک قدیم شہر ہے جو دریائے جیجون کے ساحل پر واقع ہے اور روس میں شامل ہے۔ ﷺ

وفات: آپ کا انتقال مشہور روایت کے مطابق ۲۷۹ ہے دوشنبہ کی رات کو ہوا، ستر سال عمر تھی۔ [محدثین عظام ۱۷۵]

مناقب

کے[۱] آپ بڑے متقی اور عابد و زاہد تھے، خوف الہی کا یہ عالم تھا کہ برسوں روتے رہے، جس سے آپ کی بینائی چلی گئی۔

🖈: ۲] امام بخاری امام تر مذی کے استاذ ہیں مگر پھر بھی فرمایا:

" انتفعتُ بک اکثر مما انتفعتَ بی " میں نے تم سے اس سے زیادہ فائدہ اٹھایا جتناتم نے ہم سے فائدہ اٹھایا۔

🗨 ترند:اس كے تين ضبط ہيں: تو مِذبكسراكميم ، تو مَذ بفتح الميم ، تو مُذ بضم الميم ، مشہور بالكسر ہے۔

تین ہم نام بزرگ

خیال رہے کہ تر مذی نام کے تین بزرگ گذرے ہیں: [ا] امام ابوعیسی محمد بن عیسی صاحب سنن۔

[۲] ابوالحسن احمد بن حسن، بیتر مذی کبیر کے نام سے مشہور ہیں، بیامام بخاریؓ اور ابن ملجه اور صاحب سنن تر مذی کے استاذ ہیں۔

[س] امام تحکیم ترمذی، مشہور صوفی اور مؤذن تھے۔ جنہوں نے نوادر الاصول نامی حدیث کی کتاب کھی ہے جس میں اکثر روایات ضعیف اور غیر معتبر ہیں۔ [بستان المحدثین روایا۔ مقدمہ تھنۃ الاحوذی ر ۱۳۵]

تر مذی شریف

جامع تر مذی فن حدیث کی معروف ومشہور کتاب ہے، صحاح ستہ میں شامل ہے، تدریسی حیثیت سے بھی ہرز مانہ میں اس کی اہمیت رہی ہے۔

وجبرتاليف

امام تر مذی نے جب محسوں کیا کہ فقہاء کرام کے مسائل کودلائل سے مؤید کردیا جائے تا کہ ان حضرات کی کا وشوں اور مسائل پرشکوک وشبہات کا کسی کو

چونکہ مسافروں کواس درخت کی وجہ سے تکلیف ہوا کرتی تھی اس لئے اسے کاٹ دیا گیا،اس واقعہ سے امام موصوف کے محیرالعقول قوت حافظہ کا انداز ہ ہوتا ہے۔ [درس ترمذی سر ۳۲]

🖈[۲] قوت حافظہ کا بیہ واقعہ بھی مشہور ہے کہ کسی شیخ کے دو جزء کے بقدر احادیث کسی اور واسطہ سے سی تھیں ،حسن اتفاق کہ اس شیخ سے ملاقات ہوگئ تو اِنہوں نے براہ راست ساع کی درخواست کی ، اُنہوں نے قبول کرتے ہوئے کہا کہ ٹھیک ہے میں پڑھتا ہوںتم اس کوملاتے جاؤ،عجیب بات بيہ ہوئی كہوہ دونوں جزءر كھنا بھول گئے تھے اور دوسر ے اجزاءر كھ لئے تھے،اب جب یہ نے روایات سنانا شروع کیا تو امام تر مذکی سادے کاغذیر ہاتھ رکھ کراس طرح دیکھتے گئے گویا شیخ کی احادیث کو ملارہے ہیں، شیخ کو اندازہ ہوگیا کہ بیتو سادے کاغذ سے تقابل کررہے ہیں ناراض ہوئے،امام تر مذی نے فرمایا کہ آپ محل سے کام لیں،جس قدرروایات آپ نے سنائی ہیں سب مجھے یاد ہیں، چنانچہ تمام سنادیں، شنخ کو خیال گذرا کہ آپ کو پہلے سے یاد ہول گی ، یو چھنے پر امام موصوف نے عرض کیا کہ آپ دوسری احادیث سنایئے، میں وہ بھی سنادوں گا، چنانچیشنخ نے اپنی غرائب الحدیث سے حالیس حدیثیں سنائیں جن کوامام تر مٰدیؑ نے فوراً ہی دہرا دیا،تب ﷺ کوان کی قوت × حافظه کا یقین ہوگیا۔ [سیراعلام النبلاء ۱۰ر ۱۱۲_بستان المحد ثین ر ۱۸۵]

موقع نه ملے، چنانچہ ہرفقیہ کے مسدل کو جداگانہ باب میں ذکر کیا۔البتہ ایک موضوع سے متعلق تمام احادیث کا احاطہ نہیں کرتے، بلکہ وہ روایات ذکر کرتے ہیں جو دوسرے محدثین نے تخ تخ نے نہیں کی ہیں اور باقی احادیث کی طرف "وفی الباب عن فلان و فلان "کہہ کراشارہ کرتے ہیں، نیزامام نسائی کی طرح علتوں کو بھی ذکر کرتے ہیں۔

فضائل

☆[۱] امام ترمذی فرماتے ہیں کہ اس کتاب کو میں نے علماء حجاذ، علماء خراسان، علماء عراق کے سامنے پیش کیا، ہرایک نے پیند کرتے ہوئے خراج تحسین سے نوازا، اب یہ کتاب اس درجہ کی ہے کہ جس گھر میں یہ کتاب حدیث ہوگویا نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم اس سے کلام فرمار ہے ہیں۔

[محدثین عظام ر ۸۱ مقدمه عرف الشذی ر ۳۳]

یس کہ ابواساعیل کے سیاری کے ہیں کہ ابواساعیل کرتے ہیں کہ ابواساعیل کے عبداللہ بن محدانصاری کے سامنے ہرات میں امام تر مذی اوران کی کتاب کا تذکرہ ہوا، تو انہوں نے برجستہ کہا کہ تر مذی میر بے نزدیک بخاری اور مسلم کے سامنے ہوئی ماہرفن ہی فائدہ اٹھا سکتا ہے جبکہ کی تر مذی سے ہرشخص فائدہ اٹھا سکتا ہے۔ المقدم عرف الشدی سے ہرشخص فائدہ اٹھا سکتا ہے۔ المقدم عرف الشدی سے ہرشخص فائدہ اٹھا سکتا ہے۔ المقدم عرف الشدی سے ہرشخص فائدہ اٹھا سکتا ہے۔ المقدم عرف الشدی سے ہرشخص فائدہ اٹھا سکتا ہے۔

کہ[۳] شخ ابراہیم البیجوری ہرطالب علم کو بیمشورہ دیا کرتے سے کہ اس کا مطالعہ کریں، کیونکہ بیہ کتاب احادیث فقہی فوائداور اسلاف کے مذاہب کا جامع ترین گلدستہ ہے، لہذا یہ مجہد کیلئے بھی کافی ہے اور مقلد کو بھی ہے نیاز کرتی ہے۔ [ظفر الحصلین رسم کا دمقدمہ عرف الشذی رسم]

تعدادروايات

۳۹۲۵ سرروایات بین لیکن مشهور محدث احمد شاکر آ ۱۹۸۲ تعداد نقل کرتے ہیں۔

خصوصیات تر مذی

ہے۔۔۔۔۔[ا] حسن تر تیب، اس کی تر تیب نہایت ہی عمدہ ہے، کیونکہ بیک وقت پیجامع بھی ہے اور سنن بھی۔

لا عدم نكرار، يعنى اس ميں روايات مكر رنہيں ہيں۔

﴿ [٣] بيان مذاهب، يعني ہر باب ميں فقهاء كے مذاهب بيان

کئے ہیں۔

ہے.....[⁴] فقہائے کرام کے بنیادی متدلات جمع فرمادیئے ہیں۔

ہونے کو واضح کرتے ہوئے ہوئے کو واضح کرتے ہوئے

امام ابوداود رحمة اللدعليه

آپ کی کنیت ابوداود نام نامی سلیمان بن اشعث بن اسلی بن بشر بن شر بن شداد سجمتانی ہے۔

ولادت باسعادت: اپنے آبائی شہر سجستان میں ۲۰۲ ہومیں پیدا ہوئے۔ [سیراعلام النبلاء ۱۰ر ۵۹۸]

سجستان : بیمعرب ہے سیستان کا، ایک قول کے مطابق سندھ ہرات کے درمیان ایک خطہ کا نام ہے، جو قندھار سے متصل ہے، ابن خلکان کے بقول بھرہ کے قریب ایک قریب کیا ام ہے، گرمخققین نے اس کوسلیم نہیں کیا ہے، اول قول بی صحیح اور محقق ہے۔ اس وقت کے جغرافیا کی نظام کے مطابق بید خطہ ملک ایران میں شامل ہے۔ [الشرح الشمیری ارسیم النہاء ۱۰ر ۵۷۹]

مناقب

ہے۔۔۔۔۔[ا] علامہ ذہبی تذکرۃ الحفاظ میں لکھتے ہیں کہ امام ابوداؤ دُشکل وصورت اور فضائل وشائل میں امام احمد بن خنبل کے مشابہ تھے، امام احمد امام

سندکی کمزوری کو بھی بیان کردیتے ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] ہر باب میں ایک یا دو تین حدیث ذکر کرتے ہیں، جن کی دوسرے ائمہ نے تخ تئے نہیں کی الیکن وفی الباب کے بعد عن فلان عن فلان کہہ کران احادیث کی طرف اشارہ بھی کردیتے ہیں، جواسباب میں آسکتی ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔[2] مشتبدراویوں کا تعارف بھی کراتے ہیں، مثلاً راویوں کے نام والقاب اور کنیت کا بھی ذکر کردیتے ہیں۔

کے تراجم وابواب نہایت مہل ہیں، اور تر تیب اس کے تراجم وابواب نہایت مہل ہیں، اور تر تیب اس قدرعدہ ہے کہ حدیث تلاش کرنا نہایت آسان ہے۔

ہاں کی تمام احادیث کسی نہ کسی فقیہ کے یہاں معمول بہا ہیں،سوائے دوحدیث کے۔

ہاں ہے۔۔۔۔۔[•ا] تدریسی حیثیت سے بطور خاص ہمارے اکابر کے یہاں اس کو یہا متاز بھی حاصل ہے کہ حدیث کے جملہ تفصیلی مباحث سب سے زیادہ اس میں بیان کئے جاتے ہیں۔ [درس ترزی مصص

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

ر ہبرعلم حدیث

وکیٹے کے مشابہ تھے، اور امام وکیٹے سیدنا سفیان کے مشابہ تھے، اور حضرت مفیان امام منصور آبراہیم نخعی کے، اور ابراہیم نخعی کے مشابہ تھے، اور ابراہیم نحعی کے مشابہ تھے۔ اور حضرت علقمہ حضرت عبداللہ بن مسعود کے اور حضرت عبداللہ بن مسعود کی کے اور حضرت عبداللہ بن مسعود کی اور حضرت علیہ وسلم کے مشابہ تھے۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] مشہور ہے کہ آپ کے کرتے کی ایک آسین کشادہ اور ایک تئی ہوتی تھی ،لوگوں نے اس کی وجہ پوچھی تو فر مایا ایک تو کتب حدیث کیلئے کشادہ کررکھی ہے اور دوسری کو کشادہ کرنے کی ضرورت نہیں ،الہذا کشادہ رکھنا اسراف ہوگا۔

عرضاً ہے، پھراس کے مگراں سے بوجھا کہاس کا پانی کہاں تک رہتا ہے تواس نے بتلایا کہ جب پانی بڑھتا ہے تو کمر تک ورنہ گھٹنہ تک رہتا ہے۔

ابوداو دشريف

وجه تاليف

امام موصوف نے حسن سے کم درجہ کی احادیث اس میں نہیں لی ہے، اس لئے صحیحین کے بعد تمام کتابوں میں زیادہ معتبر ہے۔ [محدثین عظامر ۱۹۳]

ز مانه تالیف

ابوداود شریف کی ابتداء کب ہوئی؟ اور اس سے فراغت کب پائی؟ حتمی طور پر پچھ کہنا مشکل ہے، تاہم امام ابوداؤڈ نے اس کی فراغت کے بعدا پنے استاد مکرم امام احمد کی خدمت میں پیش کیا جبکہ امام احمد کی وفات استاد میں میں پیش کیا جبکہ امام احمد کی وفات استاد میں ہوئی، اس سے اتنا اندازہ ہوتا ہے کہ استاد صد پہلے فارغ ہو چکے تھاور خودامام ابوداود کی ولا دت ۲۰۲ ھمیں ہوئی، اس اعتبار سے کہا جاسکتا ہے کہ اس کی تالیف سے فراغت کے وقت آپ کی عمر کم از کم انتا کیس سال رہی ہوگی۔ اس کی تالیف سے فراغت کے وقت آپ کی عمر کم از کم انتا کیس سال رہی ہوگی۔

فضائل

امام موصوف کے شاگردرشید حافظ محمد بن مخلد فرماتے ہیں کہ جب میہ کتاب محدثین کے سامنے آئی توان کیلئے قر آن کی طرح قابل اتباع بن گئ۔ کتاب محدثین کے سامنے آئی توان کیلئے قر آن کی طرح قابل اتباع بن گئ۔

یجیٰ بن زکریا بن بیجیُّ فرماتے ہیں کہ اصل اسلام کتاب اللہ ہے، اور فرمانِ اسلام سنن ابوداود ہے۔

علامہ ابن حزم مُ فرماتے ہیں کہ حدیث کی مشہور کتاب ''صحیح ابن السکن'' کے مؤلف حافظ سعید بن السکن کے پاس بہت سے حضرات پہنچے اور عرض کیا

که اب تو کتب احادیث کا ذخیره ہور ہا ہے اگر آنجناب ان میں سے کسی ایک کا انتخاب کر دیں تو ہم اس پر ہی اکتفا کریں۔ اس پرشنخ سعید بن سکن ؓ اٹھے، اندر گئے اور جا ر بڑے دفتر لا کرر کھ دیئے اور فر مایا کہ بیا سلام کی بنیادیں ہیں، وہ جار دفتر ؛ بخاری مسلم، ابوداود اور نسائی کی شکل میں تھے۔

تعدادروايات

امام موصوف کے سامنے پانچ لا کھا حادیث کا ذخیرہ موجود تھا اس میں سے چار ہزار آٹھ سواحا دیث منتخب فرما کریہ مجموعہ تیار کیا۔

نسخه

امام موصوف کی میہ کتاب چار واسطوں سے زیادہ مشہور ہوئی، غیر منقسم ہندوستان میں جونسخہ رائج ہے وہ ابوعلی محمد بن احمد بن عمر ولولؤ کی بصری کا ہے، جن کی وفات اللے ہیں ہوئی، اس نسخہ کی ایک خصوصیت میہ ہے کہ امام ابوداود نے محرم ۵ کے میں سب سے آخر میں املاء کرایا تھا، اسی آخری سال انہوں نے ساع کیا تھا۔

جإراحاديث خلاصة دين

امام ابوداود نے پانچ لا کھا حادیث سے جار ہزار آٹھ سواحادیث منتخب

فرمائیں، پھرفرمایا کہ ان میں صرف جاراحادیث انسان کے ممل کیلئے کافی میں:

ك (١) انما الاعمال بالنيات.

شارع) من حسن اسلام المرء تركه مالا يعنيه.

رسى المؤمن مؤمنا حتى يرضى الخيه المؤمن مؤمنا حتى يرضى الخيه ما يرضى لنفسه .

الحلال بين والحرام بين $(^{\alpha})$ الحلال الخ

حضرت شاہ عبدالعزیز صاحبؒ فرمایا کرتے تھے کہ پورے دین پر عمل کرنے کیلئے یہ چاروں حدیث شی عیں ، وہ اس طرح کہ اول حدیث تھے عبادت پر ، دوسری حدیث تھی اوقات سے حفاظت اور عمر کے میں استعال پر ، اور تیسری حدیث حقوق العباد پر ، اور چوشی حدیث مشتبہ امور سے بیخے پر مشتمل ہے۔ [بتان الحد ثین ر ۱۸۲]

وفات:

امام موصوف نے بھرہ کو اپناوطن بنالیا تھا کیونکہ حدیث کیلئے اسی شہر کو زیادہ موزوں سمجھا، ۱۲رشوال <u>۵۷۲</u>ھ کوتہتر سال کی عمر میں آپ کا انتقال ہوا، * آپ بھرہ میں مدفون ہوئے۔ [سیراعلام النبلاء ۱۰ر ۵۷۹]

خصوصيات ابوداود

فقهی ترتیب پر کتاب الطهارة سے شروع ہوکر کتاب الادب پر ختم ہوئی --

ہے۔۔۔۔۔[۱] ابوداود شریف کی اہم خصوصیت '' قال ابوداؤد' ہے، جس
کے ذریعہ بھی راویوں کے اختلاف کو بیان کرتے ہیں اور بھی اختلاف
حدیث کے فرق کو،اور بھی صرف تعدد طرق کی طرف اشارہ کرتے ہیں۔

کہ ۔۔۔۔۔[۲] ایک ہی سند میں بھی مختلف اسانید کوفقل کردیتے ہیں، اسی
طرح بھی متن میں مختلف متون کو جمع کردیتے ہیں، پھران میں سے ہرحدیث
کے الفاظ کو علیحدہ علیحدہ بیان فرماتے ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔[۳] مجھی بھی ایک ترجمۃ الباب کے بعد دوسرا ترجمہ قائم کرتے ہیں جس کا مقصد روایات کے درمیان جمع قطبیق اور دفع تعارض کی طرف اشارہ کرنا ہوتا ہے۔

ہوں اور دوسرے کے احفظ ، تو اقدم کی دوسند ہو ، البتہ ایک سند کے راوی اقدم ہوں البتہ ایک سند کے راوی اقدم ہوں اور دوسرے کے احفظ ، تو اقدم کی روایت نقل کرتے ہیں۔

ﷺ [۵] مجھی ایک باب کے تحت جب چندر وایت نقل کرتے ہیں تو اس سے کوئی خاص فائدہ یا کوئی خاص نقطۂ نظر کو بیان کرنا ہوتا ہے۔

کسس[۲] جب ایک راوی پر دوسندیں جمع ہوں ، ان میں ایک کے ساتھ ہوتو "حدثنا" والی کے ساتھ ہوتو "حدثنا" والی کے ساتھ ہوتو "حدثنا" والی کے ساتھ کے ساتھ ہوتو کے ساتھ

ہے۔۔۔۔[2] مجھی ترجمۃ الباب اس انداز میں قائم کرتے ہیں جس سےخودتر جمہ کے الفاظ کی طرف اشارہ کرنامقصود ہوتا ہے۔

ہیں کی جوان کے ایسے راوی کی روایت نقل نہیں کی جوان کے نزد یک متروک ہو۔

ہوجاتے ہیں جن کوحل کرنے کیلئے شارحین کو بہت تحقیق کی ضرورت پیش آجاتی ہے۔ [الدرالمنفود ۵۱۔ ۲۹عدثین عظام ۱۹۵]

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

امام نسائی رحمة الله علیه

آپ کی کنیت ابوعبدالرحمٰن، نام نامی احمد بن شعیب بن علی نیجیٰ بن سنان بن دینارنسائی ہے۔

''نسأ ''خراسان کا ایک شہر ہے جوشہر مُر و کے قریب ہے اور روس میں واقع ہے، اسی شہر میں آپ کی ولادت سمالے ہے میں ہوئی، اسی شہر کی طرف منسوب ہوکر''نسائی'' کہلاتے ہیں۔

منا قب

ہے۔۔۔۔۔۔[ا] زہدوتقو کی میں آپ ضرب المثل تھے،صوم داؤدی کے پابند تھے۔

☆.....[۵] حقوق کی ادائیگی میں بہت مختاط تھے، چار بیویاں اور دو

ہر شم کی احادیث اس میں موجود ہیں، اس پر اس حاکم نے عرض کیا کہ ایک ایسی کتاب لکھئے جس کی تمام احادیث سیحے ہوں، ان کی اس درخواست پر امام موصوف نے سنن کبر کی سے احادیث سیحے منتخب کی اور اس کا خلاصہ تیار کیا جس کا نام مجتبی رکھا، اسی کوسنن صغر کی کہا جاتا ہے اور آج کل سنن نسائی کے نام سے مشہور ہے۔ [بستان الحدثین ر ۱۸۹]

فضائل

کسس[۱] محدث ابن الاحمرُّ نے بعض کمی شخ کا قول نقل کیا ہے، کہ یہ اس فن کی تمام مصنفات سے افضل ہے اور اسلام میں اس کے مانندکوئی کتاب نہیں، تاہم یہ فضیلت صحیحین کے علاوہ ہے۔

کہ ہے۔۔۔۔[۲] محدث ابوالحن معافریؒ (متوفی سومیم ہے) فرماتے ہیں کہ تمام محدثین کے مجموعہ احادیث پرنظر ڈالو گے تو اندازہ ہوگا کہ امام نسائی نے جس کی تخریج کی ہوگی وہ دوسروں کی بہنست صحت سے زیادہ قریب ہوگی۔ [محدثین عظام ۱۳]

تعدادروايات

سنن نسائی کی کل روایات ر ۲۱ ۱۵۷ ہے۔

با ندی تھیں۔

ہے۔....[۲] حسن سیرت کے ساتھ حسن صورت کے بھی مالک تھے، چہرہ نہایت روشن رنگ نہایت سرخ وسفید، بڑھا پے میں بھی تروتازہ نظر آتے،عمدہ قیمتی لباس زیب تن فرماتے۔

علمى منقبت

امام حاکمٌ فرماتے ہیں کہ میں نے دار قطنیؒ سے سنا کہ امام نسائیؒ جرحِ رواق، فن حدیث فن تقید اور احتیاط میں اپنے معاصرین سے کہیں فائق تھے۔
علامہ ذہبیؒ فرماتے ہیں: امام مسلم، امام ابود اود، امام ترمذی کے مقابلہ میں امام نسائی علل حدیث اور فن اساء الرجال میں زیادہ ماہر تھے، اور امام بخاریؒ وابوزرعہؓ کے ہمسر تھے۔ [محدثین عظام سماء]

نسائى شريف

وجه تاليف

امام موصوف نے سب سے پہلے حدیث کی ایک اہم کتاب سنن کبریٰ کہا گاہی ، جب مقام رملہ کے امیر نے دیکھی تو حضرت سے بوچھا کہ کیااس کی متمام احادیث صحیح ہیں؟ آپ نے ارشاد فر مایا کہ تیجے بھی ہے اور حسن بھی ، بلکہ

نسخ

اس کے راوی ابن السنی ہیں، ان کی کنیت ابوبکر، نام احمد بن محمد بن اسحق ہے، آپ کی مشہور کتاب عمل الیوم واللیلہ ہے۔ [محدثین عظامر الا]

إفات

امام نسائی فلسطین سے ۸ارمیل کے فاصلہ پر واقع مقام رملہ ۲۰۲۲ ھ میں منتقل ہو گئے تھے اور چونکہ وہاں بنوامیہ کی طویل حکومت کے سبب خارجیوں کا چرچازیادہ تھا،اس کئے ۲۰۰۲ ھیں دمشق تشریف لے گئے،اور وہاں حضرت علی کے مناقب میں ایک کتاب تصنیف فرمائی ،اس کے بعد آپ کی خواہش بیہ ہوئی کہ اس کتاب کو جامع دمشق میں سنائیں، کیونکہ وہاں کے لوگ سلطنت بنی امید کی وجہ سے خوارج کی طرف مائل تھے، ابھی آپ نے کچھ حصہ سنایا ہی تھا کہ ایک شخص نے کھڑے ہوکر بیاعتراض کیا کہ آپ نے حضرت امیر معاویه رضی الله عنه کے متعلق بھی کچھ لکھا ہے؟ فر مایا کہ حضرت معاویدرضی اللہ عنہ کو یہی کافی ہے کہ ان کونجات مل جائے ، لہذا ان کے کیا مناقب بیان کروں بعض کہتے ہیں کہ پیکلمہ بھی کہا کہ میرے نزدیک ان کے مناقب بیان کرنا ٹھیک نہیں ہوگا،مزید کچھ باتیں عرض کیں،جس سے لوگوں

نے تشیع کی طرف منسوب کیا اور لاتیں مارنا شروع کیں ، آخرا تنا مارا کہ آپ نیم جان ہوگئے ، خادم ان کواٹھا کر گھر لائے ، انہوں نے فر مایا کہ مجھے ابھی مکہ مکر مدلے چلو، وہاں جا کر مروں یا راستہ میں مروں ، غرض کہ مکہ بہنچ کر انتقال ہوا اور صفا مروہ کے درمیان مدفون ہوئے ۔ بعض کا خیال یہ ہے کہ راستہ میں ہی انتقال ہوا ، وہاں سے مکہ لے جا کر تدفین ہوئی ۔ تاریخ وفات سار صفر المظفر سامیں ہے۔ [بستان المحدثین ر ۱۹۹۔ سیراعلام النبلاء الر ۱۹۷۔

خصوصبات

ہے۔۔۔۔[۱] اس کتاب کی تر تیب فقہی ابواب کے موافق ہے کیکن حسن تر تیب کے لحاظ سے بہت بلند پایہ کتاب ہے۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] مختلف مسائل کو ثابت کرنے کیلئے ایک روایت کی جگہ ذکر فرماتے ہیں جیسا کہ امام بخاری کا طریقہ ہے۔

ہے۔۔۔۔۔[۳] مجھی جھی حدیث کے نقل کرنے کے بعداس کے مرسل و متصل ہونے کی طرف بھی اشارہ کرتے ہیں۔

کے سے ہونے کی طرف بھی استارہ کرتے ہیں۔ اشارہ کرتے ہیں۔

لا ساره] حدثنااوراخبرنامین فرق کرتے ہیں۔

امام ابن ماجبر حمة التدعليه

آپ کی کنیت ابوعبداللہ، نام نامی محمد بن زید بن عبداللہ ابن ماجہ قزوینی ربعی ہے، ربیعہ ایک قبیلہ کا نام ہے اور قزوین ایک شہر کا نام ہے جوعراق میں ہے یا ایران میں۔

ولادت: <u>٩٠٢</u> ه مطابق <u>٨٢٨</u>ء مين هوئی، ١٢ رمضان <u>٣٢٢ ه</u> کو ٨٢ رسال کی عمر ميں وفات پائی۔

ابن ماجبه

ابن ماجہ سے مشہور ہونے کی چندوجہ بیان کی جاتی ہے:

ہوئے ۔۔۔۔۔[۱] آپ کے دادا کا نام ماجہ تھا، ان کی طرف نسبت کرتے ہوئے ابن ماجہ کہا جاتا ہے۔

☆[۲] ماجد آپ کے والد ما جد کا لقب تھا، ان کی طرف منسوب تھے۔
 ☆[۳] ماجد آپ کی والدہ کا نام تھا، یہی قول زیادہ تھے۔

مناقب

ابویعلی خلیلی فرماتے ہیں کہ ابن ماجبہ بلند درجہ کے ثقبہ متفق

ہیں اور کے ہیں اور اختلاف الفاظ کو طرق احادیث کی خوب وضاحت کرتے ہیں اور اختلاف الفاظ کو کھوظ رکھتے ہیں۔

کے ۔۔۔۔۔[2] علل حدیث میں امام نسائی کوغیر معمولی ملکہ حاصل تھا اسی کے بہت کے بیا اوقات علل حدیث پر بھی بحث کرتے ہیں اور بیاس کتاب کی بہت بڑی خصوصیت ہے۔

کردیتے ہیں، نیز راویوں کے اساء، القاب اور کنیت کے ابہام کو دور کردیتے ہیں، نیز راویوں کے تفر دومتا بعت یا عدم متا بعت ،ساع ،عدم ساع وغیرہ کی صراحت بھی کردیتے ہیں۔ [الفوز السمائی مقدمہ نسائی مترجم سم

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ● ●

کتب مدیث سے بے نیازی ہوجائیگی۔

یہ کتاب اختصار وعدم تکرار میں بےنظیراور بے مثال ہے۔

امام ابوزرعه کے بقول: اس کتاب میں کوئی حدیث نہایت ضعیف اور

موضوع نه هوگی - [اعلام النبلاء ر ۱۹۱۲]

محدث ابوالقاسمُ تاریخ قزوین میں لکھتے ہیں: حفاظ حدیث ابن ماجہ کی کتاب کو صحیحین ،سنن ابوداؤد ،سنن نسائی کے برابر کہتے ہیں، اور اس کی

روایات سے استدلال کرتے ہیں۔ [علم حدیث اور ابن ماجبر ۱۲۸]

ابن کثیر ٔ فرماتے ہیں: یہ کتاب امام ابن ماجبہ کے علم وعمل ، تبحرفن ، اور اصول وفروع میں ان کی اتباعِ سنت کو بتاتی ہے۔

تعدادروايات

ایک لا کھا حادیث سے چار ہزاراحادیث کا پیمجموعہ مرتب فرمایا۔

نسخه

چند شاگردوں سے ان کی روایات کا سلسلہ پھیلا، ان میں سب سے زیادہ حافظ ابوالحن القطال کا نسخہ ہے، بہت ہی زیادہ عابد و زاہداور صائم الدھر تھے، نمک روٹی سے افطار کرلیا کرتے تھے۔ [ظفر الحصلین ر ۱۹۷]

علیہ اور قابل احتجاج ہیں، آپ کو حدیث اور سند حدیث میں پوری معرفت حاصل ہے۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] مؤرخ ابن خلکان فرماتے ہیں: آپ حدیث کے امام تھاوراحادیث کے تمام متعلقات سے واقف تھے۔

سے آراستہ تھے۔ اور تمام علوم سے آراستہ تھے۔

ابن ماجه شريف

فن حدیث کی بیا ایک اہم کتاب ہے جب اس کتاب کی تالیف سے فارغ ہو گئے تو مشہور محدث امام ابوزر عدر گی خدمت میں پیش کیا تو اس کو د کھے کر محوجیرت ہو کر کہنے لگے اگر بیہ کتاب لوگوں کے ہاتھوں میں پہنچ گئی تو اس دور کی اکثر کتابیں معطل ہوجا ئیں گی ،اس کو پانچویں صدی کے اخیر میں صحاح ستہ میں شامل کیا گیا ، اس کا اسلوب اور ابواب کی فقہی رعایت ، انتخاب روایت اور تر تیب احادیث نے اس کتاب کی اہمیت کو کافی بڑھایا ہے۔

فضائل

اس کی تالیف سے فارغ ہونے کے بعدمشہور محدث امام ابوزرعہ گی خدمت میں جب پیش کیا تواس کود کھے کرفر مایا کہ اس کی اشاعت کے بعدا کثر

امام ما لك رحمة الله عليه

آپ کی کنیت ابوعبدالله، لقب امام دارالجرة، نام نامی مالک بن انس

ولادت: هم همایک قول کے مطابق ۹۳ ہے، اور بعض نے اسی کورانح قرار دیا ہے، حضرت شاہ ولی اللہ محدث دہلوئ نے لکھا ہے کہ امام مالک شکم مادر میں خلاف عادت تین سال رہے۔ [بستان المحد ثین ر ۳]

منا قب

ای سفیان بن عیدید فرماتے ہیں: ہم لوگ امام مالک کے سامنے کیا چیز ہیں؟ ہم توان کے نقش قدم کی پیروی کرتے ہیں۔

المنے کیا چیز ہیں؟ ہم توان کے نقش قدم کی پیروی کرتے ہیں۔

المنے کیا چیز ہیں؟ ہم توان کے نقش مہدی فرماتے ہیں: روئے زمین پرامام مالک سے بڑھ کر حدیث نبوی کا کوئی امانت دارنہیں۔

ہے:علماء کے درمیان ما لک ستارہ کئی خرمایا کرتے تھے:علماء کے درمیان ما لک ستارہ ہیں۔ ہیں۔

توکس کی یادکرنی جیا ہے ، تو فرمایا کہ مالک بن انس کی۔ توکس کی یادکرنی جیا ہے ، تو فرمایا کہ مالک بن انس کی۔

خلاصةمضامين

ا تباع سنن رسول الله صلى الله عليه وسلم سے شروع ہوكر باب صفة الجنة پر ختم ہوتی ہے، فقہی ترتیب پرعبادات واحكام كے بارے میں حدیثیں جمع كی گئی ہیں۔

خصوصيات

ای عدم نگرار:اس کتاب میں نگرار حدیث بالکل نہیں، یہامتیاز صحاح ستہ میں کسی کو حاصل نہیں۔

اس میں بہت سی احادیث الیمی ہیں جو صحاح ستہ میں نہیں ہیں۔ ہیں، تقریباً ایک ہزار روایات اس قسم کی ہیں۔

لا اس میں یانچ روایات ثلاثی ہیں۔

ﷺ ہتن حدیث جامع ہے یعنی عنوانات مقررہ پرا کثر و بیشتر احادیث مخضرلائی گئی ہیں۔

ہیں۔ ﷺ [۵] راویانِ حدیث کے وطن و مقام کی تعیین بھی کرتے ہیں۔ ﷺ: متقدمین میں بعض حضرات صحاح ستہ میں سنن ابن ماجہ کو ہی قرار دیتے تھے،اور بعض مؤطاما لک کوصحاح ستہ میں شار کرتے تھے۔

[محدثین عظام ر ۱۳۳]

مؤطاما لك

وجه تاليف

منصور بادشاہ نہایت ہی علم دوست شخص تھا، اس نے امام مالک سے گذارش کی کہ اب اسلام میں ہم سے اور آپ سے زیادہ جانے والا کوئی باقی نہیں رہا، میں تو خلافت کے جھگڑے میں پڑگیا، آپ کوفرصت وموقع ہے لہذا ایسی کتاب لکھ دیں جس سے لوگ فائدہ اٹھا ئیں، البتۃ اس میں حضرت ابن عرش کے تشدد واحتیاط سے گریز کریں، اور عباس کے جواز اور حضرت ابن عرش کے تشدد واحتیاط سے گریز کریں، اور لوگوں کیلئے تصنیف و تالیف کا نمونہ قائم کردیں، حضرت امام مالک فرماتے ہیں بخدامنصور نے یہ باتیں کیا کہیں تصنیف کا طریقہ ہی سکھلا دیا۔

ایس بخدامنصور نے یہ باتیں کیا کہیں تصنیف کا طریقہ ہی سکھلا دیا۔

ایظفر الحصلین ریم میں ماجہ اور علم صدیث ریم اللہ المیں المیں المیں المیں المیں المیں المیں المیں المیاں میں ماجہ اور علم صدیث ریم المیں المیں المیں المیں المیان میں ماجہ اور علم صدیث ریم المیں المیان میں میں المیان المیں المیں المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیں المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیں المیان المیں المیان المیان المیں المیان المیان المیں المیان المیں المیان المیان المیان المیں المیان المیں المیان المیں المیان المیان المیان المیان المیان المیان المیں المیان المیان

زمانئة تاليف

قرائن وشواہد کی بنا پر اندازہ سے کہا جاسکتا ہے کہ خلیفہ منصور (متوفی مائن وشواہد کی بنا پر اندازہ سے کہا جاسکتا ہے کہ خلیفہ واصل بحق موگئے، اور ان کے فرزندمہدی تخت نشیں ہوئے جس کے ابتدائی دور میں بیہ

ہے۔....[۵] امام ابوطنیفہؓ فرمایا کرتے تھے: میں نے امام مالک ہے زیادہ جلداور تیج جواب دینے والانہیں دیکھا۔

کا متیازی شان بیہ کہ آپ کا مولد و مسکن مدینة الرسول صلی اللہ علیہ وسلم ہے، اور بیخ صوصیت بھی حاصل رہی ہے کہ اس وقت مدینہ منورہ مرکز علم وفن بناہوا تھا، مما لک اسلامیہ کے مشائخ خود آستانهٔ نبوی کے حاضر باش تھے، اس لئے امام مالک کو مدینہ منورہ سے باہر جانے کی ضرورت پیش نہیں آئی۔

کے[ک] آپ میں محبت نبوی کا حد درجہ غلبہ تھا، یہی وجہ ہے کہ باو جودضعف و کمزوری کے مدینہ منورہ میں نہ تو کسی جانور پر سوار ہوئے اور نہ کبھی جوتے پہن کر چلنے کی ہمت کی۔ [بستان المحد ثین ر ۱۳]

ہے۔۔۔۔[۸] درس حدیث کا بہت اہتمام کرتے ، عسل کرتے ، عمدہ کباس پہنتے ،خوشبولگا کر بیٹھتے ، کبھی پہلونہ بدلتے ، ایک دفعہ ۱۲ مرم تبہ بچھونے ویک مارامگر درس حدیث کے انہا ک میں کوئی فرق نہیں آیا۔[بتان الحدثین ر ۲۵]

إفات

۲۲ردن حالت مرض میں رہے، <u>9 کے ا</u>صمیں آپ کی وفات ہوئی ، جنت البقیع میں م**دن**ون ہوئے۔

پُ تالیف کمل ہوئی۔ [ابن ماجہاورعلم حدیث ر ۱۸۳] 🐇

وجبرتسمييه

مؤطا: توطیةٔ سے شتق ہے، لغوی معنی روندنے ، تیار کرنے ، نرم وسہل بنانے کے ہیں، مؤطا کے معنی سہل ونرم کیا ہوا ، وجہ تسمیہ بیہ ہے کہ اس کو مرتب کر کے لوگوں کیلئے فہم احادیث کوآسان کر دیا۔

فضائل

ام الصحيحين كهلاتي *--*-

ه حضرت شاہ ولی اللہ محدث دہلوگ فرماتے ہیں کہ کتب حدیث میں مؤطاسے اقوی کوئی کتاب نہیں۔

ه حضرت امام ما لک ؓ نے جب تالیف شروع کی تو ہررات زیارت نبوی سے مشرف ہوتے رہے۔

ه حضرت مولا نارشیداحم گنگوهی فرماتے ہیں: اگرمؤطا کو در دِز ہ میں مبتلاعورت کے سرمانے رکھ دیاجائے تو بچے جلد پیدا ہوجائے۔

تعدا دروايات

۱۷۶ روایات بین، جن میں مند و مرفوع ۲۰۰ مرسل ۱۳۲۔

موقوف ۲۱۳ ـ تا بعین کے اقوال وفتاویٰ ۲۸۵ ـ

نسخه

مؤطاما لک کا جونسخہ ہمارے یہاں رائج ہے وہ امام مالک کے شاگر دیجیٰ بن یجیٰ اندلسیؓ سے منقول ہے۔

خصوصات مؤطاما لک

باب وقوت الصلوة سے شروع ہوکر باب ماجاء فی اساء النبی صلی الله علیہ وسلم پریہ کتاب ختم ہوتی ہے۔ احکام وعبادات اور معاملات پر شتمل احادیث ہیں۔ ﷺ۔۔۔۔[۱] فقهی ترتیب کے لحاظ سے اوائل کتب میں اس کا شارہے۔ ﷺ۔۔۔۔[۲] مؤطامیں صرف اور صرف صحیح حدیثیں ہیں۔

لا السام وطاكے بھی رواۃ محازی ہیں۔

﴿ المام ما لكُ بَهِى فرماتے بين: "هى السنة اللتى الاختلاف فيها عندنا كذا و كذا" يعنى وه سنت جس كے بارے ميں كوئى اختلاف نہيں، يہ جملہ ان مسائل كے متعلق نقل فرماتے ہيں جن مسائل مين اہل مدينہ كا اتفاق ہو۔

كسي[۵] اگركسي مسكه مين ابل مدينه كااختلاف موتوسب سے قوى

امام محمر رحمة التدعليه

آپ کی کنیت ابوعبداللہ، نام نامی محمد بن حسن شیبانی ہے۔ ولادت: آپ کی ولادت سیس ہوئی۔ وفات: ستاون سال کی عمر میں ۱۸۹ھ میں ہوئی۔

شیدان: ایک قول کے مطابق آپ کے قبیلہ کا نام ہے اور دوسرے قول کے مطابق میں نہوں کے مطابق میں ہے اور دوسرے قول کے مطابق میں میں ایک خلام تھے، آپ کے والد دمشق کے شہر حرب کے رہنے والے تھے، مگر پھر والد صاحب عراق کے شہر واسط منتقل ہوگئے تھے اسی شہر میں آپ کی ولا دت ہوئی تھی۔

مناقب

﴿ الما شافعی قرمایا کرتے ہے: امام محمد سے زیادہ حلال وحرام، علل حدیث، اور ناسخ ومنسوخ کا جانے والا میرے علم میں کوئی شخص نہیں۔
 ﴿ المام ذہبی قرمایا کرتے: امام محمد علم فقہ میں سمندر ہیں۔
 ﴿ المام خیر علم فقہ میں سمندر ہیں۔
 ﴿ المام خیر آن کا عالم میں نے کسی اور کوئہیں دیکھا۔

امام احمر على في يوجها كه مسائل فقهيه آب في سيكس

اورراجح قول اختیار کرتے ہیں۔

ہے۔۔۔۔[۲] باب کے تحت ان مسائل کو بیان کرتے ہیں جواس سے مناسبت رکھتے ہوں۔ نیز اپنے اجتہادات بھی نقل کرتے ہیں، جب کسی مناسبت رکھتے ہوں۔ نیز اپنے اجتہادات بھی نقل کرتے ہیں تو" بلغنی "کا صیغہ صدیث کے مجموعہ سے کسی روایت کا انتخاب کرتے ہیں تو" بلغنی "کا صیغہ استعال فرماتے ہیں۔ [محدثین عظام ۸۲]

 سات دن بعد دوبارہ حاضر ہوئے امام صاحب ؓ نے کہا کہ میں نے تو کہا تھا کہ حفظ کر کے آیا ہوں۔ امام صاحب ؓ کی خدمت میں چارسال تک رہے اور خاص کرعلم فقہ سے استفادہ کرتے رہے، خدمت میں چارسال تک رہے اور خاص کرعلم فقہ سے استفادہ کرتے رہے، امام صاحب ؓ کے وصال کے بعد امام ابو بوسف ؓ کی خدمت میں حاضر ہوئے، ان سے بھی فقہ حاصل کیا، نیز امام مالک ؓ کی خدمت میں حاضر ہوکرفن حدیث میں مزید مہارت بیدا کی اور قریباً سات سور وایات ان سے اخذ کی ، امام مالک ؓ کی خدمت میں تین سال رہے۔ السان المیز ان ۵ مراسات کی المتر کے المتر کی خدمت میں تین سال رہے۔ السان المیز ان ۵ مراسات کو المتذکرۃ المحد ثین آ

وفات

ستاون سال کی عمر میں <u>۱۸۹</u>ھ میں رخصت ہوئے اور شہر'' رَی'' میں مدفون ہوئے۔

وفات کے بعد

وفات کے بعدایک ابدال نے آپ کوخواب میں دیکھا اور پوچھا کہ کیا حال ہے تو فر مایا کہ اللہ پاک نے فر مایا کہ اگر تمہیں عذاب دینے کا ارادہ ہوتا تو میں تمہیں میلم عطانہ کرتا۔ میں نے پوچھا امام ابو یوسف گہاں ہیں؟ فر مایا کہ مجھ سے بلند درجہ میں ،اورامام اعظم آن سے زیادہ بلندمر تبہ میں ہیں۔ آتار تخ بغداد ۲۲ ۱۵۲۸ ﴿ سے سیکھے؟ تو فرمایا کہ امام محمدٌ کی کتابوں ہے۔

ایک لا کھ سےزائدمسائل مستنبط کئے،تقریباً ہزار کتابیں تصنیف فرمائی 🐣

[الفوائدالبهيه ر ١٦٣- تاريخ بغداد ٢ر ١٤٣]

خطیب بغدادی لکھتے ہیں کہ امام شافعیؒ فرمایا کرتے تھے کے علوم فقہید میں مجھ پرسب سے زیادہ احسان جس شخص کا ہے وہ محمد بن حسن ہیں۔[تاریخ بغداد ۲۲ ماے]

[مزيدمنا قب كيلئ ملاحظه موتاريخ بغداد: صر ١٩٩ تا١٥]

امام اعظم کی بارگاہ میں

امام صاحب کی خدمت میں حاضر ہوکر پوچھا کہ کوئی نابالغ جب عشاء پڑھ کرسوئے اور فجر سے پہلے بالغ ہوجائے تو کیا عشاء دہرانی ہوگی؟ امام صاحب نے فرمایا کہ ہاں دہرانی ہوگی، اسی وقت ایک جانب جا کرنماز دہرائی اس پرحضرت امام اعظمؓ نے فرمایا کہ انشاء اللہ بیلڑکا نہایت ہونہار اور با کمال ہوگا۔ پچھ دنوں کے بعد جب شرف تلمذ کا ارادہ ہوا اور امام صاحب کی خدمت میں حاضر ہوئے تو امام صاحب ؓ نے فرمایا کہ پہلے قرآن کریم حفظ کر لو پھر آؤ، میں حاضر ہوئے تو امام صاحب ؓ نے فرمایا کہ پہلے قرآن کریم حفظ کر لو پھر آؤ،

جب کسی موضوع پر کتاب کسی جاتی ہے اوراس میں مختلف مسائل کو مختلف عنوان پر تقسیم کر کے بیان کیا جب اتا ہے مثلاً کتاب الطہارة ، کتاب الصوم ، کتاب العتاق وغیرہ ،ان تمام عنوانات کے لحاظ سے کتاب کی خداد لکھ دی جاتی ہے، اسی طرح یہاں بھی ہے۔[تذکرة المحدثین ۱۲۷۸]

کسی نے خواب میں دیکھا تو یو چھا کہ نزع کے وقت آپ کا کیا حال تھا؟ آپ نے فرمایا کہ مکا تب کے مسائل پرغور کرر ہاتھا مجھے روح نکلنے کی خبر ہی نہ ہوئی۔ [تاریخ بغداد ۲۲/۱۵]

مؤطاامام محكر

حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلویؓ کے بقول مؤطا امام مالک کے سولہ انسخے سے لیکن دنیا میں صرف دو نسخے مشہور ہوئے ایک امام محمد کانسخہ اور ایک کی بن بچی اندلسی کا، گویا اصلاً مؤطا امام محمد نے اس مجموعہ میں صرف امام مالک مستقلاً تصنیف نہیں ہے لیکن چونکہ امام محمد نے اس مجموعہ میں صرف امام مالک سے مسموع روایات پراکتفانہیں کیا بلکہ ایک سو پچھتر روایات دوسر سے شیوخ سے فقل فرمائی ہیں اس بنا پر مؤطا امام محمد کے نام سے مشہور ومعروف ہوگئ۔ اسی بنا پر بعض محققین اس کومؤطا امام مالک روایة عن محمد کہتے ہیں۔

[بستان المحدثين/ اا]

اندازتر تبيب

حضرت امام ما لک کی خدمت میں تین سال سے کچھ زائد رہ کر مدینہ منورہ والپس تشریف لائے اور اپنے وطن میں اس کی ترتیب دی، انداز ترتیب بیہے: سب سے پہلے ترجمۃ الباب کے تحت امام ما لک کی روایت ذکر کرتے

ہیں، اگروہ مسلک حنفی کے مطابق ہوتو اس کے بعد "به ناخذ "فرماتے ہیں اور الرخلاف ہوتو تو جیہ ذکر کر کے اپنی مشدل روایت واثر لاتے ہیں، اور بسا اوقات ائمہ کے اقوال بھی نقل کرتے ہیں، اور قیاس بھی ذکر کرتے ہیں، اور خاص بات یہ کہ جس قتم کی روایت (مرفوع یا موقوف) امام مالک کی مشدل ہوتی ہے ان کے جواب میں اسی درجہ کی روایت نقل کرتے ہیں۔

تعدادروايات

ایک ہزاراسی روایات ہیں، جن میں ایک ہزار پانچ روایات امام مالک سے، ایک سونچ میں ایک ہزار پانچ روایات امام مالک سے، ایک سونچ میں سات امام اعظم سے اور جار امام ابو یوسف سے منقول ہیں۔

خصوصات

عبادات واحکام اور فقہی مسائل کیلئے احادیث وآ ثار جمع کئے گئے ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔[۱] ترجمۃ الباب کے بعد سب سے پہلے امام مالک کے واسطہ سے

روایت نقل کرتے ہیں،خواہ روایت موقوف ہویا مرفوع۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] امام مالک سے منقول روایات کے خلاف اگران کا مسلک ہوتو
پھرا ہے مسلک کی متدل روایت بھی نقل کرتے ہیں۔

نقل کرتے ہیں۔

☆...... اپنامذہب مختاران الفاظ میں ظاہر کرتے ہیں:

" و بهذا نأخذ ، و الا فتاء به ، به یفتی ، علیه الفتویٰ ، به یعتمد ﴿ ﴿ اللهِ عَلَمُهُ اللهِ الله

متأخرین احناف کے نز دیک مکروہ تنزیہی مراد ہوتا ہے۔

☆.....[۲] جب لفظ" ينبغي" ذكركرين تواس مين سنت وواجب دونوں

شامل، جبکه متأخرین کے نزدیک اس سے صرف سنت ومستحب مراد ہوگا۔

ك[∠] لفظ "اثر" بولكر حديث مرفوع وموقوف دونو ل مراد ليتي بير ـ

العضموا قع برآ ثاروا خبار كولفظ" بلغنا" سے ذكر كرتے ہيں۔ 🖈 🚓 🖺

المرتع عداننا "اور" اخبونا " میں فرق ملحوظ نہیں کرتے ، بلکہ ہرجگہ

× ''اخبرنا'' ہی کہتے ہیں۔ ×

ہے.....[• ا] مؤطاامام مالک میں ستر ہ الیبی روایات ہیں جن پر مالکیہ کاعمل نہیں ،مگر اس کی وجہ نہیں لکھی ، جبکہ مؤطا امام محمد میں الیبی روایت کے بعد

﴾ معمول بدروایت بھی نقل کردی ہے۔ ﴾

ﷺ[۱۱] اس میں جوحدیثیں امام مالک ﷺ مروی ہیں وہ سب امام محکر گئے سے مروی ہیں وہ سب امام محکر گئے سے مروی ہیں وہ سب امام محکر کے اس تین سال رہ کر بلا واسط سنی ہیں۔

[ظفرالحصلین ر ۹۸]

امام طحاوى رحمة اللدعليه

آپ کی کنیت ابوجعفر، نام نامی احمد، والد ما جد کااسم سامی محمد ہے، ملک مصر میں ایک بستی کا نام ''طحا'' ہے جس کی طرف منسوب ہوکر''طحاوی'' کہلاتے ہیں۔

ولادت: آپ کی ولادت کس میں ہوئی اس میں مختلف اقوال ہیں،
سمعانیؓ نے ۱۲۹ھ بتلایا ہے، علامہ عینی ، حافظ ابن کثیر نے اسی کوتر جیج دی
ہے،اس لحاظ سے امام بخاریؓ کی وفات کے وقت امام طحاویؓ کی عمر ۲۷ رسال
رہی ہوگی، کیونکہ امام بخاری کی وفات ۲۵۲ھ میں ہوئی ہے، امام طحاویؓ کی
وفات ۱۲۲ھ میں بعمر ۹۲ رسال ہوئی۔ [بستان الحد ثین رہم،]

منا قب

ﷺ[ا] علامه ابن عبدالبرَّ: امام طحادیٌ تاریخ وسیر کے بڑے عالم مذاہب ائمہ سے واقف تھے۔

☆ [۲] علامه سمعانی: امام طحاویؓ او نیچ درجه کے ثقه، فقیه و عالم

میں دیکھاتھا کہ ماموں ہمیشہ امام ابوحنیفہ کی کتابیں مطالعہ میں رکھتے ہیں، ان سے استفادہ کرتے ہیں، اسی لئے میں اس کی طرف منتقل ہوگیا۔

[انوارالبارى الر ٢٠، مقدمه معانى الاحبار ١٩]

علامہ کوٹریؒ نے الحاوی فی سیرۃ الا مام طحاوی میں یہ بھی نقل کیا ہے کہ ماموں کود کیھ کرمیں نے خود بھی امام صاحب کی کتابوں کا مطالعہ شروع کردیا، اوران کی کتابوں نے مجھے مسلک حنفی کا گرویدہ بنادیا، جس طرح ان کتابوں نے میرے ماموں کو بہت سے مسائل میں امام ابوحنیفہ کی طرف مائل کردیا تھا۔ [الحاوی ر ۱۲۔ بحوالدانوارالباری ر ۲۰]

بعض حضرات نے بے سنداور خلاف واقعہ بات نقل کی ہے، مثلاً حافظ ابن حجر ؓ نے لسان العرب میں نقل کیا ہے کہ ایک دفعہ امام طحاوی ؓ اپنے ماموں سے سبق پڑھ رہے تھے ایک دقیق مسئلہ امام طحاوی ؓ کو بار بار سمجھا یا مگر وہ نہ سمجھ سکے، اس پرامام مزنیؓ نے نگ آ کر غصہ سے فرما یا کہ خدا کی قسم تم کسی قابل نہ ہوسکو گے، اس بات پرامام طحاوی ناراض ہوکر حنی قاضی کے پاس چلے گئے، اور مذہب شافعی ترک کردیا۔

مگرتبدیلی مسلک کی بیروجہ عقلاً سیحے نہیں بلکہ نہم سے بالاتر ہے، کیونکہ جو شخص اس قدر غبی ہو کہ استاد کی بار بارتقریر سے ایک مسلہ نہ ہمجھ سکتا ہو کیا وہ آگے چل کراس قدراعلی درجہ کا ذہین بن سکتا ہے کہ ان کی کتابوں کے سمجھنے

تھے،اپنامثل نہیں چھوڑا۔

الم علامه ابن جوزيُّ: امام طحاويٌ فقيه وفهيم تھے۔

کسس[۴] علامه ذهبی ٔ: آپ فقیه، محدث، حافظ حدیث، ثقه اور بلند پایدالل علم میں سے تھے۔

کسس[۵] علامه ابن اثیر جزریؒ: حضرت انورشاه کشمیریؒ کے بقول علامه ابن اثیرؒ نے امام طحاویؒ کو مجد دفر مایا، کیونکه پہلے کے محدثین صرف روایت حدیث متناً وسنداً ذکر کرتے تھے، معانی حدیث ، حاملِ حدیث ، دفع تعارض وغیره پر بحث نہیں کرتے تھے جبکہ امام طحاویؒ نے اس نے طرز پر لکھ کر حق اداکر دیا۔ [انوارالباری ۲ سے ۲

امام طحاویؓ کی ایک بڑی خصوصیت ہے تھی ہے کہ صحاح ستہ کے محدثین کے ہم عصرر ہے ہیں جبیبا کہ آر ہاہے۔

تبدیلی مسلک کی وجبہ

امام طحاوی این ماموں امام مزئی کے پاس پڑھتے رہے، امام مزنی اور خودامام طحاوی شافعی المسلک تھے، مگر پھرامام طحاوی نے مسلک شافعی چھوڑ دیا میں اور حنفی ہو گئے ، محمد بن احمد نے امام موصوف سے پوچھا کہ آپ نے اپنے ماموں امام مزنی کی مخالفت کیوں کی اور حنفی مسلک کیوں اختیار کیا؟ فرمایا کہ میں ماموں امام مزنی کی مخالفت کیوں کی اور حنفی مسلک کیوں اختیار کیا؟ فرمایا کہ

خیال بیدا ہوا کہ تقابلی انداز میں کوئی ایسی کتابِ حدیث ہونی چاہئے جوفقہ خفی کے اثبات کے ساتھ ساتھ ملحدین ومنکرین کے شکوک وشبہات کا جواب بھی بن جائے ،اسی داعیہ کے بیش نظر، بہت سے علم دوست احباب نے آپ سے گذارش کی ، آپ نے زمانہ کی ایک ضرورت سمجھتے ہوئے اس کی تصنیف فرمائی۔ [مقدمہ معانی الاحبار]

خلاصةمضامين

عبادات،معاملات اوراحکام کی روایات کا ایک عظیم الشان ذخیرہ ہے، شرعی احکام اور فقہی مسائل کو ثابت کرنے کیلئے احادیث جمع کی گئی ہیں۔

خصوصيات

ای طحاوی شریف میں بکثرت ایسی روایات ہیں جو دوسری کتب صدیث میں نہیں ہیں۔ کتب صدیث میں نہیں ہیں۔

ہے۔۔۔۔۔[۲] ایک حدیث کے مختلف طرق کو جمع کردیتے ہیں، جن سے حدیث میں قوت پیدا ہوجاتی ہے۔

والے بھی بااستعداد علماء کم ہیں۔ [انوارالباری ارسال]

امام طحاویؓ کی اہم خصوصیت ہے ہے کہ صحاح ستہ کے محد ثین کے ہم عصر ہیں جبیبا کہ ذیل کے نقشہ سے انداز ہ ہوتا ہے:

| امام طحاوی کی عمر | سن وفات | ائمه ٔ حدیث |
|-------------------|-----------------|------------------|
| r ∠ | DT07 | امام بخارگ |
| ٣٢ | D 171 | امامسارة |
| ۲٦ | DT <u>C</u> Q | امام ابوداؤر ً |
| ۵٠ | £ <u>7</u> ∠9 | امام تر مذی گ |
| ۷۱ | | امام نسائقً |
| 44 | DT 2 P | امام ابن ماجبه |
| Ir | عر <u>ا</u> ۲۲۱ | امام احمد بن قبل |

طحاوى شريف

بجبرتاليف

امام طحاویؓ کے زمانہ میں بعض ملحدین اور منکرین حدیث ،احادیث میں شکوک وشبہات پیدا کرنے لگے اس وقت بہت سے اہل علم کے دل میں بیہ

صاحب مصانيح رحمة الله عليه

مشکوۃ کی اساس و بنیادمصابیح السنہ ہے اس لئے پہلے مصابیح السنہ کے مواتی السنہ کے مواتی خصر باتیں عرض کی جاتی ہیں۔

کنیت ابومی، نام نامی حسین، لقب محی السنه، والد کا نام مسعود اور دادا کا نام مسعود اور دادا کا نام محمد ہے۔ چونکه آپ کے والد مکرم پوشین بنایا کرتے تھاس بناپران کوفراء کہا جاتا ہے، آپ کے وطن کا نام بغشور ہے جو ہرات ومروکے درمیان واقع ہے، شور کا لفظ محذ وف ہوکر بغوی کہا جاتا ہے۔

ولادت: آپ ۱۳۵۵ هیں پیدا ہوئے ،اور ماہ شوال ۱۲۸ هیں بمقام مرو،وفات پائی،قریباً سی سال کی عمر تھی۔

مناقب

کے اعلیٰ درجہ پر فائز تھے،آپ کا زہد زبان زدھا، یہی وجہ ہے کہ آپ کی اہلیہ کا جب انتقال ہوا تو بہت مال جھوڑ کر مریں کین زہدوقناعت کا بیرحال تھا کہ کچھی نہیں لیا۔

کے[۴] ائمہ جرح وتعدیل کے اقوال بھی نقل کرتے ہیں۔ کے[۵] دلائل احناف کے ساتھ دیگر ائمہ کے دلائل بھی نقل کرتے ہیں،اور پھرمحا کمہ کرتے ہیں کہ اقرب وانسب کون ہے؟

ہیں۔ [۲] مختلف مسائل میں ناسخ ومنسوخ احادیث کوالگ الگ بیان کرتے ہیں۔

کاب وسنت اور عمل اسلاف سے دلائل وشواہد، معمول براطادیث کا قوی اور راجج ہونا ثابت کیا ہے۔

ہے۔۔۔۔[۸] سب سے اہم خصوصیت یہ ہے کہ ہر باب کے تحت '' نظر'' کے ساتھ بحث کی گئی ہے اور بحث ونظر میں قول فیصل بیان کر دیا ہے۔ ہے۔۔۔۔۔۔[۹] متعارض احادیث کے درمیان تطبیق دی ہے اور ہرایک کا الگ الگ محمل کھہرایا ہے۔ [مقدمہ معانی الاحبار ۱۲۲]

☆..... [۲] آپ ہمیشہ باوضور ہا کرتے تھے۔

ہے.....[۳] زہد واستغنا کا بیہ عالم تھا کہ ہمیشہ خشک روٹی پانی میں تر کرکے کھاتے رہے، شاگر دوں نے عرض کیا جسم واعضاء کمز ور ہوجائیں گے د ماغ خشک ہوجائیگا، تو بطور سالن زیون کا تیل استعال کرنے لگے۔

وجه تاليف

جب آپ شرح السنه نامی کتاب لکھ کرفارغ ہوئے تو خواب میں سرکار دو
عالم صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت ہوئی، آپ نے ارشا وفر مایا " أحیاک الله
کما أحییت سنتی" کہ اللہ پاکتم کواسی طرح زندہ رکھے جس طرح تم
نے میری سنت کوزندہ کیا۔ اس منامی بشارت کود کھے کر جذبہ پیدا ہوا کہ بطور
شکر بیحدیث کی کوئی اور کتاب کھنی چاہئے تا کہ مزید سعادت حاصل ہوسکے،
اسی جذبہ کی تحمیل میں آپ نے مصابح السنہ کھی۔

طريقة تاليف

امام محی السنہ نے سات کتب حدیث سے احادیث کا انتخاب کرکے میہ مجموعہ تیار فر مایا، اپنی اس کتاب میں ترتیب کے لحاظ سے احادیث کو دوقتم پر منقسم فرمایا:

قتم اول میں بخاری اور مسلم کی روایات جمع فرمائی، اور اس کاعنوان بحاح رکھا۔

قتم ثانی میں سنن خمسه تر مذی ، ابو داؤد ، نسائی ، ابن ماجه اور دارمی کی احادیث جمع فر مائی اوران احادیث کیلئے الحسان کاعنوان رکھا۔

الحسان بیان کی اپنی اصطلاح ہے در نہ توحس کی جمع حسان آتی ہے جس کامفہوم محدثین کے بہاں کچھاور ہے۔ [مرقات ۲/۲-۴]

جن مذکورہ کتابوں سے احادیث اخذ کی ہے ان میں سند کے مذکور ہونے کی بنا پر امام محی السنہ نے پوری سند حذف کر دی اور اخیر میں حوالہ کی بھی ضرورت محسوس نہیں کی۔

تعدادروايات

۳۸۹۳ ہے۔ جن میں بخاری ومسلم کی ۲۲۳۳ سنن ابوداؤد وتر فدی کی ۴۸۹۳ منن ابوداؤد وتر فدی کی ۴۸۹۳ منن ابوداؤد وتر فدی کی ۴۸۹۳ منا دولیات ہیں، البتہ صاحب کشف الظنون کا خیال ہے کہ کل تعداد ۱۹۷۳ ہے، جن میں ۲۲۵ ربخاری کی ،۸۷۵ رمسلم کی ،۱۵۰ اردونوں کی ، ۱۵۰ اردونوں کی ، ۱۵۰ اردونوں کی ۔۔

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ●

صحاح سته تک رسائی نہیں ہوتی۔

وجبرتاليف

چونکہ علامہ بغویؓ نے مصابی السنہ میں ہر حدیث کی سنداور ما خذ دونوں حذف کردیا تھا، حوالہ نہ ہونے کی بناپر تلاش حدیث میں دفت ہوتی تھی اور سند مذکور نہ ہونے کی بنا پر صحت حدیث پر اعتا دنہیں کیا جاسکتا ، اسی بنا پر بعض حضرات نے اس پر تبھر ہ شروع کر دیا تھا، تو خطیب تبریزیؓ کے استاد مکرم ، اور مشکلو ق کے شارح علامہ طبیؓ نے تھم دیا کہ آپ از سرنو اس کی تر تیب دیں ، مشکلو ق کے شارح علامہ طبیؓ نے تھم دیا کہ آپ از سرنو اس کی تر تیب دیں ، ناکہ تلاش حدیث بھی آسان ہواور کتاب کی صحت واہمیت پر بھی حرف نہ آنے بیائے ، چنا نچے استاد مکرم کے تھم کی تعمیل میں انہوں نے نئی تر تیب کیسا تھ مشکلو ق شریف مرتب فر مائی اور جب ان کی خدمت میں پیش کیا تو بہت خوش ہوئے بلکہ شاگرد کی تالیف کی خود ہی شرح لکھ دی جو ' طبی' کے نام سے مشہور ہے۔ ہلکہ شاگرد کی تالیف کی خود ہی شرح لکھ دی جو ' طبی' کے نام سے مشہور ہے۔

زمانهُ تاليف

ابتداکس میں ہوئی اس کا اندازہ تو نہیں ہوسکا، البتہ اس کی تکمیل کی تاریخ معلوم ہے کہ بروز جمعۃ الوداع رمضان عید کا چاند نکلنے سے پہلے کے میں اس کی تکمیل سے فارغ ہوگئے تھے۔ [طبی الرجم]

صاحب مشكوة رحمة التدعليه

نام نامی محمد ، کنیت ابوعبدالله ، لقب ولی الدین ، والد کا نام عبدالله ، نسباً عمری ہیں اور خطیب تبریزی سے مشہور ہیں ۔ آپ شہر '' تبریز'' کی جامع مسجد میں خطیب تنے اس بنا پر آپ کو خطیب تبریزی کہا جاتا ہے۔ ولادت : موصوف کی تاریخ ولادت کے متعلق مؤرخین یا تو خاموش ہیں یا عدم یافت کا تذکرہ کرتے ہیں۔ [طبی ار ۱۹]

مناقب

ہے۔۔۔۔[۱] آپ بلند پایہ خطیب ، فصاحت و بلاغت کے امام ، زہد و
تقویٰ کے پیکراوراپنے وقت کے بے نظیر محدث اور عالم تھے۔

ہے۔۔۔۔۔۔۔۔[۲] آپ کے علم وفضل کا سب سے بڑا شاہ کار'' مشکوۃ
شریف'' ہے جو حدیث کی بنیادی کتاب ہے اور درس نظامی میں اس کے بغیر

خلاصةمضامين

" كتاب الايمان " ئى شروع موكر "ثواب ھذہ الامة " پريہ كتاب ختم موكى ہے۔

عقائد، عبادات، معاملات ، عقوبات و جهاد، اخلاق وآداب ، فتن و علامات قیامت، جنت ودوزخ، شائل نبوی، ذکر انبیاء، منا قب صحابه، فضائل اہل بیت بر مشتمل روایات ہیں۔

دونوں میں فرق

خطیب تبریزیؒ نے مقدمہ مشکو ق میں چودہ وجہ فرق بیان کیا ہے:

خطیب تبریزیؒ نے مقدمہ مشکو ق میں چودہ وجہ فرق بیان کیا ہے:

میں موقوف اور مقطوع روایات بھی ہیں۔

المحاح ہے اور ایات کا عنوان الصحاح ہے اور ایات کا عنوان الصحاح ہے اور ایات کا عنوان الصحاح ہے اور

طريقئة تاليف

امام بغوی نے جن کتب حدیث سے روایات جمع کی تھیں ان کو دو حصوں میں تقسیم کیا ، پہلے حصہ میں بخاری و مسلم کی روایات اور دوسر ہے حصہ میں دیگر کتب کی روایات۔ مصنف مشکو ق نے ان کے عنوان الصحاح اور الحسان کو بدل دیا ، اور ہر باب کے تحت تین فصل قائم کی ، فصل اول کے تحت بخاری و مسلم کی روایات ، فصل ثانی کے تحت ان روایتوں کو جمع کیا جن کو انہوں نے و مسلم کی روایات ، فصل ثانی کے تحت ان روایتوں کو جمع کیا جن کو انہوں نے حسان کے عنوان کے تحت ذکر کیا تھا ، اور تیسری فصل میں اپنی طرف سے روایات کا اضافہ فرمایا۔ [طبی الر ۲۲]

تعدا دروایات

مصانی السند کی روایات ۲۴۸۸ ہیں خطیب تبریزی نے ۱۱۵۱ر روایتوں کا اضافہ کیا ہے۔ کا اضافہ کیا ہے۔

[طبی ار ۲۳]

نسخه

ملاعلی قاریؓ نے لکھا ہے کہ مصنف کے ہاتھ کا لکھا ہوانسخہ مشکلو قر<u>900</u>ھ سے تک موجودر ہااس کے بعد تلف ہوگیا۔

مشکلوة میں فصل اول کا ، اُس میں غیر صحیحین کی روایات کاعنوان الحسان ہے جبکہ مشکلوة میں فصل ثانی کا۔

کت الحسان) کے تحت روایات ہیں جبکہ مشکلوۃ میں سابق دوعنوان کے علاوہ تیسری فصل کا بھی اضافہ ہے۔

ہے۔۔۔۔[۲] تبدیلی حوالہ: صاحب مشکوۃ نے مصابیح کی بعض احادیث کا محص اسے کی بعض احادیث کا محکم کی بعض احادیث کا محل بھی تبدیل کر دیا ہے، بعنی فصل اول کی احادیث میں غیر سیحین کا اس کی وجہ بیہ ہے کہ صاحب مشکوۃ کی تحقیق کے مطابق ان کو فصل اول کی روایت سیحین میں نہیں ملی۔

کی بعض روایت کو حذف کیا ہے، یعنی روایت کو حذف کیا ہے، یعنی جوروایت مکر رتھی اس کو وہاں سے حذف کرکے اس باب میں رکھا جس باب کے ساتھ خاص مناسبت تھی۔

خسس[۸] اختصار حدیث: یعنی مصابیح میں بعض احادیث مفصل اور کمل مذکورتھیں اس روایت کاوہ حصہ حذف کر دیا جو باب کے مناسب نہیں تھا۔

ﷺ مسل مذکورتھیں اس روایت کا وہ حصہ حذف کر دیا جو باب کے مناسب نہیں تھا۔

ﷺ مسل حدیث: مصابیح میں بعض احادیث مختصرتھیں جبکہ وہاں پراس کا کممل ہونا انسب تھا تو صاحب مشکو ق نے اسکی تحمیل کردی۔

ﷺ اختلاف متن: بعض مواقع پر جن الفاظ میں روایت نقل

کی ہے صاحب مشکلوۃ کواصول میں وہ الفاظ نہیں ملے وہاں ان الفاظ کوترک کرکے کتب اصول میں مٰرکورالفاظ پر شتمل روایت کوفل کیا ہے۔

کسس[۱۱] عدم وجدان: مصایح کی بعض روایات کتب اصول میں سرے سے مل نہیں سکی، لیکن دوسری کتاب میں مل گئیں تو وہاں بی عبارت "ماو جدت هذه الروایة فی کتب الاصول و لا فی کتاب الحمیدی" لکھدی ہے۔

کے[۱۲] وجہ نکارت: مصابح میں بعض روایات پرغریب یاضعیف ہونے کا حکم لگایا ہے مگر وجہ ضعف بیان نہیں کی ہے، صاحب مشکوۃ نے اکثر حکم متندائمہ محدثین سے اس کی تائید نقل کردی ہے، مثلاً " قال التو مذی هذا حدیث غریب " یہ مطلب نہیں کہ ضعف وغرابت کی اصل علت و وجہ محکوۃ بیں علت و وجہ مذکورنہیں۔

ہونے کا حکم مذکور نہیں، جبکہ ان کی تلاش کے مطابق وہ حدیث ضعیف تھی تو اس کے ضعف کو بیان کیا۔

۔۔۔۔۔۔ اس بیاض: جہاں حوالہ نہل سکا وہاں بیاض چھوڑ دیا ہے۔ [تخة الرآة مر 22]

● ● ☆ ☆ ☆ ☆ ●

شرح حدیث افتراق امت

ازافادات رازیٔ زمان وغزالی وقت مرشدی واستاذی حضرت حافظ مولا نامحدادریس صاحب کا ندهلوی شخ الحدیث مدرسه جامعها شرفیه لا هور، سابق شخ النفسیر دارالعلوم دیوبند

افتراق امت کی حدیث مختلف طریقوں اور مختلف الفاظ سے مروی ہے، مگر مطلب سب کا ایک ہے۔حضرت عبداللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ عنه سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشا وفر مایا:

" ان بنى اسرائيل تفرقت على ثنتين و سبعين ملةً وتفترق امتى على ثلاث و سبعين ملةً "

ہے۔۔۔۔۔ ترجمہ : تحقیق بنی اسرائیل میں بہتر [27] فرقے ہوئے اور میری امت میں بہتر [27] فرقے ہوئے اور میری امت میں بہتر فرقے ہوں گے وہ سب ناری اور دوزخی ہوں گے مگرایک فرقہ، صحابہ نے عرض کیا یارسول اللہ! وہ فرقہ کونسا ہے جودوزخ سے محفوظ رہے گا؟ آپ نے ارشاد فرمایا کہ فرقۂ ناجیہ ہے اور وہ فرقہ ہے جو میرے اور میرے اصحاب کے طریقہ یر ہوگا۔

موجوده دور میں بیٹارفرقے ہیں، اور ہرفرقہ اپنے آپ کے اہل حق اور نابی ہونے کا مدی ہے، اور ''ماانا علیہ واصحابی'' اپنے او پر ہی چسپال کر رہا ہے، جبکہ کچھ حضرات وہ بھی ہیں جو ائمہ کرام کے فروی اختلاف کو شکوک و شبہات کی نگاہ سے دیکھتے ہیں، حضرت مصنف مدظلہ نے ''افتراق امت'' کی حدیث کی بہترین تشریح فرمائی ہے، اہل حق کا مصداق معین کیا ہے اور ائمہ کرام کے فروی اختلاف کی حقیقت بھی واضح فرمائی ہے۔ [مجمدانعام الحق غفرلہ]

جاننا جاہئے کہاس حدیث میں افتراق سے اصول اور عقائد کا اختلاف مراد ہے،اعمال اورعملیات کا اختلاف مراز نہیں،اس لئے کہ بنی اسرائیل کا اور آپ کی امت کاعملی اور فروعی اختلاف بهتر اور تهتر کے عدد میں منحصر نہیں۔ دنیا کی بداعمالیوں کی کوئی حداور شارنہیں،معلوم ہوا کہ افتراق سے عقائد اور اصول کا اختلاف مراد ہے۔ اور دخول نار کا سبب وہی اعتقاد فاسد ہوگا ، اور امتی سے مراد ،امت اجابت ہے بعنی وہ لوگ جوحضور پر نورصلی اللہ علیہ وسلم پر ا بمان لائے اور آپ کی دعوت کو قبول کیا ،اس لئے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے حدیث میں'' امتی'' فرما کرامت کواپنی طرف مضاف فرمایا، یعنی میری امت، اور اکثر و بیشتر حدیث میں جہاں کہیں بھی امت کواپنی طرف مضاف فرمایا و مال اہل قبلہ اور امتِ اجابت مراد ہے، امتِ دعوت مراد نہیں، اسلئے کہ امت دعوت میں تمام دنیا کے کا فرشامل ہیں اوران کا عدد بیشار ہے۔ دوم بیر که "الا واحدة" كا استناء بهي اسي پر دلالت كرتا ہے،اس لئے "الا واحدة" كے لفظ سے بيمفهوم موتا ہے كه منشائے نجات اس فرقة ناجیہ کے تمام آ حاداور افراد میں مشترک ہوگا۔ اور ظاہر ہے کہ ایک فرقہ کے تمام افراداعتقادات میں متحد اور مشترک ہوسکتے ہیں مگر ایک فرقہ کے تمام ا فراد کے اعمال اورا فعال میں متحدا ورمشتر ک ہونا ، ناممکن اورمحال ہے۔ سوم به كه حضورا كرم صلى الله عليه وسلم كا فرقهُ ناجيه كي تعريف ميں بيفرمانا

کے '' ماانا علیہ واصحابی'' اس پر دلالت کرتا ہے کہ وہ چیز تمام صحابۂ کرامؓ کے درمیان مشترک ہوگی۔اور بیامر بالبداہت معلوم ہے کہتمام صحابہ کرام میں اییاامرمشترک،جس برتمام صحابه متفق ہوں وہ سوائے عقائد کے اور کوئی شئی نہیں۔عملیات اور فروعی مسائل میں صحابۂ کرامؓ کے مابین بھی اختلاف تھا۔ حضرات صحابهُ كرامٌ ميں جواختلاف تھاوہ فقط فروی اورعملی مسائل میں تھا کہ عبادت کا کون سا طریقہ بہتر ہے، مثلاً نماز میں رفع پدین بہتر ہے یا ترک رفع یدین، آمین اوربسم الله کاجهربهتر ہے یا اخفاء۔اصل نماز میں کوئی اختلاف نه تها، فقط طريقِ ادامين اختلاف تها، هرايك كتاب وسنت كاعاشق تها، هرايك کوفکر بیٹھی کہ عبادت اس طریقہ سے اداکی جائے کہ جواللہ اوراس کے رسول کے نزدیک سب سے بہتر ہو، بیاختلاف فکر ونظر کا اختلاف تھا جو شائبہ کفس اورریا سے پاک تھا،اور کینہ وحسداورا ختصام وجدال سے کوسوں دورتھا، یہی وجہ تھی کہ صحابہ کرام ہاوجودان اختلافات کے بلاتر دّوایک دوسرے کی نماز میں اقتداء کرتے تھے،اور باہمی محبت اور مودّت پر ذرّہ برابراس اختلاف کا کوئی اثر نه تھا،اورایسااختلاف بلاشبەر حمت ہے۔

صحابہ کرام کے اختلاف سے دین پر عمل کرنے کی مختلف صور تیں اور مختلف شکلیں سامنے آئیں۔ غیر منصوص مسائل میں اجتہاد کے طریقے معلوم ہوئے ،امت کیلئے سہولت ہوئی کہ ان نجوم ہدایت میں سے جس کی بھی اقتداء

کریں گے ہدایت پائیں گے۔غرض میہ کہ صحابہ کرامؓ کا باہمی اختلاف فقط فروعی اوراجتہادی مسائل میں تھا،اصول وعقائد میں کوئی اختلاف نہ تھا۔

اسی طرح امام ابو صنیفہ امام مالک امام شافعی اور امام احمد بن صنبل صحابہ کرام کی طرح اصول دین اور عقائد میں متفق تھے اور صحابہ کی طرح فروی اور اجتہادی مسائل میں مختلف تھے، جس طرح تمام انبیائے کرام کا دین ایک ہے اور شریعتیں مختلف ہیں اسی طرح فقہائے کرام کا فروی مسائل میں اختلاف انبیائے کرام کی مختلف شریعتوں کے اختلاف کا نمونہ ہے۔ حدیث میں ہے کہ علماء انبیاء کے وارث ہیں۔

اورجس طرح انبیائے کرام کی شریعتوں کا اختلاف عین رحمت ہے جو بیثار حکمتوں اور صلحتوں اور رحمتوں پر بہنی ہے اسی طرح فقہاء کا فروی مسائل میں اختلاف بھی رحمت ہے۔ یہ تو ناممکن ہے کہ دنیا میں اختلاف نہ ہو، کین دیکھنا یہ ہے کہ وہ اختلاف کیسا اور کس قتم کا ہے، اگر وہ اختلاف اغراض اور نفسانی خوا ہشوں پر ببنی ہے تو بلا شبہ مذموم اور زحمت ہے جیسے اسمبلی الیکٹن میں دو پارٹیوں کا اختلاف جوخو دغرضوں اور کینوں اور عداوتوں کا پورا پورا آئینہ ہوتا ہے، الیکٹن کے اختلاف کوجس لڑائی سے بھی تشبیہ دیدی جائے تو انشاء اللہ دنیا کا کوئی جھکڑا گندگی اور پلیدی میں الیکشن کے اختلاف کے پاسنگ بھی نہ ہوگا۔ اور اگر وہ اختلاف ، اختلاف فکر ونظر ہے جیسے وزراء وارکان دولت اور ہوگا۔ اور اگر وہ اختلاف وہ تو اختلاف کے پاسنگ بھی نہ ہوگا۔ اور اگر وہ اختلاف اختلاف کے باسنگ بھی نہ ہوگا۔ اور اگر وہ اختلاف ، اختلاف فکر ونظر ہے جیسے وزراء وارکان دولت اور

خیرخواہان سلطنت، کسی ملکی مسکلہ پرغور وفکر کرتے ہیں اس وقت بھی رائیں مختلف ہوتی ہیں لیکن بیاختلاف سرا سررحمت ہوتا ہے۔

مختلف انظار وافکار کے جمع ہونے سے مسئلہ کا مالہ و ماعلیہ اور مسئلہ کے تمام اطراف وجوانب اور اس کے تمام پہلوسا منے آجاتے ہیں۔ اور حقیقت واضح ہوجاتی ہے اور مشکلات سے نکلنے کا راستہ نظر آجا تا ہے، ایسی مجلس عجیب مجلس ہوتی ہے، نظر وفکر کی جولان گاہ اور عقل وتد بیر کی نمائش گاہ ہوتی ہے۔ فقہائے کرام کا اختلاف اسی قشم کا تھا۔

صحابہ اور تابعین سے جوعقا کد ثابت ہیں وہ صراحة گتاب اور سنت سے ثابت ہیں ان میں کوئی اختلاف نہیں، اور یہی عقا کد مدار نجات ہیں اور ان ہی پرایمان اور کفر کا فیصلہ ہوتا ہے۔

اصول دین اورعقا کداسلام میں ائمہ کر اربعہ کا کوئی اختلاف نہیں، فروی مسائل میں اختلاف ایسا ہے کہ اندھیری رات مسائل میں اختلاف ہوجائے اور قبلہ کے بارے میں را کیں مختلف ہوجائے اور قبلہ کے بارے میں را کیں مختلف ہوجا کیں تو ایک بیخبر آ دمی بیسو چتا ہے کہ ان میں سے قبلہ کی شناخت میں کون افضل اورا کمل ہے، جو افضل ہوگا اس کا اتباع کرے گا، اورا گرکوئی شخص بہ کہے کہ میں اس وقت تک نماز نہیں بڑھوں گا جب تک بیسب لوگ قبلہ کے بارے میں متفق الرائے نہ ہوجا کیں، تو اس کا صاف مطلب بیہ ہوگا کہ بیشخص نماز بڑھنانہیں

﴿ عِاہِمًا ،نمازنہ پڑھنے کیلئے ایک بہانہ تراشتاہے۔

اسی طرح فقہی اور دینی مسائل میں سمجھنا جا ہے ، جوتمہارے اعتقاد میں سب سے زیادہ علم وہم رکھتا ہواس کی تقلید اور انتباع کرو۔ اگرتم بھار ہوجا وَاور شہر میں متعدد طبیب رہتے ہوں تو ایسے طبیب کا علاج پیند کرو گے جوتمہارے خیال میں سب سے زیادہ علم طب میں ماہر ہوں۔ تم کو یہ اختیار ہے کہ جس طبیب کا جا ہوعلاج کراؤ، مگر یہ اختیار نہیں کہ جارطبیبوں کے تجویز کردہ شخوں میں سے جونسی دواتم کولذیذ معلوم ہواس کو لے لواور باقی کوچھوڑ دو۔

نیز یہ بھی ظاہر ہے کہ ہرطبیب کا طریقِ علاج مختلف ہے، مگراصول طب
میں کوئی اختلاف نہیں، پس اگر کوئی مریض ہے کہ میں اس وقت تک علاج
نہیں کراؤں گا جب تک تمام طبیب ایک فریق پرمتفق نہ ہوجا ئیں گے۔ تو
اہل عقل سمجھ جا ئیں گے کہ بیمریض کا بہانہ ہے، اس بہانہ سے بیمریض اپنا
علاج ہی کرانا نہیں جا ہتا۔ جو مریض اطباء کے اختلاف کو علاج نہ کرنے کا
بہانہ بنا تا ہے تو سمجھ لواس کا انجام سوائے ہلا کت اور موت کے کھنہیں۔

اسی طرح جو شخص میہ کہے کہ میں اس وقت تک دین پڑمل نہیں کروں گا جب تک ابوحنیفہ اور شافعی کا اختلاف ختم نہ ہو جائے۔خوب سمجھ لو کہ بیشخص جدین ہے۔ فقہاء کے اختلاف کو بہانہ بنار ہا ہے، وہ دنیا کا کونسافن ہے جس میں اس فن کے ماہرین کا اختلاف نہ ہو، مسائل طب میں اطباء کا

اختلاف ہے، اور مسائل فلسفہ میں حکماء کا اختلاف ہے، مگرسب جانتے ہیں کہ یاختلاف،اختلاف نظروفکرہے۔اوراییااختلاف عالم کیلئے رحمت ہے۔ اسی طرح فقہائے کراٹم کے اختلاف کو مجھو کہ وہ اختلاف بھی رحت ہے بلکہ اطباء اور حکماء کے اختلاف سے ہزاروں درجہ بڑھ کر رحمت ہے، لہذاکسی شخص کا پیر کہنا کہ میں احکام شرعیہ پر اس لئے عمل نہیں کرتا کہ فقہاء میں اختلاف ہے بعینہ ایسا ہی ہے کہ کوئی مریض ، شدید بیاری میں مبتلا ہواور کوئی طبیباس کیلئے دواتجویز کرے تو وہ مریض پہ کیے کہ چونکہ بعض دواؤں کے گرم اور سر دہونے میں اطباء مختلف الرائے ہیں لہذا میں اس وقت تک علاج نہیں کراؤں گاجب تک اطباء کا پیاختلاف رفع نہ ہوجائے یا کم از کم مجھ کوکوئی شخص یہ بتلادے کہ بیاختلاف کیونکرر فع ہوسکتا ہے۔اختلاف ایک امراز لی اورضروری ہے، جب تک عالم ہےاس وقت تک اختلاف بدستور قائم رہے گا جبيها كهارشادباري تعالى سے:

فرقهٔ ناجیه کی تعین

نبوت ختم ہوگئی اور دین مکمل ہوگیا۔اور حضور پُرنور صلی اللہ علیہ وسلم نے پیشین گوئی فرمادی کہ میرے بعد میری امت میں اختلاف ہوگا اور مختلف فرقے پیدا ہوں گے وہ ناری ہوں گے صرف ایک فرقہ ناجی ہوگا۔اور پیجمی بتلادیا که حق اور صدافت اور نجات کا معیار کیا ہوگا۔ وہ پیہ ہوگا که 'ماانا علیہ واصحابی' مینی جوفرقہ میرے طریقہ پر اور میرے اصحاب کے طریقہ اور نقش قدم پر چلے گاوہ ناجی ہوگا،اسلئے کہ کتاب وسنت کامفہوم اور جوعلوم کتاب و سنت سے ماخوذ ومستفاد ہوں گے وہ وہی ہوں گے جو صحابہ کرام نے سمجھے ہیں۔ ہر بدعتی اور گمراہ اینے فاسدعقا ئد کوایئے زعم اور خیال میں کتاب وسنت ہی سے ماخوذ ہونے کا مدعی ہے۔ لہذا کتاب وسنت کے وہی معانی اور مفاہیم معتبر ہوں گے جوحضرات صحابہ نے سمجھے ہیں،اس کے خلاف کسی مفہوم کا اعتبارنه ہوگا۔ جو شخص صحابهٔ کرامؓ کے خلاف کتاب وسنت کا کوئی مفہوم بیان کرےبس یہی اس کے گمراہ اور بے عقل ہونے کی دلیل ہے۔اگر صحابہؓ نے نہیں سمجھےتو یہ نیم عربی داں اور یہ نیم انگریزی خواں کہاں سے سمجھ گئے؟ پینیم کی قیداسلئے لگائی کہ پوراعر بی دان تو وہی سمجھے گا جوصحابہ اور تابعین اورسلف صالحین نے سمجھا۔اور پوراانگریزی داں جوعر بی سے بالکل بےخبر

الغرض اختلافِ خلق اور اختلافِ کائنات حق تعالیٰ کی قضائے ازلی ہے۔ اس کے قضا کو کوئی رونہیں کرسکتا اور نہ بیکسی کی قدرت میں ہے کہ وہ باہمی اختلافات کور فع کر سکے یا کوئی ایسا طریقہ قائم کردے جس سے ہمیشہ کیلئے اختلاف رفع ہوجائے۔

اگرامور دینیه میں اختلاف ہے توامور دنیویه میں اس سے ہزار درجه بڑھ کراختلاف ہے،لیکن بایں ہمہ کوئی شخص پنہیں کہتا کہ میں دنیا کا کام اس وقت تک نہ کروں گا جب تک تمام لوگ متفق الرائے ہوجائیں، پس اگر فقہاء اورعلاء کے اختلاف آراء کی وجہ سے دین کا ترک جائز ہے تو اہل دنیا کے اختلاف کی وجہ سے پہلے دنیا کا ترک ضروری ہونا چاہئے ۔ پس جس طرح دنیا میں اختلاف آراء کے وقت ،احتیاط کاطریقہ اختیار کرتے ہو اسی طرح مسائل دینیه میں اختلاف کے وقت احتیاط کا طریقہ اختیار کرو۔مثلاً ایک امام کہتا ہے کہ عورت کے ہاتھ لگانے سے وضوٹوٹ جاتا ہے اور دوسرا امام کہتا ہے کہ وضونہیں ٹوٹا۔ایسی صورت میں آپ جس امام کوعلم اور تقویٰ میں بڑھا ہواسمجھیں اس کی پیروی کریں، یا جس میں احتیاط مجھیں اس برعمل کریں۔ کیکن بیرجائز نہیں کہ سرے سے وضوبهی چھوڑ بیٹھیں اور پیر کہنے لگیں کہ جب تک فقہاء متفق الرائے نہیں ہوجائیں گے اس وقت تک میں وضو ہی نہ 🏅 کروں گا۔ بیعذرنہیں بلکہ گریزاور پہلوتہی ہے۔

ہوگا،سواگروہ عاقل ہوگا تو وہ کتاب وسنت کے بارے میں کچھلب کشائی نہ کرےگا۔اس لئے کہ عاقل اور دانااس کتاب کے مطلب بیان کرنے پر بھی جراُت نہیں کرسکتا جس کتاب کی وہ زبان نہ جانتا ہو۔

جس طرح ایک عربی زبان کا فاضل اورا دیب انگریزی قانون کی شرح کے بارے میں لب کشائی نہیں کرسکتا اسی طرح ایک انگریزی داں قرآن و حدیث کی تفسیر برلب کشائی نہیں کرسکتا۔اورمحض ترجمہ دیکھ کراینے کو قانون داں سمجھنا بھی نادان ہونے کی دلیل ہے۔جس طرح رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی اطاعت حق تعالی کی اطاعت کانمونہ ہے اسی طرح صحابہ کرام "نبی کریم صلى الله عليه وسلم كانمونه بين _للهذا جس طرح سنت نبوي اوراسوهُ پيغيبري كو طریقهٔ خداوندی سے جدانہیں کیا جاسکتا اسی طرح اسوۂ صحابہ گواسوہ نبوی سے جدانہیں کیا جاسکتا۔اللہ تعالیٰ کا دین اور اس کے احکام ہم تک ان ہی دو واسطوں سے پہنچے ہیں۔قرآن کریم نبی اکرم صلی اللّٰدعلیہ وسلم اور رسول عظیم کے صحابہؓ کی مدح سے بھرا پڑا ہے، بغیران دوواسطوں کے مانے ہوئے دین باقی نہیں رہ سکتا۔للہذا فرقۂ ناجیہ وہ فرقہ ہوگا جوان دوواسطوں کو مانتا ہو۔ یعنی نبی کریم صلی الله علیه وسلم کی سنت اور صحابهٔ کرامؓ کے طریقه کو مانتا ہو، وہ اہل سنت والجماعت كاگروه ہے، شیعوں نے توصحا بگو بالكل كا فراور گمراہ قرار دیا۔ اور خارجیوں نے صحابۂ کرامؓ کی نصف جماعت کو کا فرقر ار دیا۔ اہل سنت

والجماعت نے سنت نبوی کوبھی لیا اور تمام صحابہ اور اہل بیت کواپنا اسوہ اور قدوہ بنایا۔ اور جن سے اللہ تعالی اور اس کے رسول راضی ہوئے ان سے بیہی راضی ہوئے اور ان کے طریقہ پر چلنے کو اللہ اور اس کے رسول کی رضا اور خوشنودی کا ذریعہ مجھا۔ اللہ تعالی تو صحابہ کرام سے راضی ہے ،قر آن کریم 'دو ضبی اللہ عنہ م' سے بھرا پڑا ہے۔ اگر کوئی بدنصیب ،صحابہ سے راضی نہیں تو صحابہ کرام اللہ عنہ کرام السول کی رضا مندی کی ضرورت نہیں ہیں ، اللہ تعالی کی رضا مندی کے بعد ان کو اور کسی رضا مندی کی ضرورت نہیں ہے۔ بیشخص اپنے لئے سوچے کہ اللہ کوکس طرح راضی کرے گا۔

علاء نے لکھاہے کہ اہل ہو کی اور اہل بدعت کے اصل سرگروہ یہ نوگروہ ہیں:
خوارج شیعہ معتزلہ مرجیہ مشبہ جہمیہ حضراریہ نجاریہ کلا ہیہ بھران نوفرقوں کی شاخیں ہیں جوئل کر بہتر تک پہنچ جاتی ہیں ۔اوران تمام فرقوں کے اعتقادات سے ہٹے ہوئے ہیں ۔اسکے ان کوفرق ضالہ (گراہ فرقے) کہا جاتا ہے۔

امام مجددالف ثانی رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ جن بہتر فرقوں کے بارے میں "کلھم فی الناد" آیا ہے اس سے دوزخ کا دائی عذاب مراد نہیں ،اسلئے کہ دوزخ کا دائی عذاب کفار کے ساتھ مخصوص ہے۔ اور چونکہ یہ بدعتی فرقے سب اہل قبلہ ہیں اس لئے ان کی تکفیر

میں جرأت نہ کرنی چاہئے جب تک کہ دینی ضرور مات کا انکاراوراحکام شرعیہ کے متواتر ات کور دنہ کریں اوران احکام کے جودین سے ضروری طور پر ثابت ہو چکے ہول منکر نہ ہول۔

فائدة جليله

جاننا چاہئے کہ علماء متکلمین نے ان بہتر [27] فرقوں کو اپنی کتابوں میں شار کیا ہے کہ علماء متکلمین نے ان بہتر [27] فرقوں کو اپنی کتابوں میں شار کیا ہے لیے کہ اگر ظاہر اور مشہور آوں کی تعداد دیکھی جائے تو بہتر [27] سے بہت کم ہے اور اگر مشہور اور غیر مشہور سب کوشار کیا جائے تو تعداد بہتر [27] سے بڑھ جاتی ہے۔

لهذااحتیاط کامقتصیٰ یہ ہے کہ یہ کہا جائے کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فقہائے امت کے افتراق کوکسی زمان یا مکان کے ساتھ مخصوص نہیں فرمایا۔

ممکن ہے کہ بعض فرقے ابھی پیدا بھی نہ ہوئے ہوں اور آئندہ چل کر پیدا ہوں ۔ نیز دوفرقے جب کہلاتے ہیں کہ جب ان کے اصول مذہب مختلف ہوں ، کیکن اگر دوفرقے ایسے ہوں کہ ظاہراً تو باہم مختلف ہوں لیکن اصول کے دونوں فرقوں کے ایک ہوں تو وہ فرقے ملاکرایک ہی فرقہ سمجھا جائےگا ، اس کے طرح ان تمام شاخ درشاخ فرقوں کی تعداد اصولی اختلاف کے لحاظ سے انشاء کی اللہ بہتر [۲۲] سے متجاوز نہ ہوگی۔

اور چونکہ یہ بہتر [21] فرقے سب اہل قبلہ ہیں اس کئے ان کیلئے یہ شرط ہوگ کہ ضروریات اسلام اور قطعیات دین کے منکر نہ ہوں۔اسلئے کہ جوشخص ضروریات دین کامنکر ہووہ اہل قبلہ میں سے نہیں۔ مثلاً اگرکوئی رافضی حضرت علی رضی اللہ عنہ کی الوہیت کا قائل ہویا تحریف قر آن کا قائل ہویا حضرت جرئیل علیہ السلام سے وحی لانے میں غلطی کا قائل ہوتو اس قتم کا عقیدہ رکھنے والا ہرگز اہل قبلہ سے نہ ہوگا۔

فرقه خوارج

اسلام میں سب سے پہلافرقہ خوارج کا ہے، جوحضرت عثمان غنی رضی اللہ عنہ کے اخبر زمانہ خلافت میں ظاہر ہوا، جوصحابہ کرامؓ کے عقائد سے ہٹا ہوا تھا۔ اور پھر حضرت عثمان غنی رضی اللہ عنہ کی شہادت کے بعد اسی فرقہ نے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا مقابلہ کیا اور ان کی اطاعت سے خروج کیا۔ حضرت علی کرم اللہ وجہہ نے ان کے ساتھ قال کیا اور اس فرقہ کے آ دمیوں کوئل کیا۔ مگر بایں ہمہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ ان کو کا فراور دائر کا اسلام سے خارج نہیں مگر بایں ہمہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ ان کو کا فراور دائر کا اسلام سے خارج نہیں خبر دی تھی۔ آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اس فرقہ کے خروج اور ظہور کی خبر دی تھی، بیا حادیث صحاح ستہ میں مذکور ہیں۔



فرقهٔ قدریهاور جریه

صحابه کرام کے اخیرز مانہ میں ایک فرقهٔ قدریہ ظاہر ہوا جو قضا وقدر کا منکر ہے،جس کاعقیدہ پیہ ہے کہ قضا وقدر کچھنہیں، بندہ مختار مطلق ہے، بندہ خود اینے افعال کا خالق ہے، پہلے سے کوئی شئی مقدر نہیں، حتیٰ کہ ق تعالیٰ کو پہلے سے بندہ کےافعال کاعلم بھی نہیں ہوتا، بندہ کے کرنے کے بعد ق تعالی کوملم ہوتا ہے،معبدجہنی اورغیلان مشقی اور جعد بن درہم ،اس مسلک کے حامی اور مددگار بلکہ علم بردار تھے۔متأخرین صحابہؓ نے (جن کے زمانہ میں یہ ظاہر ہوئے)ان لوگوں سے تبرتی اور بیزاری ظاہر فرمائی ۔ چنانچہ حضرت عبداللہ بن عمرٌ اور جابر بن عبداللهُ أورابو هربرةٌ اور ابن عباسٌ اور انس بن ما لك اور عبدالله بن ابي اوفي اورعقبه بن عامر رضى الله عنهم اينے اصحاب کو بيه وصيت کرتے تھے کہ قدریہ کو نہ سلام کرنا اور نہان کی جنازہ پڑھنا اور نہان کے مریض کی عیادت کرنا۔ بیفرقہ جوسرے سے اللہ تعالیٰ کے علم ہی کا منکر ہے وہ تواسلام سے خارج ہے۔ البتہ جو فرقہ بندہ کومختار مطلق اور اپنے افعال کا خالق سمجھتا ہے وہ دائر ہ اسلام سے خارج نہیں۔اسی زمانہ میں اس کے بالمقابل ایک دوسرافرقه پیداهوا که بنده شجراور حجر کی طرح مجبور محض ہے۔ بنده کو قضاو قدر جدهر لے جاتی ہے اس طرف بندھ جاتا ہے۔اس فرقہ کا نام فرقہ جبریہ ہے۔

فرقهٔ شیعه اور روافض

حضرت علی کرم اللہ وجہہ کے طرفداروں کا ایک فرقہ وہ تھا جوحضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ کی افضلیت اور امامت میں کلام کرتا تھا اور حضرت علی کرم اللہ وجہہ کوسب سے افضل سمجھتا تھا۔ حضرت علی کرم اللہ وجہہ نے اس فرقہ کی اصلاح کیلئے اپنے دارالخلافت میں برسرمنبر اور برسرمجلس اس کا اعلان فر مایا کہ حضرت ابو بکررضی اللہ عنہ اور پھر حضرت عمررضی اللہ عنہ تمام امت میں سب سے افضل ہیں اور جلوت اور خلوت میں شیخین کی افضلیت کو ظاہر فر مایا اور یہاں کہ وقت میں بہت فرقے بیدا ہوگئے۔

تک فر مایا کہ جو تحض مجھ کو ابو بکر اور عمر شیعوں میں بہت فرقے بیدا ہوگئے۔

لگاؤں گا جو مفتری کی سز اہے۔ پھر شیعوں میں بہت فرقے بیدا ہوگئے۔

فائده

حضرت شاہ ولی اللہ قدس سرہ فرماتے ہیں کہ چار مذہب یعنی مذہب قدر بیا ور مذہب بعنی مذہب قدر بیا ور مذہب مرجیہ اور مذہب خوارج اور مذہب روافض، یہی چار مذہب باقی مذاہب باطلہ کے پیدا ہونے کے سبب ہیں۔جبیبا کہ اخلاط اربعہ خون اور صفراء اور بلغم اور سوداء، امراض مختلفہ کے پیدا ہونے کے سبب ہوتے ہیں۔ (از اللہ الخفاء)

یاسلام کے مشہور فرقے ہیں اور ہر فرقہ کی شاخیں ہیں، مثلاً خوارج کے اندرونی فرقے ہیں ہیں، مثلاً خوارج کے اندرونی فرقے ہیں ہیں، اور اسی طرح روافض کے فرقے بھی ہیں ہیں، اور قدریہ ومرجیہ کے بھی مختلف فرقے ہیں جن کی تفصیل ملل ونحل کی کتابوں میں ہے۔ یہ سب مل کر بہتر[۲۷] ہوجاتے ہیں۔ اور تہتر واں [۳۷] فرقہ فرقه ُ ناجیہ ہے جواہل سنت والجماعت کے نام سے موسوم ہے۔

جانناچاہئے کہ ان فرقوں میں بعضے ایسے بھی فرقے ہیں جوقطعیات اسلام اور ضروریات دین کے منکر ہیں۔ وہ کا فر ہیں اور دائر ہُ اسلام سے خارج ہیں مثلاً جولوگ حضرت علی کرم اللہ وجہہ کی الوہیت کے قائل ہیں یا قرآن کریم میں تحریف کے قائل ہیں۔ یا یہ کہتے ہیں کہ حضرت جرئیل علیہ السلام سے وحی بہنچانے میں غلطی ہوئی، بجائے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کے آنخضرت صلی اللہ کیا تہ میں غلطی ہوئی، بجائے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کے آنخضرت صلی اللہ

فرقه معتزله

پھر تابعین کے اخیر زمانہ میں ایک فرقہ نکلا جوفلسفیانہ خیالات کی بنا پر
کتاب وسنت کی نصوص میں تاویل کرتا تھا،اور بیے کہتا تھا کہ آخرت میں دیدار
الہی ناممکن ہے اور گناہ کبیرہ کے ارتکاب سے آدمی نہمؤمن رہتا ہے اور نہ
کافر۔ایمان اور کفر کے درمیان ایک مرتبہ اور درمیانی واسطہ کا قائل تھا۔
واصل بن عطاء اس فرقہ کا سرگروہ تھا۔حضرت حسن بھریؓ نے اس کو اپنی
مجلس سے نکل جانے کا حکم دیا اور بیفر مایا کہ "اِعُتوِلُ عَنَّا ''(ہم سے الگ
ہوجاؤ) اسلئے اس فرقہ کا نام معتز لہ ہوگیا۔

فرقهٔ مرجیه

اس کے بعد ایک فرقۂ مرجیہ پیدا ہوا جس کا نام جمیہ بھی ہے جوجم بن صفوان کی طرف منسوب ہے، جہم بن صفوان اس فرقہ کا سربراہ تھا اور جعد بن درہم اس کامعین اور مددگار تھا۔ یہ لوگ صفات باری تعالیٰ کے منکر تھے اور قرآن کومخلوق اور حادث بتاتے تھے۔ اور فلسفیانہ خیالات سے مسلمانوں کے عقائد میں شکوک اور شبہات پیدا کرتے تھے حتی کہ واثق باللہ عباسی اور معتصم باللہ بھی ان کے ہم نوا ہوئے۔ اور امام احمد بن خنبل اور دیگر علماء اسلام کو ان سے بہت تکلیفیں پہنچیں۔

ہبرعلم حدیث مسلم کے پاس لے گئے ۔اس قسم کے عقید ہے رکھنے والوں کا اسلامی فرقوں میں شارنہیں۔البتہ جو فرقے اسلام کی قطعی الثبوت چیزوں میں شک نہیں رکھتے وہ اسلامی فرقے سمجھے جائیں گے۔خوارج اور روافض کی تکفیر کا مسکلہ نہایت پیچیدہ اور دشوار ہے۔علاء کی ایک جماعت نے ان کی تکفیر کی اور ایک جماعت نےان کو گمراہ اور فاسق اور مبتدع قرار دیا کا فرنہیں کہا۔

حضرت مولانا قاسم صاحب رحمة الله عليه اينا أيك فارسي مكتوب ميس تحریفر ماتے ہیں کہ' شیعہ اور خوارج کا عجیب حال ہے، نہ مؤمن کہتے بن یڑتے ہیں اور نہ کا فرکہتے۔ان دونوں فرقوں کا حال اس خط کے مشابہ ہے کہ جونور اور سایہ کے درمیان حد فاصل ہو، وہ خط نہنور ہی ہے اور نہ سایہ، مگر حدفاصل ہونے کی وجہ سے دونوں جانب سے ربط اور تعلق ہے، ایک اعتبار سے نورانی ہے اورایک اعتبار سے ظلماتی ہے ،اس اعتبار سے کہ تو حیدورسالت کے منکر نہیں ،قرآن و حدیث کے مکذب نہیں اور زبان سے کلمہ شہادت پڑھتے ہیں،صوم وصلوٰ ۃ اور حج وز کو ۃ کوفریضہ اسلام سمجھ کر بجالاتے ہیں اس اعتبار سے مؤمن معلوم ہوتے ہیں ،اور جوعقا ئد فاسدہ اور خیالات کاسدہ اور رسوم شنیعه اور معمولات قبیحه ان کی کتابول میں مذکور بیں ان سے انسان حیران ہوتا ہے کہ کتاب وسنت اور دین اسلام میں ان کی گنجائش نظر نہیں آتی ۔اس 💥 کئےان کے *کفر*میں علماء کااختلاف رہا۔''

حضرات فقہاءاورمحدثین کا قول فیصل اس بارے میں بیرہے کہ خوارج اور روافض دراصل دونوں اسلامی فرقے ہیں ، یہود ونصاریٰ کی طرح کا فر نہیں،البتہ خوارج اور روافض کے وہ فرقے جوضر وریات دین اور قطعیات اسلام کے منکر ہیں وہ کافر ہیں۔مثلاً شیعوں کے بعض فرقے اس کے قائل ہیں کہ حضرت علی کرم اللہ و جہہ میں خدا حلول کرآیا۔ یا جبرئیل علیہ السلام غلطی سے وحی بجائے حضرت علی کے آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر لے گئے۔ایسے لوگ کافر ہیں۔اور جو شیعہ صرف تبرائی ہیں اور حضرات صحابہؓ کی شان میں سب وشتم کرتے ہیں اور ضروریات دین اور قطعیات اسلام کے منکر نہیں وہ گمراہ اور بدعتی ہیں کا فرنہیں،خوارج کے متعلق حضرے علی کرم اللہ و جہہ کا ارشاد میارک موجودہے:

هؤلآء اخواننا قد بغوا بیخارجی ہمارے اسلامی بھائی علینا . بین ہم سے باغی ہوگئے ہیں۔

حضرت على كرم اللَّدوجهه نے خوارج كا خون بہایا لیكن نهان كا مال بطور غنیمت تقسیم فرمایا اور نہان کے بچوں اور عورتوں کوغلام بنا کرمجامدین پرتقسیم کیا۔معاملہ باغیوں ساکیا، کافروں جیسا معاملہ نہیں کیا۔اورعلیٰ مذا جوشیعہ ضروریات دین کے منکرنہ ہوں وہ کافرنہیں۔ان سے منا کحت وغیرہ جائز ہے۔اور حضرات محدثین کا بھی طرزعمل اسی پر دلالت کرتا ہے کہ خوارج اور سند الحديث للعلامة شيخ الحديث و شيخ التفسير وشيخ الطريقة حضرت مولانا الطاف حسين صاحب اطال الله بقاء ه و مد فيوضه العالية

قال عبدالله بن المباركُ : " الا سناد من الدين و لولا لا سناد لقال من شاء ما شاهِمسُّلم ١٢/١]

الله عليه وسيد الأنبياء و ا مام الرسل محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم ،

..... سيدنا عمر بن الخطاب رضى الله تعالىٰ عنه

الليثي رحمة الله تعالى عليه عليه عليه عليه عليه

..... سيدنا محمد ابراهيم التيمي رحمة الله تعالىٰ عليه

الله تعالىٰ عليه الأنصارى رحمة الله تعالىٰ عليه الله تعالىٰ عليه

الله تعالىٰ عليه الثورى رحمة الله تعالىٰ عليه

الشيخ الحُميدي رحمة الله تعالىٰ عليه عليه

امير المؤمنين في الحديث الشيخ ابي عبدالله محمد

بن اسماعيل بن ابراهيم البخارى رحمة الله تعالىٰ عليه

😭 الشيخ ابو عبدالله محمد بن يوسف الفِربدي رحمة الله

روافض کا فرنہیں۔اس کئے کہ محدثین نے خوارج اور روافض سے بھی روا بیتی کی ہیں مگر روافض سے بہت ہی کم بلکہ شاذ ونادر ہے۔ وجہ اس کی بیہ ہے کہ خوارج کے بزد یک جھوٹ بولنا کفر ہے اور روایت کا زیادہ تر دارو مدار صدق راوی پر ہے۔اسلئے خوارج سے تو روایت لے گی مگر روافض سے روایت نہیں کی اسلئے کہ روافض کے یہاں تقیہ جزوا کیان ہے اس کئے اس کی کوئی روایت قابل اطمینان نہیں۔ نیز روافض سے جو روایت کی گئی وہ مقروناً بالغیر کی گئی یعنی دوسرے راوی بھی اس کے ساتھ روایت کرتا ہو۔ تنہا شیعی کی کوئی روایت معتبر دوسرے راوی بھی اس کے ساتھ روایت کرتا ہو۔ تنہا شیعی کی کوئی روایت معتبر منہیں مانی گئی۔واللہ اعلم

تعالىٰ عليه

- الشيخ ابو محمد عبدالله السرخسي رحمة الله عليه
- الشيخ ابو الحسن عبدالرحمٰن بن مظفر الداودى رحمة الله تعالى عليه
- الله تعالى عليه عليه عبد الأول السجزى الهروى رحمة الله تعالى عليه
- الشيخ سراج الحسين بن المبارك الزبيدى رحمة الله تعالى عليه
- الله تعالىٰ عليه العباس احمد بن ابى طالب الحجار رحمة الله تعالىٰ عليه
 - 🦈 الشيخ ابر اجيم التنوخي رحمة الله تعالىٰ عليه
- العسقلاني رحمة الله تعالى على على بن حجر العسقلاني رحمة الله تعالى عليه
 - الشيخ زين الدين زكريا الأنصاري رحمة الله عليه
- الشيخ شمس الدين محمد بن احمد الرملي رحمة الله عليه
- الشيخ احمد بن عبدالقدوس ابو المواهب الشنّاوى
 - رحمة الله تعالىٰ عليه
 - الشيخ احمد القشاشي رحمة الله تعالىٰ عليه
- الشيخ ابراهيم الكردي المدنى رحمة الله تعالىٰ عليه

- الدهلوى رحمة الله تعالى عليه عليه الدهلوى وحمة الله تعالى عليه
- الشيخ الشاه عبدالعزيز الدهلوى رحمة الله تعالىٰ عليه
 - 💨 الشيخ الشاه اسحٰق الدهلوى رحمة الله تعالىٰ عليه
- 💨 الشيخ الشاه عبدالغني الدهلوي رحمة الله تعالىٰ عليه
- السلام قاسم العلوم والخيرات محمد قاسم العلوم والخيرات محمد قاسم
- النانوتوى و أيضاً فقيه العصر المحدث الشيخ رشيد احمد
 - الغنغوهي رحمة الله تعالىٰ عليه
- الله عليه محمود الحسن الديوبندى رحمة الله عليه
 - الشيخ الشاه انور كشميرى رحمة الله تعالىٰ عليه
- الكاندهلوى و الحديث العلامة ادريس الكاندهلوى رحمة الله تعالى عليه
- الله العالى على الطريقة العلامة الطاف حسين زيد مجده العالى ،